इस्कॉन

शिष्य पाठ्यक्रम

संयोजक : एन• व्ही• सी• सी•, इस्कॉन पुणे

छात्रों की हस्त-पुस्तिका

(तृतीय संस्करण अगस्त 2014)

.....

अंतर्राष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ

संस्थापक आचार्य : कृष्णकृपाश्रीमूर्ति ए• सी• भक्तिवेदान्त स्वामी श्रील प्रभुपाद

स्वागत

इस्कॉन शिष्य पाठ्यक्रम में आपका स्वागत है। पाठ्यक्रम में प्रयोग करने हेतु यह आपकी कार्यशाला हस्त-पुस्तिका है तथा हम आशा करते हैं कि भक्ति के संदर्भ में यह आजीवन उपयोगी सिद्ध होगी। अतः कृपया इसे सँभालकर रखें। अपने विचार एवं टिप्पणियां अवश्य लिखें क्योंकि आप अनेक रोचक एवं महत्वपूर्ण विंदुओं का अध्ययन करने जा रहे हैं।

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है इस्कॉन की अनेक-गुरु संस्कृति के बीच, गुरु-तत्व तथा गुरु-पादाश्रय को गहराई से समझने में सहायता देना। इसकी रूपरेखा नव-दीक्षार्थियों को ध्यान में रखते हुए बनाई गई है, परंतु यह इस्कॉन में प्रतिनिधियों, प्रचारकों, सलाहकारों तथा शिक्षकों के लिए भी अनुशंसित है।

इस पाठ्यक्रम को इस्कॉन के प्रमुख शिक्षकों ने जीबीसी गुरु सेवा कमिटी के निर्देशन में दो वर्ष के सामूहिक प्रयास से तैयार किया।

यह पाठ्यक्रम, व्यापक गौड़ीय वैष्णव परंपरा के शास्त्रों के संदर्भ में श्रील प्रभुपाद की शिक्षाओं तथा वर्तमान इस्कॉन नियमावली पर आधारित है।

इस पाठ्यक्रम को मूर्त रूप देने में सहयोगी रहे भक्तों का मैं आभारी हूँ, जिनमें प्रह्लादानंद स्वामी, भक्ति चैतन्य स्वामी, रवींद्र स्वरूप दास, लक्ष्मीमणि दासी, अतुल कृष्ण दास, गोपिका राधिका दासी, आनंद वृंदावना दासी, तारका दासी, ब्रज विहारी दास, माधवानंद दास, हनुमान दास तथा अन्य कई सम्मिलित हैं। पाठ्यक्रम का मार्गदर्शन तथा प्रयोग करने के लिए मायापुर इंस्टीट्यूट का विशेष आभार व्यक्त करता हूँ।

'इस्कॉन गुरु संगोष्ठी' का आयोजन करने के लिए हम संचालन समिति सदस्यों के आभारी हैं, जिसमें इस पाठ्यक्रम की संकल्पना और आधार विकसित हुए। समिति में उपर्युक्त भक्तों के अलावा जयपताका स्वामी, भक्ति चारु स्वामी, राधानाथ स्वामी, गरुड दास तथा रुक्मिणी दासी का भी समावेश है।

यदि आपके कोई प्रश्न हैं तो निःसंकोच अपने प्रशिक्षक से पूछें अथवा इस्कॉन शिष्य पाठ्यक्रम सचिवालय (idcsecretariate@gmail.com) से संपर्क करें। इस पाठ्यक्रम के लिए तथा श्रील प्रभुपाद की सेवा में संलग्न रहने के लिए आपको अनेक शुभकामनाएं।

इस पाठ्यक्रम को आप तक पहुँचानेवाले समस्त वैष्णवों की ओर से,

आपका सेवक,
अनुत्तम दास
इस्कॉन संसूचना मंत्री
सदस्य –जीबीसी गुरु सेवा समिति

इस्कॉन शिष्य पाठ्यक्रम की विषय–वस्तु .

इकाई एक ः प्रस्तावना, सिद्धांत एवं प्रासंगिकता

पाठ **1** स्वागत एवं प्रस्तावना
पाठ **2** गुरुतत्व एवं परम्परा
पाठ **3** श्रील प्रभुपाद – इस्कॉन के संस्थापक आचार्य
पाठ **4** इस्कॉन में गुरु वृन्द

इकाई दो ः गुरु के साथ संबंध स्थापित करना

पाठ **5** गुरु पादाश्रय
पाठ **6** गुरु का चयन
पाठ **7** दीक्षा की प्रतिज्ञाएं

इकाई तीन ः गुरु के साथ संबंध के अंतर्गत गतिविधियां

पाठ **8** गुरु पूजा
पाठ **9** गुरु सेवा
पाठ **10** गुरु वपु तथा वाणी सेवा
पाठ **11** गुरु त्याग

इकाई चार ः सहयोगपूर्वक संबंध निभाना तथा दृढ़ीकरण

पाठ **12** अपने गुरु की सार्वजनीन प्रस्तुति
पाठ **13** इस्कॉन के भीतर संबंध –अन्य गुरु तथा उनके शिष्य
पाठ **14** पाठ्यक्रम पुनरावलोकन

परिशिष्ट

1। अतिरिक्त उद्धरण
2। श्रील प्रभुपाद के पद विषयक जीबीसी का वक्तव्य
3। इस्कॉन में दीक्षागुरु की अनिवार्य योग्यताएं
4। इस्कॉन गुरुओं के आचरण मानक
5। इस्कॉन में दीक्षा हेतु योग्यताएं
6। पतित गुरु का त्याग
7। इस्कॉन की प्राधिकार श्रेणियों में समन्वय (औपचारिक जीबीसी नीति)
8। इस्कॉन शिष्य पाठ्यक्रम पर जीबीसी का संकल्प
9। कक्षा में व्यवहार के मानदण्ड **एवं** पठनीय संदर्भ ग्रंथ सूची
10। पाठ्यक्रम की रूपरेखा

इकाई एक

प्रस्तावना, सिद्धांत एवं प्रासंगिकता

पाठ 1 **स्वागत एवं परिचय**
सिद्धांत एवं मूल्य
पाठ्यक्रम के व्यापक उद्देश्य
पाठ्यक्रम मूल्यांकन

पाठ 2 **गुरुतत्व एवं परम्परा**
गुरु तत्व
विविध प्रकार के गुरु
गुरु परम्परा पद्धति
मरणोपरांत ऋत्विकवाद का खंडन

पाठ 3 **श्रील प्रभुपाद – इस्कॉन के संस्थापक आचार्य**
संस्थापक आचार्य के कार्य
प्रभुपाद ः श्री चैतन्य महाप्रभु के अधिकृत प्रतिनिधि
भविष्य में इस्कॉन

पाठ 4 **इस्कॉन में गुरु वृन्द**
इस्कॉन गुरु की मनोवृत्ति
गुरु तथा इस्कॉन प्राधिकारी के निर्देश
इस्कॉन से बाहर के गुरु

पाठ 1 स्वागत एवं परिचय

पाठ के विषय

कक्षा में व्यवहार के मानदण्ड
सिद्धांत एवं मूल्य
पाठ्यक्रम के व्यापक उद्देश्य
पाठ्यक्रम मूल्यांकन

कक्षा में व्यवहार के मानदण्ड

पाठ्यक्रम के दौरान अध्ययन के अनुकूल वातावरण बनाए रखने के लिए सभी छात्रों का कक्षा में व्यवहार के मानदण्डों से सहमत रहना महत्त्वपूर्ण है। कृपया परिशिष्ट 9 देखें।

पाठ्यक्रम के व्यापक उद्देश्य

इस्कॉन के अंतर्गत शिष्यता की गुणवत्ता में वृद्धि करना, ताकि श्रील प्रभुपाद द्वारा स्थापित संघ और उसके अनुयायियों को दीर्घकालिक लाभ मिल पाएं।

यह उद्देश्य इसप्रकार प्राप्त किया जाएगा ः

1 छात्रों को शिष्यता के चिरकालिक सिद्धांतों की स्पष्ट समझ प्रदान करना, जो श्रील प्रभुपाद तथा व्यापक गौडीय वैष्णव परम्परा की शिक्षाओं में प्रदर्शित हैं। साथ ही इन शिक्षाओं का महत्व समझाकर।

2 इन सिद्धांतों का प्रयोग करना ः (**अ**) अपने गुरु एवं वरिष्ठ वैष्णवों के साथ स्वस्थ और रचनात्मक आध्यात्मिक संबंध स्थापित करने के लिए। (**ब**) इन संबंधों के अनुरूप व्यवहार करने के लिए।

3 एक शिष्य में अपेक्षित मूल्यों तथा मानसिकता का विकास करना

4 परस्पर सहयोग करते हुए, व्यक्तिगत आचरण एवं उपदेश के माध्यम से भगवान तथा उनके प्रतिनिधियों की सेवा करना, ताकि श्रील प्रभुपाद की शिक्षाओं एवं आंदोलन को चिरस्थायी बनाया जा सके।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

प्रश्न ः शिष्य के रूप में मुझमें किस प्रकार के सुधार की आवश्यकता है?

पाठ्यक्रम के सिद्धांत एवं मूल्य

1। श्रील प्रभुपाद – अग्रगण्य शिक्षा गुरु
2। इस्कॉन एवं परम्परा के प्रति निष्ठा
3। एकाधिक प्राधिकारियों एवं वरिष्ठ वैष्णवों के प्रति आदर
4। गुरु का विचारपूर्वक चयन
5। गुरु के उपदेशों पर श्रद्धा
6। श्रील प्रभुपाद के आंदोलन एवं अपनी प्रतिज्ञाओं के प्रति प्रतिबद्धता
7। अनुकरणीय साधना, आचरण, जीवनशैली
8। जिज्ञासा, विनम्रता, सेवा
9। अनुकूल संग, समावेशकता, सहयोग
10। हरिनाम का संवर्धन तथा प्रचार

पाठ्यक्रम मूल्यांकन

आपके प्रशिक्षक द्वारा आपको निम्नलिखित में से चयनित प्रश्न दिए जाएंगे जिनके उत्तर **250** शब्दों के भीतर लिखने हैं। तारांकित प्रश्न अनिवार्य हैं।
प्रशिक्षक से आपको अपने कार्य का मूल्यांकनपत्र प्राप्त होगा। उत्तीर्ण होने के लिए प्रत्येक प्रश्न में न्यूनतम **65** प्रतिशत अंक लाना अनिवार्य है। सफल प्रतिभागियों को जीबीसी गुरु सेवा कमिटी द्वारा 'इस्कॉन डिसायपल्स कोर्स ' का प्रमाणपत्र प्रदान किया जाएगा।

इकाई एक ः प्रस्तावना, सिद्धांत एवं प्रासंगिकता

गुरु तत्व एवं परम्परा (पाठ **2**)

1 गुरुओं की दो प्रमुख श्रेणियों के बीच समानताएं तथा भिन्नताएं समझाएं।

2 ऋत्विकवाद विचारधारा का खंडन करनेवाले कम से कम चार तर्क दें। अपने उत्तर में उपयुक्त शास्त्रिक संदर्भ प्रस्तुत करें।

इस्कॉन में गुरू पादाश्रय (पाठ **3, 5** एवं **8**)

3 इस्कॉन के अंतर्गत गुरु पादाश्रय की व्याख्या करें। *

4 श्रील प्रभुपाद इस्कॉन के अग्रगण्य शिक्षागुरु एवं संस्थापकाचार्य के रूप में किस प्रकार कार्य करते हैं? *

5 इस्कॉन की भावी पीढ़ियों के लिए श्रील प्रभुपाद का अग्रगण्य शिक्षागुरु बने रहना क्यों आवश्यक है? *

6 श्रील प्रभुपाद एवं वर्तमान तथा भावी गुरुओं की पूजा की विधियों का वर्तमान इस्कॉन लॉ संदर्भ से संक्षिप्त वर्णन करें।

इस्कॉन में गुरु वृंद (पाठ **4**)

7 श्रील प्रभुपाद की शिक्षाओं तथा इस्कॉन की अंतर्गत प्राधिकार संरचना के प्रति एक इस्कॉन गुरु की उपयुक्त मनोवृत्ति का वर्णन करें। *

8 दीक्षा तथा शिक्षा गुरु इस्कॉन में अनुमोदित ही क्यों स्वीकारने चाहिए, इस्कॉन से बाहर के क्यों नहीं?

9 अन्य गौडीय वैष्णव परम्परा एवं संगठनों के गुरुओं के प्रति एक इस्कॉन शिष्य की उपयुक्त मनोवृत्ति का वर्णन करें।

इकाई दो एवं तीन ः गुरु के साथ संबंध के अंतर्गत गतिविधियां

गुरु का चयन एवं दीक्षा की प्रतिज्ञाएं (पाठ 6)

10 श्रील प्रभुपाद के कथनों का संदर्भ देते हुए दीक्षा की प्रतिज्ञाओं का महत्व समझाएं। आपके मत से एक शिष्य के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण गुण कौनसे हैं?

11 आपके विचार में गुरु की महत्त्वपूर्ण योग्यताएं कौनसी हैं? 'इस्कॉन में दीक्षा गुरु की अनिवार्य योग्यताएं' (परिशिष्ट **3**) तथा शास्त्रों के संदर्भ से लिखें।

12 गुरु का चयन करने की उपयुक्त तथा अनुपयुक्त विधियों और कारणों की चर्चा करें। अपने उत्तर में इस्कॉन की वर्तमान नियमावली एवं शास्त्रों का संदर्भ दें। *

गुरू सेवा (पाठ **9** एवं **10**)

13 इस्कॉन आंदोलन की सेवा एवं गुरु सेवा के बीच संबंध का उदाहरण देते हुए चर्चा करें। इन दोनों के बीच संतुलित दृष्टिकोण बनाए रखने का महत्व बताएं। *

14 गुरु की वपु सेवा तथा वाणी सेवा क्या है? कौनसी सेवा अधिक महत्वपूर्ण है और क्यों?

15 उपयुक्त एवं अनुपयुक्त विषयों के ऐसे चार उदाहरण दें जिनपर गुरु का परामर्श लेना चाहिए। अपना उत्तर उपयुक्त शास्त्राधार पर दें।

16 चर्चा करें कि एक शिष्य का अपने गुरुभाइयों तथा गुरुबहनों के प्रति व्यवहार कैसा होना चाहिए, अपने उत्तर में शास्त्र का उपयुक्त संदर्भ दें।

इकाई चार ः संबंधों का सहयोगपूर्वक निर्वाह तथा दृढ़ीकरण

अपने गुरु की सार्वजनीन प्रस्तुति (पाठ **5** एवं **12**)

17 अपने गुरु को सार्वजनिक अथवा वैष्णव समाज के बीच बढ़ावा देने के विषय में एक शिष्य की मनोवृत्ति और व्यवहार आपके मतानुसार कैसा होना चाहिए? उपयुक्त शास्त्राधार एवं वर्तमान इस्कॉन नियमों के संदर्भ से उत्तर दें। इस्कॉन शिष्यों के लिए इस विषय में उपयुक्त मनोवृत्ति विकसित करना महत्वपूर्ण क्यों है? *

18 वर्तमान तथा भविष्य के लिए श्रील प्रभुपाद को इस्कॉन के संस्थापक एवं अग्रगण्य शिक्षागुरु के रूप में प्रमुखता देना क्यों आवश्यक है? शास्त्रों तथा वर्तमान इस्कॉन नियमावली के आधार पर अपना उत्तर लिखें। *

इस्कॉन के भीतर संबंध (पाठ **13**)

19 दीक्षा गुरु के आधार पर भेदभाव करने के संबंध में एक इस्कॉन शिष्य की अनुचित मनोवृत्ति एवं व्यवहार का आपके मतानुसार वर्णन करें। इस विषय में उपयुक्त प्रवृत्ति विकसित करने का क्या महत्व है? *

20 गुरु पर आधारित अनुचित भेदभाव किए बिना समस्त इस्कॉन वैष्णवों से सहयोगपूर्ण संबंध विकसित करने तथा बनाए रखने के व्यवहारिक तरीकों का वर्णन करें। *

पाठ 2 गुरुतत्व एवं परम्परा .

पाठ के विषय

गुरु तत्व
विविध प्रकार के गुरु
गुरु परम्परा प्रणाली
मरणोपरांत ऋत्विकवाद का खंडन

गुरू तत्व

प्रश्न ः गुरु के स्थान का अपने शब्दों में संक्षिप्त वर्णन करें।

गुरू तत्व

आध्यात्मिक गुरु और श्रीकृष्ण अभिन्न हैं।

गुरु कृष्णरूप हञ शास्त्रेर प्रमाणे
गुरुरूपे कृष्णकृपा करेन भक्तगणे

समस्त वेदशास्त्रों का स्पष्ट मत है कि गुरु तथा श्रीकृष्ण अभिन्न हैं। श्रीकृष्ण गुरु–रूप में अपने सभी भक्तों का उद्धार करते हैं। शिष्य का अपने गुरु के साथ संबंध वैसा ही है जैसा परमेश्वर के साथ।

श्री चैतन्य चरितामृत आदिलीला **1•4**

आचार्य मां विजानीयान नावमन्येत कर्हिचित्
न मर्त्यबुद्ध्यासूयेत सर्व देव मयो गुरु

गुरु को मेरे समान समझना चाहिए और किसी भी प्रकार उनका अनादर नहीं करना चाहिए। गुरु को साधारण मनुष्य मानकर उनसे ईर्ष्या न करें क्योंकि गुरु सभी देवताओं का प्रतिनिधि है।

श्रीमद् भागवतम **11•17•27**

यदि कोई अपने गुरु को साधारण मनुष्य समझता है तो उसका सर्वनाश हो जाता है...

शास्त्रों के अनुसार गुरु का आदर श्रीभगवान के समकक्ष किया जाना चाहिए, **'साक्षाद् हरित्वेन समस्त शास्त्रैः** यह सभी शास्त्रों का मत है। **आचार्य मां विजानीयान** (श्रीमद्भागवतम **11•17•27**), व्यक्ति को चाहिए कि वह गुरु को भगवान के समान समझे। इन उपदेशों के उपरांत भी यदि कोई व्यक्ति आध्यात्मिक गुरु को साधारण मनुष्य माने, तो उसका सर्वनाश हो जाता है।

श्रीमद् भागवतम **7•15•26** के तात्पर्य से

जब कोई अपना कार्य पूर्णता से करता है, तो वह परिपूर्ण है...

एक डाकिया हमें एक हजार रूपए लाकर दे, तो हम नहीं मानते कि यह पैसा हमें डाकिया दे रहा है। धनराशि किसी मित्र ने भेजी है और डाकिए का काम है बिना उसमें कुछ जोडे–घटाए वह पैसा हमतक पहुँचाना। डाकिए के कार्य की पूर्णता है कि मित्र द्वारा भेजी गई धनराशि जस की तस हमतक ले आए। यह उसकी परिपूर्णता है। डाकिए में अन्य कुछ अपूर्णताएं या त्रुटियां हो सकती हैं, किंतु जब वह अपना कार्य परिपूर्णता से करे, वह परिपूर्ण या सिद्ध है।

प्रभुपाद व्यासपूजा दिवस संबोधन, न्यू वृंदावन, सितंवर **2, 1972**

जिनकी योग्यता कम है अथवा जो मुक्ति को प्राप्त नहीं, वे भी गुरु के रूप में कार्य कर सकते हैं...

भक्तिविनोद ठाकुर के वचन शास्त्र के समान हैं क्योंकि वे एक नित्यसिद्ध हैं। गुरु साधारणतया भगवान के ऐसे पार्षदों से संबंध रखते हैं किंतु यदि कोई मनुष्य ऐसे नित्यसिद्ध व्यक्ति के बताए सिद्धांतों का पालन करता है तो वह भी उपर्युक्त पार्षदगण के समान हो जाएगा ... एक गुरु जो नित्यमुक्त और आचार्य हो, कभी कोई त्रुटि नहीं करता, परंतु ऐसे व्यक्ति जो नित्यमुक्त नहीं हैं या जिनकी योग्यता कम है, गुरु–शिष्य परम्परा का कठोरता से पालन करते हुए गुरु या आचार्य के रूप में कार्य कर सकते हैं।

जनार्दन को लिखे पत्र से– न्यूयार्क, अप्रैल **26, 1968**

जब आप शुद्ध भक्त के पदचिह्नों पर चलते हैं तब आप भी शुद्ध भक्त बन जाते हैं...

यदि आप शुद्ध भक्त का अनुसरण कर रहे हैं तो आप भी शुद्ध भक्त हैं। हो सकता है कोई शत प्रतिशत शुद्ध न हो। हम स्वयं को बद्ध जीवन से ऊपर उठाने का प्रयत्न कर रहे हैं। जब आप शुद्ध भक्त के पदचिह्नों पर चलते हैं तब आप भी शुद्ध भक्त बन जाते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि तत्काल शत प्रतिशत

शुद्धता आ गई। परंतु जब व्यक्ति 'शुद्ध भक्त का अनुसरण ' नामक सिद्धांत को अपना लेता है तो उसके क्रियाकलाप भी... वह एक शुद्ध भक्त जितना ही श्रेष्ठ है।

भगवद्गीता **2•1–10**, लॉस एंजलिस, नवंबर **25, 1968**

विविध प्रकार के गुरु एवं उनके कार्य

दीक्षा गुरु (एकमात्र)

- उपदेश देते हैं
- परम्परा से संबंध आरंभ एवं स्थापित करते हैं
- आध्यात्मिक नाम प्रदान करते हैं
- मंत्र प्रदान करते हैं (मंत्र गुरु)
- शिष्य की प्रतिज्ञा स्वीकार करते हैं
- दीक्षा के समय शिष्य को पापकर्मों के फलों से मुक्त करते हैं

शिक्षा गुरु (अनेक)

- उपदेश एवं शिक्षा देते हैं
- विगत तथा वर्तमान जीवन के कुसंस्कारों से मुक्ति पाने में सहायता करते हैं

शिक्षा गुरुओं की कोई निश्चित संख्या नहीं...

मन्त्र गुरुआर यत शिक्षा गुरु गण
ताँहार चरण आगे करिए वंदन

'सर्वप्रथम मैं अपने दीक्षा गुरु एवं समस्त शिक्षा गुरुओं के चरणकमलों में आदरपूर्वक प्रणाम करता हूँ।'
तात्पर्य ः एक भक्त का केवल एक ही दीक्षा(मंत्र)गुरु होना चाहिए क्योंकि एकाधिक दीक्षागुरु स्वीकारना शास्त्रानुसार वर्जित है। तथापि शिक्षा गुरु स्वीकारने की संख्या पर कोई प्रतिबंध नहीं है। प्रायः शिष्य जिस आध्यात्मिक गुरु से अध्यात्म विज्ञान की शिक्षा निरंतर प्राप्त करता है, कुछ समयोपरांत उसीसे दीक्षा भी पा सकता है।

श्री चैतन्य चरितामृत आदिलीला **1•35**

दीक्षा एवं शिक्षा दोनों समान हैं

जो गुरु शिष्य को महामन्त्र की दीक्षा देते हैं, वे दीक्षा गुरु कहलाते हैं तथा वे सभी साधु जो भक्त को कृष्णभावनामृत में प्रगति करने के लिए उपदेश देते हैं शिक्षा गुरु कहलाते हैं। शिक्षा और दीक्षा गुरु भगवान श्रीकृष्ण के एकसमान प्रकाश हैं किंतु उनके कार्य भिन्न–भिन्न होते हैं।

तात्पर्य –श्री चैतन्य चरितामृत आदिलीला **1•35**

शिक्षा गुरु बृंद कृपा कोरिय अपार
साधके सीखञ साधनेर अंग–सार

परंतु मैं अनगिनत शिक्षा गुरुओं को अत्यंत महत्त्वपूर्ण समझता हूँ क्योंकि उन्होंने एक नवागत भक्त को साधनाभक्ति के समस्त आवश्यक अंगों में प्रशिक्षित कर उसपर असीम कृपा की।

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर कृत श्री श्री कल्याण कल्पतरू से
प्रथम शाखा, उपदेश, प्रस्तावना ः शिक्षा एवं दीक्षा गुरु

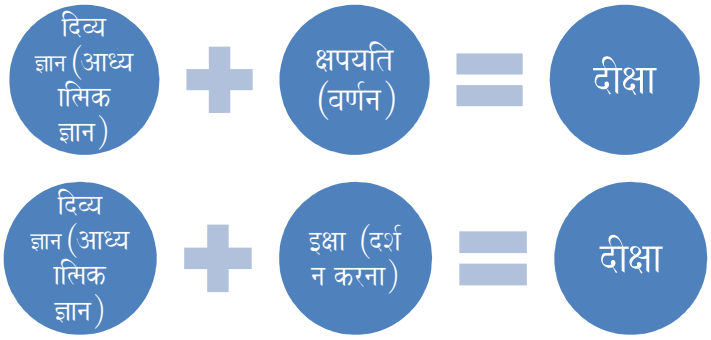

दीक्षा का अर्थ है आध्यात्मिक गतिविधियों का आरंभ...

'दीक्षा' का अर्थ है, 'यह आरंभ है'। दीक्षा, दि...दिव्य। दो शब्द हैं-दिव्य, ज्ञान। दिव्य ज्ञान का अर्थ है अलौकिक आध्यात्मिक ज्ञान। 'दि' है दिव्य और ज्ञानम्, क्षपयति, व्याख्या है 'क्ष', 'दी-क्षा' जिसका संयोजन है 'दीक्षा'। अतः दीक्षा का अर्थ है आध्यात्मिक कार्य आरंभ करने की दीक्षा। गुरु शिष्य से प्रण लेते हैं, "आप इतनी बार जप करेंगे" "जी गुरुदेव" "आप इन नियामक तत्वों का पालन करेंगे" "जी गुरुदेव"। यही दीक्षा है। उस व्यक्ति को पालन करना है और जप करना है। अन्य सबकुछ स्वतः आ जाता है।

श्रीमद्भागवतम **6•1•15** पर प्रवचन से, ऑकलैंड, फरवरी **22, 1973**

"संस्कृत शब्द है दीक्षा। इसका अर्थ है...दि, दिव्य ज्ञानम्, आध्यात्मिक ज्ञान और क्षा अथवा इक्षा, इक्षा अर्थात दर्शन , देखना अथवा क्षपयति अर्थात व्याख्या।"

बलिमर्दन दास की दीक्षा के प्रवचन से
मॉंट्रियल, जुलाई **29, 1968**

दीक्षाविहीन व्यक्ति के सभी भक्तिकार्य व्यर्थ हैं...

अदीक्षितस्य वामोरू कृतं सर्व निरर्थकम्
पशुयोनिं अवाप्नोति दीक्षा विरहितो जनः

जबतक व्यक्ति परंपराप्राप्त आध्यात्मिक गुरु से दीक्षा नहीं लेता, उसके समस्त भक्तिमय कार्य व्यर्थ हैं। जो व्यक्ति उचित रूप से दीक्षित न हो उसका पुनः पशुयोनियों में पतन हो सकता है।

हरिभक्ति विलास **2•6** में विष्णु यामल से उद्धृत
तात्पर्य-श्री चैतन्य चरितामृत मध्य **15•108** में उद्धृत

प्रथम दीक्षा (हरि नाम दीक्षा)

कृष्ण भावनामृत आंदोलन के छात्र आरंभ में भक्तों के साथ रहने के लिए सहमत होते हैं और क्रमशः चार वर्जित कार्यों अवैध यौनाचार, माँसाहार, द्यूत (जुआ) तथा नशे से दूर रहकर वे भक्ति के कार्यों में अग्रसर होते हैं। जब व्यक्ति इन नियमों का नियमित पालन करे, तब उसे हरिनाम दीक्षा दी जाती है और वह प्रतिदिन नियमित रूप से न्यूनतम सोलह माला जप करता है। इसके उपरांत छह माह या एक वर्ष पश्चात् उसे यज्ञ और अनुष्ठानों सहित दूसरी दीक्षा देकर यज्ञोपवीत या जनेऊ प्रदान किया जाता है।

तात्पर्य -श्री चैतन्य चरितामृत आदिलीला **17•265**

हरि नाम दीक्षा एवं मंत्र दीक्षा

प्रथम अनुष्ठान हरिनाम दीक्षा है, फिर मंत्र दीक्षा। इन सभी युवकों को एक वर्ष पहले हरिनाम दीक्षा दी गई थी और अब मंत्रदीक्षा दी जा रही है।

गायत्री मंत्र दीक्षा पर प्रवचन- बोस्टन, मई **9, 1968**

गुरू परम्परा प्रणाली

एवं परम्परा प्राप्तम्

यह परमोच्च विज्ञान गुरुशिष्य परम्परा के माध्यम से प्राप्त किया गया।

भगवद्गीता यथारूप **4•2**

प्रश्न ः हमें जीवित दीक्षा गुरु स्वीकारने की आवश्यकता क्यों है?

परम्परा प्रणाली

गुरु अपने शिष्य द्वारा किए गए आदर को स्वयं के लिए नहीं अपितु श्रीकृष्ण को अर्पित करने के लिए स्वीकारते हैं। भगवद्गीता बताती है कि श्रीकृष्ण का ज्ञान गुरु परम्परा द्वारा ही प्राप्त होता है, **एवं परम्परा प्राप्तम्** (भगवद्गीता यथारूप **4•2**), गुरु यह सम्मान अपने गुरु को अर्पित करते हैं, उनके गुरु अपने गुरु को, इसप्रकार सम्मान कृष्ण तक पहुँचता है। श्रीकृष्ण की कृपा परम्परा द्वारा ही मिलती है और भगवान को अर्पित सम्मान भी परम्परा द्वारा ही उन तक पहुँचता है। हमें इस प्रणाली से भगवान की ओर अग्रसर होना सीखना चाहिए।

भगवान कपिल का शिक्षामृत, अध्याय **13**

वर्तमान कड़ी से संपर्क करें

श्रीमद् भागवतम का संदेश गुरू शिष्य परम्परा की कड़ी से आ रहा है अतः उसे वास्तविक रूप से समझने के लिए व्यक्ति को वर्तमान कड़ी से संपर्क करना चाहिए, अर्थात् परम्परा में चले आ रहे वर्तमान गुरु की शरण लेनी चाहिए।

श्रीमद्भागवतम **2•9•7**

आप सीधे उच्चतर गुरु तक छलांग नहीं लगा सकते...

यदि आप भगवद्गीता को समझना चाहते हैं तो हमें उसी व्यक्ति से समझनी होगी जिसने उसे सीधे सुनी हो। यह परम्परा प्रणाली कहलाती है। मान लीजिए मैंने अपने गुरु से कुछ सुना है तो मैं आपसे वही बात कहूँगा। मेरे गुरु ने क्या कहा इसकी आप कल्पना नहीं कर सकते, कुछ पुस्तकें पढ़कर भी आप नहीं समझ सकते जबतक कि सीधे मुझसे न सुनें। इसे परम्परा प्रणाली कहते हैं। आप समकालीन या अगले आचार्य की उपेक्षा कर सीधे उच्चतर गुरु की ओर छलांग नहीं लगा सकते।

श्रीमद्भागवतम **1•15•30** पर प्रवचन से, लॉस एंजलिस, दिसंबर **8, 1973**

श्रीकृष्ण की ओर सीधे छलांग न लगाएं, यह व्यर्थ प्रयास है...

सबसे पहले आपके आध्यात्मिक गुरु, फिर उनके गुरु, फिर उनके गुरु, उनके गुरु, अंततः श्रीकृष्ण। यह विधि है। सीधे छलांग लगाकर श्रीकृष्ण तक पहुँचने का प्रयास न करें, यह व्यर्थ है। जिसप्रकार परंपरा के चरणों से ज्ञान मिलता है, उसीप्रकार हमें कृष्ण की ओर अग्रसर होना चाहिए।

श्रीमद्भागवतम **1•2•4**, रोम, मई **28, 1974**

मनुष्य को एक वैष्णव गुरु का आश्रय लेना चाहिए...केवल पुस्तकें पढ़कर नहीं...

किसी को अहंकारवश यह नहीं सोचना चाहिए कि वह पुस्तकें पढ़कर ही भगवान की दिव्य प्रेमाभक्ति प्राप्त कर लेगा, उसे एक वैष्णव गुरु का आश्रय लेना चाहिए (आदौ गुरुआश्रयं) फिर प्रश्नोत्तर के माध्यम से शनैःशनैः सीखना चाहिए कि कृष्ण की शुद्ध भक्तिमय सेवा क्या है। यह परम्परा प्रणाली है।

तात्पर्य–श्री चैतन्य चरितामृत अंत्य **7•53**

जिन शिष्यों को मैं दीक्षा दे रहा हूँ...भविष्य में आध्यात्मिक गुरु होंगे

ये सभी छात्र जिन्होंने मुझसे दीक्षा ली, भविष्य में मेरी तरह कार्य करेंगे। जिसप्रकार मेरे अनेक गुरुभाई कार्य कर रहे हैं। इसीप्रकार जो मेरे शिष्य बन रहे हैं, दीक्षा ले रहे हैं, वे भविष्य के गुरु बनने के लिए प्रशिक्षित हो रहे हैं।

वार्तालाप, डेट्रॉइट, जुलाई **18, 1971**

मैं अपने शिष्यों को प्रामाणिक गुरु बनता देखना चाहता हूँ

मैं अपने शिष्यों को प्रामाणिक गुरु बनकर कृष्णभावना का व्यापक प्रचार करते हुए देखना चाहता हूँ। इससे कृष्ण बहुत प्रसन्न होंगे, और मैं भी...कठोर प्रशिक्षण लें और आप प्रामाणिक गुरु होंगे, आप इसी सिद्धांत पर शिष्य बना सकेंगे। परंतु शिष्टाचार के अनुसार रीति यह है कि अपने गुरू के जीवनकाल में दीक्षार्थियों को अपने गुरु के पास ले जाएं और उनकी अनुपस्थिति या तिरोभाव के पश्चात आप कितने ही शिष्यों को दीक्षा दे सकते हैं। यह गुरुशिष्य परम्परा का नियम है।

तुष्ट कृष्ण को लिखे पत्र से, दिसंबर **2, 1975**

मेरी इच्छा है कि मेरी अनुपस्थिति में मेरे शिष्य प्रामाणिक गुरु बनें

जो भी व्यक्ति श्री चैतन्य महाप्रभु के एक प्रामाणिक प्रतिनिधि के मार्गदर्शन में उनका अनुयायी बनता है, वह गुरु बन सकता है । मैं आशा करता हूँ कि मेरी अनुपस्थिति में मेरे सभी शिष्य कृष्ण भावनामृत का विश्वव्यापी प्रसार करने के लिए प्रामाणिक गुरु बनें।

मधुसूदन को लिखे पत्र से, नवद्वीप, नवंबर **2, 1967**

आप जितने विनम्र बनेंगे, उतनी ही प्रगति करेंगे

यह परम्परा प्रणाली कहलाती है। आपको सीखना होगा कि कैसे कृष्ण का दासानुदास बनें। आप जितनी निम्नतर स्थिति पर जाएंगे –दास, दास, दास, दास, दास, शतशः दास, दास –उतनी ही आप प्रगति करेंगे।

भगवद्गीता यथारूप **2.2** पर प्रवचन से, लंदन, अगस्त **3, 1973**

मरणोपरांत ऋत्विकवाद का खंडन करते तर्क

मरणोपरांत ऋत्विकवाद एक मिथ्या धारणा है जिसके अनुसार एक आध्यात्मिक गुरु अपने तिरोभाव के उपरांत तथाकथित रूप से ऋत्विकों अथवा स्थानापन्न पुरोहितों के माध्यम से दीक्षा गुरु के रूप में कार्य करते हैं।

- किसी भी प्रामाणिक वैष्णव सम्प्रदाय में किसी के सीधे परम गुरु से दीक्षा लेने का उदाहरण नहीं है।
- परम गुरु से दीक्षा लेने के पक्ष में कोई शास्त्राधारित प्रमाण नहीं है।
- नित्यानंद प्रभु के पुत्र वीरभद्र गोस्वामी, श्रीनिवास आचार्य को लिखे अपने पत्र में जयगोपाल नामक एक व्यक्ति को वैष्णव समाज से इसकारण बहिष्कृत करते हैं कि वह स्वयं को परमगुरु का शिष्य बताने लगा था।

गौडीय वैष्णव अभिधान खंड **3**

- यह तर्क कि प्रभुपाद के शिष्यों में से एक भी योग्य दीक्षा गुरु नहीं है, प्रभुपाद की शिक्षाओं को प्रभावहीन सिद्ध करता है, तो किसी ऋत्विक के माध्यम से प्रभुपाद का शिष्य बनने का क्या लाभ?
- ऋत्विक वाद का तात्पर्य है कि केवल असाधारण रूप से सक्षम आचार्य ही गुरु बन सकते हैं, यह धारणा शास्त्र या वैष्णव परंपरा से समर्थित नहीं है।
- ऋत्विक वाद सूचित करता है कि आचार्य को शास्त्र के विरुद्ध कार्य करने की अनुमति है।
- ऋत्विक वाद भक्ति के आवश्यक अंग अर्थात् समकालीन जीवित वैष्णवों के प्रति स्वाभाविक श्रद्धा के विकास को नष्ट करता है।
- ऋत्विक गुरु परामर्श देता है तथापि प्रामाणिक दीक्षा गुरु के समान शिष्य का उद्धार करने का दायित्व नहीं स्वीकारता।

अन्य बिन्दु ः

अतिरिक्त उद्धरण पाठ 2 गुरूतत्व एवं परम्परा

गुरूतत्व

आचार्य को भगवान के समान सम्मान देना चाहिए

आचार्य विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर ने भी कहा है...'साक्षाद् हरित्वेन समस्त शास्त्रै उक्तस्तथा भाव्यत एव सद्भिः' आचार्य और गुरु भगवान के समान हैं, 'साक्षाद् हरित्वेन'। आचार्य को कृष्ण के समान सम्मान देना चाहिए 'आचार्य मां विजानीयान नावमयेत कर्हिचित्' (भागवतम **11•17•27**) यदि कोई अज्ञानवश सोचता है कि 'वे मेरी तरह एक साधारण मनुष्य हैं और एक उच्च आसन पर बैठकर शिष्यों से पूजन–सम्मान ले रहे हैं, तो वे इसपर प्रश्न उठा सकते हैं। परंतु वे नहीं जानते कि आचार्य का सम्मान कैसे किया जाना चाहिए। आचार्य का सम्मान 'साक्षाद् हरित्वेन', भगवान के समान करना चाहिए। यह अतिशयोक्ति नहीं है। यह शास्त्रसम्मत है। परम पुरूषोत्तम भगवान तक पहुँचाने के लिए ही आचार्य ये समस्त प्रणाम स्वीकारते हैं।

श्रीमद्भागवतम **1•7•45–46**, वृंदावन, अक्टूबर **5, 1976**

श्रीमती राधारानी के पार्षद एवं नित्यानंद प्रभु के प्रतिनिधि

वास्तविक वैदिक दर्शन पद्धति है **'अचिंत्य भेदाभेद तत्व'**। इसके अनुसार सृष्टि में सबकुछ एक ही समय पर पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान से भिन्न तथा अभिन्न है। श्रील रघुनाथदास गोस्वामी पुष्टि करते हैं कि यह है प्रामाणिक गुरु की वास्तविक स्थिति और इसलिए शिष्य को चाहिए कि वह अपने गुरु का स्मरण करते हुए श्री मुकुंद (कृष्ण) के साथ उनके संबंध को सदैव याद रखे। श्रील जीव गोस्वामी अपने ग्रंथ 'भक्ति संदर्भ' (**213**) में कहते हैं कि एक भक्त की दृष्टि में भगवान शिव तथा गुरु पूर्ण पुरूषोत्तम भगवान के समकक्ष हैं क्योंकि वे दोनों भगवान को अत्यंत प्रिय हैं, परंतु वह उन्हें हरतरह से भगवान के समान नहीं मानता। श्रील रघुनाथदास गोस्वामी एवं श्रील जीव गोस्वामी का अनुसरण करते हुए श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर भी इसी तथ्य को स्थापित करते हैं। वे कहते हैं कि सभी शास्त्रानुसार गुरु भगवान के समान हैं क्योंकि वे भगवान के अत्यंत प्रिय विश्वासपात्र सेवक हैं। अतः गौडीय वैष्णव अपने आध्यात्मिक गुरु को श्रीभगवान के सेवकत्व के प्रकाश में देखते हैं। भक्तिसंबंधी सभी प्राचीन शास्त्रों एवं अर्वाचीन शुद्ध वैष्णवों श्रील नरोत्तमदास ठाकुर, श्रील भक्तिविनोद ठाकुर, आदि के वैष्णवगीतों में गुरु को सदैव श्रीमती राधारानी का विश्वासपात्र पार्षद अथवा श्री नित्यानंद प्रभु के प्रतिनिधित्व का प्राकट्य माना गया है।

श्री चैतन्य चरितामृत आदिलीला **1•47**

आध्यात्मिक गुरु चैत्य गुरु के बाह्य प्राकट्य हैं...

श्रीकृष्ण सर्वोच्च आध्यात्मिक गुरु हैं अतः वे 'चैत्य गुरु' कहलाते हैं। इसका अर्थ है परमात्मा, जो सभी के हृदय में विराजमान हैं। वे भीतर से हमारा मार्गदर्शन करते हैं जैसा कि भगवद्गीता में कहा गया है, और वे ही हमारे जीवन में आध्यात्मिक गुरु को भेजते हैं जो बाहर से हमारी सहायता करते हैं। आध्यात्मिक गुरु, सबके हृदय में विराजमान चैत्य गुरु के बाह्य प्राकट्य हैं।

श्रीमद्भागवतम **4•8•44** तात्पर्य से

'वे अनेक नहीं, एक हैं –गुरु तत्व...'

गुरु से सर्वप्रथम सादर प्रार्थना की जाती है, 'वन्दे गुरून्''गुरून्' बहुवचन है अर्थात् अनेक गुरु, परंतु वे अनेक नहीं एक ही हैं –गुरु तत्व।

श्री चैतन्य चरितामृत आदिलीला **1•1** मायापुर मार्च **25, 1975**

दीक्षा व्यक्ति को पूर्वकृत पाप फलों से मुक्ति दिलाती है

दीक्षा काले भक्त करे आत्मसमर्पण
सेइ काले कृष्ण तारे करे आत्मसम

दीक्षा के समय जब शिष्य भागवतसेवा के प्रति समर्पित होता है तब कृष्ण उसे अपने समान मानकर स्वीकार करते हैं। **सेइ देह करे तार चिद्आनंदमय**
अप्राकृत देहे ताँर चरण भजय

इसप्रकार जब शिष्य की देह आध्यात्मिक स्वरूप पा लेती है तो वह भक्त इस अलौकिक शरीर के द्वारा भगवान के चरणकमलों में सेवा अर्पित करता है।

श्री चैतन्य चरितामृत अंत्यलीला **4•192**

दीक्षा एवं शिक्षा गुरु

जो गुरु शास्त्र के विधिविधान से दीक्षा देते हैं वे दीक्षा गुरु तथा जो आध्यात्मिक उन्नति के लिए उपदेश देते हैं, वे शिक्षा गुरु कहलाते हैं।

श्री चैतन्य चरितामृत मध्य **8•128**

दीक्षा पुरश्चर्या विधि अपेक्षा न करे
जिह्वास्पर्शे आ–चाण्डाल सबारे उद्धारे

किसी व्यक्ति को दीक्षा लेने अथवा दीक्षापूर्व अनुष्ठान करने की आवश्यकता नहीं है, केवल अपने होठों से पवित्र हरिनाम का उच्चारण करना है। इस प्रकार सबसे निम्न कुल के चाण्डाल का भी उद्धार हो सकता है।

श्री चैतन्य महाप्रभु सत्यराज ख़ान से, श्री चैतन्य चरितामृत मध्य **15•108**

आध्यात्मिक गुरु अपने शिष्य के पापकर्मों को स्वीकारते हैं

प्रथम दीक्षा के समय आध्यात्मिक गुरु अपने शिष्य के पापकर्मों को स्वीकारते हैं। मैं बड़ी आसानी से दीक्षा दे देता हूँ, परंतु मैं क्या कर सकता हूँ। मैं श्री चैतन्य महाप्रभु की सेवार्थ नरक जाने के लिए भी तैयार हूँ।

जदुरानी को लिखे पत्र से। न्यू वृंदावन, सितंबर **4, 1972**

प्रथम बार श्रवण करने से नित्य संबंध स्थापित हो जाता है

दूसरी दीक्षा वास्तविक दीक्षा है। प्रथम दीक्षा प्रारंभिक विधि है जो शिष्य की तैयारी के लिए है, प्राथमिक और उच्चतर शिक्षा की तरह। प्रथम दीक्षा उसे शुद्धिकरण का अवसर देती है और शुद्ध होने पर वह ब्राह्मण के रूप में स्वीकारा जाता है, यह है वास्तविक दीक्षा। शिष्य एवं गुरु का नित्य संबंध पहले दिन श्रवण करने पर ही स्थापित हो जाता है। मेरे आध्यात्मिक गुरु की तरह। उन्होंने **1922** में पहली भेंट में मुझसे कहा था कि क्यों नहीं आप जैसे शिक्षित युवक इस ज्ञान का प्रचार करते। वह आरंभ था, अब वास्तव में हो रहा है। अर्थात् यह संबंध उसी दिन स्थापित हो गया था।

जदुरानी को लिखे पत्र से। न्यू वृंदावन, सितंबर **4, 1972**

सर्वप्रथम मेरे भक्तों के भक्त बनो...दास दास दासानुदास...

हम सीधे कृष्ण की ओर छलांग नहीं लगा सकते, यह नासमझी है। हमें गुरु के माध्यम से श्रीकृष्ण तक पहुँचने का प्रयास करना चाहिए। यह परम्परा कहलाती है। कृष्ण कोई सस्ती वस्तु नहीं हैं कि सीधे प्राप्त कर ली जाए। यदि कोई कहता है,' अरे मैं किसी को गुरु क्यों मानूं? मैं श्रीकृष्ण तक स्वयं पहुँच सकता हूँ।' नहीं। कृष्ण इन्हें नहीं स्वीकारते...'मद्भक्तःपूजाभ्याधिकः' कृष्ण कहते हैं, 'सर्वप्रथम मेरे भक्तों के भक्त बनो'। चैतन्य महाप्रभु कहते हैं, 'गोपी भर्तुःपदकमलयोर दास दास दासानुदासः' मैं श्रीकृष्ण के दास के दास का दासानुदास हूँ।'

भगवद्गीता प्रवचन **2.2** लंदन अगस्त **3, 1973**

एक प्रामाणिक गुरु अपने शिष्य के दोष स्पष्ट बता देते हैं

ऐसा व्यक्ति जो तथाकथित ज्ञान से गर्वित और विनम्रता से विहीन है, कभी किसी प्रामाणिक गुरु की शरण में नहीं जाता।वह सोचता है कि उसे गुरु की आवश्यकता नहीं है और वह अपने प्रयासों से परमगति पा लेगा। ऐसा व्यक्ति वेदान्त सूत्रों का अध्ययन करने की पात्रता नहीं रखता। माया–वश अर्थात् भौतिकता से अत्यधिक आसक्त व्यक्ति परम्परा के उपदेश की उपेक्षा करते हुए मनगढ़ंत विचारों का उत्पादन करते हैं और वेदांत के अधिकारक्षेत्र से बाहर हो जाते हैं। प्रामाणिक गुरु को इस प्रकार के शुष्क विचारों की भर्त्सना करनी चाहिए। गुरु जब शिष्य की मूर्खता पर प्रकाश डालें तब उन्हें अन्यथा नहीं लेना चाहिए।

भगवान श्री चैतन्य महाप्रभु का शिक्षामृत, अध्याय **18,** प्रकाशानंद के साथ संवाद

भक्तिविनोद ठाकुर, गौरकिशोर दास बाबाजी के औपचारिक गुरु नहीं थे

भक्तिविनोद ठाकुर गौरकिशोर दास बाबाजी के औपचारिक गुरु नहीं थे। बाबाजी पहले से ही परमहंस संन्यासी थे, परंतु गृहस्थाश्रमी होने पर भी ठाकुर भक्तिविनोद की उच्च आध्यात्मिक समझ के कारण बाबाजी ने उन्हें अपने गुरु के समान माना। आध्यात्मिक गुरु की दो श्रेणियां हैं, दीक्षा तथा शिक्षा गुरु। अतः प्रत्यक्ष रूप से ठाकुर भक्तिविनोद, गौरकिशोर दास बाबाजी के शिक्षागुरु थे।

दयानंद को लिखे पत्र से, मई **1, 1969**

गुरुशिष्य परम्परा का अर्थ यह नहीं कि गुरु से सीधे शिष्यत्व लिया जाए

महत्वपूर्ण यह भी है कि किसी व्यक्ति का शिष्य होने का अर्थ यह नहीं कि सीधे उन्हीं का शिष्य बना जाए। 'भगवद्गीता यथावत्' में हमने जो तात्पर्य समझाने का प्रयास किया वे अर्जुन के तात्पर्यों के समान ही हैं...एक वृक्ष की अनेक शाखाएं होती हैं और अनेक पत्तियां, लेकिन दो पत्तियां कहीं से भी लेकर देखें, स्वाद एक–सा होगा। एक–सा हमें स्वाद हमें बताता है कि पत्तियां एक ही वृक्ष की हैं।

कीर्तनानंद को लिखे पत्र से, लॉस एंजेलिस , जनवरी **25, 1969**

गुरु एक ही होते हैं

गुरु एक होता है क्योंकि प्रत्येक गुरु परम्परा में आता है। कृष्ण तथा व्यासदेव ने हजारों वर्ष पूर्व जो सिखाया वह आज भी सिखाया जा रहा है। उन उपदेशों में कोई अंतर नहीं है। अबतक सहस्रों आचार्य आ चुके परंतु सन्देश वही है। वास्तव में गुरु एकमेव होता है क्योंकि वास्तविक गुरु का उपदेश अपने पूर्ववर्ती गुरु से भिन्न नहीं होता।

'आत्म साक्षात्कार का विज्ञान' ः गुरु का चयन

पाठ 3 श्रील प्रभुपाद – इस्कॉन के संस्थापक आचार्य

पाठ के विषय

संस्थापक आचार्य के कार्य
श्रील प्रभुपाद ः श्री चैतन्य महाप्रभु के शक्तिप्रदत्त प्रतिनिधि
भविष्य में इस्कॉन

संस्थापक आचार्य के कार्य

(1)

संस्थापना का अर्थ ः
स्थापना करना, सुदृढ़ नींव या आधार प्रदान करना
सिद्धांत स्थापित करना
संस्था आदि को सर्वप्रथम स्थापित करना और उसका अस्तित्व बने रहने के लिए उचित प्रबंध करना।

ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

(2) सूचीबद्ध करें कि श्रील प्रभुपाद इस्कॉन के संस्थापक आचार्य के रूप में अभी भी किसप्रकार कार्य करते हैं ः

(3) श्रील प्रभुपाद ः श्री चैतन्य महाप्रभु के शक्तिप्रदत्त प्रतिनिधि

आधुनिक युग में श्रील प्रभुपाद को श्री चैतन्य महाप्रभु के प्रतिनिधि के रूप में स्वीकारे जाने के कुछ कारण सूचीबद्ध करें ः

मोर भक्त सेनापति

एबे नाम संकीर्तन तीक्ष्ण खडग लैया अंतर असुर जीवेर फेलिबे कटिय
यदि पापी छडि धर्म दूर देसे यया मोर सेनापति भक्त यैबे तथय

नाम संकीर्तन की धारदार तलवार लेकर मैं बद्ध जीवों के हृदय के समस्त आसुरी भावों का समूल नाश करूंगा। यदि कुछ पापी मनुष्य धार्मिक नियमों का त्याग कर विदेशों में पलायन कर जाएं, तो उस समय मेरा सेनापति भक्त आकर उन्हें कृष्णभक्ति प्रदान करेगा।

'चैतन्य मंगल' सूत्रखंड, गीत **12** श्लोक **564–565** –लोचनदास ठाकुर

(4) किस कारण से श्रील प्रभुपाद का इस्कॉन–प्रमुख के रूप में स्थान बाधित हो सकता है?

(5) भविष्य में इस्कॉन

इस्कॉन संस्थापकाचार्य श्रील प्रभुपाद का भविष्य में भी अग्रगण्य शिक्षागुरु बने रहना सुनिश्चित करने की दिशा में क्या किया जा सकता है? अपने विचार नीचे दिए गए स्थान में लिखें ः

मैं श्री चैतन्य महाप्रभु का संदेशवाहक मात्र हूँ...

मेरे प्रवचनों, पत्रों, पुस्तकों की प्रशंसा करने के लिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहूँगा। वे मेरे शब्द नहीं हैं, जैसा कि मैंने पुनःपुनः आपसे कहा, गुरुशिष्य परम्परा के माध्यम से मैंने संदेशवाहक के रूप में बिना कुछ जोड़े या घटाए श्री चैतन्य महाप्रभु के संदेश को आप तक पहुँचाया है। इसी प्रकार यदि आप इस संदेश को आगे बढ़ाएंगे तो यह दिव्य परम्परा यथावत बनी रहेगी और जनसाधारण को अत्यंत लाभ होगा।

भगवान को लिखे पत्र से, लॉस एंजेलिस, जनवरी **10, 1970**

पाठ 4 इस्कॉन में गुरु वृन्द .

पाठ के विषय

शिष्य के गुण
इस्कॉन गुरु की मनोवृत्ति
गुरु तथा इस्कॉन प्राधिकारियों के निर्देश
इस्कॉन से बाहर के गुरु

शिष्य के गुण

शिष्य के कुछ महत्वपूर्ण गुणों की सूची बनाएं।

इस्कॉन गुरु की मनोवृत्ति

निम्नलिखित बिंदुओं के संबंध में सामान्यतः एक इस्कॉन गुरु की उपयुक्त मनोवृत्ति क्या होनी चाहिए –

- श्रील प्रभुपाद की शिक्षाएं
- इस्कॉन के अंतर्गत प्राधिकारिक संरचना

अपने विचार लिखें ः

इस्कॉन गुरु वृन्द तथा इस्कॉन प्राधिकारियों के बीच संबंध

चार्ट

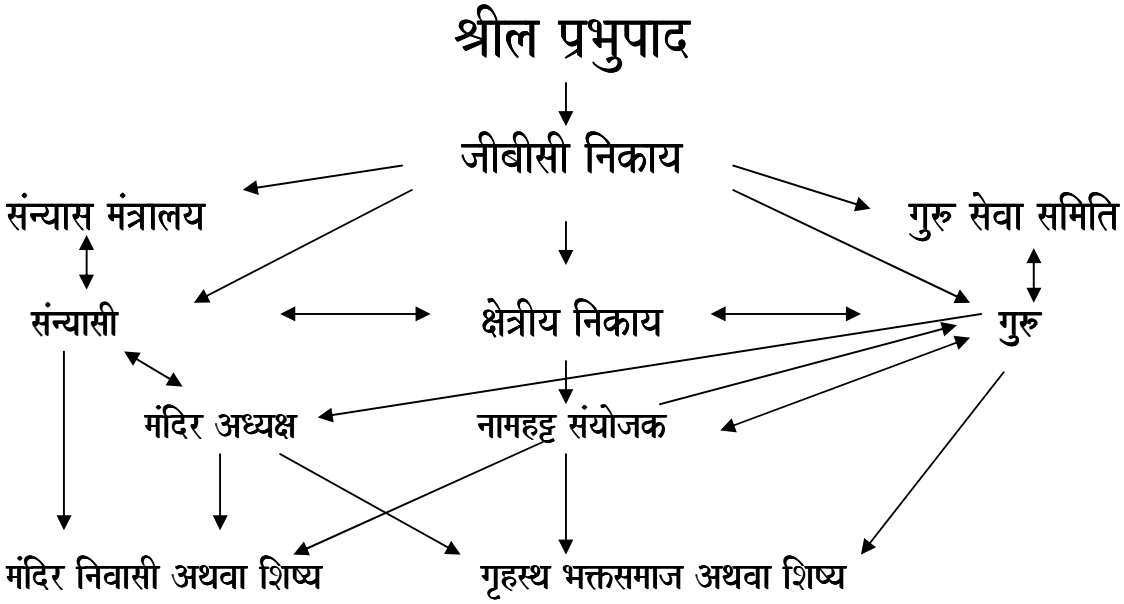

नोट ः उपर्युक्त तालिका केवल शैक्षणिक उद्देश्य के लिए है न कि प्रशासनिक निर्देश। यह प्रदर्शित करती है कि इस्कॉन के सदस्य श्रील प्रभुपाद एवं जीबीसी के निदेशानुसार किसप्रकार सेवा कर सकते हैं। इस्कॉन में अनेक प्राधिकार श्रेणियां हैं जिनकी हमें सेवा और सम्मान करना चाहिए।

गुरु तथा इस्कॉन प्राधिकारियों के निर्देश

सामूहिक गतिविधि ः निम्नलिखित दो परिस्थितियों को प्रदर्शित करते हुए लघु नाट्य प्रस्तुत करें ः

1 भक्त का एक अनुपयुक्त व्यवहार जब मंदिर प्राधिकारी के निदेश, गुरु के निदेशों से भिन्न हों।

2 भक्त का एक उपयुक्त व्यवहार जब मंदिर प्राधिकारी के निदेश, गुरु के निदेशों से भिन्न हों।

नीचे दिए गए स्थान में पस्तुति के बिन्दु लिखें ः

इस्कॉन से बाहर के गुरु

इस्कॉन के अंतर्गत तथा अनुमोदित शिक्षा एवं दीक्षा गुरु स्वीकारने के कुछ लाभ नीचे दिए गए स्थान में सूचीबद्ध करें।

इस्कॉन गुरु की मनोवृत्ति

श्रील प्रभुपाद एवं गुरु परम्परा की सेवा

जो व्यक्ति इस्कॉन में शिक्षा अथवा दीक्षा गुरु के रूप में सेवाएं दे रहे हैं वे श्रील प्रभुपाद की शिक्षाओं को अपने वचनों और आचरण द्वारा सिखाने में पारंगत हों। परम्परा तथा श्रील प्रभुपाद का प्रतिनिधित्व करते हुए शिक्षा गुरु आध्यात्मिक निदेश एवं प्रेरणा प्रदान करते हैं, दीक्षा गुरु आध्यात्मिक निदेश, प्रेरणा, प्रथम दीक्षा तथा आध्यात्मिक नाम प्रदान करते हैं तथा इसके उपरांत ब्राह्मण दीक्षा देकर शिष्य को श्रील प्रभुपाद एवं गुरु परंपरा का योग्य सेवक बनाते हैं।

303, श्रील प्रभुपाद के पद विषयक जीबीसी का वक्तव्य–मार्च **2013** से उद्धरण

भक्तिसिद्धांत सरस्वती ठाकुर की प्रशासनिक कमिटी

अपने तिरोभाव के समय श्रील भक्तिसिद्धांत सरस्वती ठाकुर ने अपने सभी शिष्यों से अनुरोध किया था कि प्रचारकार्य को सहयोगपूर्वक जारी रखने के लिए वे सब मिलकर एक प्रशासनिक कमिटी का गठन करें। उन्होंने किसी एक भक्त को अगला प्रमुख आचार्य बनने का निदेश नहीं दिया। परंतु उनके मरणोपरांत तुरंत ही उनके मुख्य सचिवों ने आचार्यपद हथियाने की योजना बनाई और अगला आचार्य कौन हो इसपर सहमति न बन पाने के कारण दो दलों में बँट गए। परिणामस्वरूप दोनों ही दल 'असार' अर्थात् व्यर्थ थे क्योंकि गुरु की अवज्ञा करने के कारण उनके पास कोई अधिकार नहीं था।

श्री चैतन्य चरितामृत आदिलीला **12•8**

गुरु तथा इस्कॉन प्राधिकारियों के निर्देश

श्रील प्रभुपाद का अनुसरण किंतु जीबीसी की अवज्ञा

"जब वे कहते हैं कि वे इस्कॉन या जीबीसी को नापसंद करते हैं तो वास्तव में उनका मंतव्य है कि वे मेरा अनुसरण नहीं करना चाहते। इसका अर्थ है वे मेरी आज्ञा को पसंद नहीं करते। इसका अर्थ है उन्हें मेरी आज्ञा पर विश्वास नहीं है। अर्थात् उन्हें मुझपर श्रद्धा नहीं है। यह गुरु–अपराध है। यह कहना कि उन्हें मुझपर श्रद्धा है, केवल ढोंग या मिथ्याचार है।"

इस्कॉन हवाई, फरवरी **8, 1975**। 'प्रभुपाद लीलामृत' से। ले•सत्स्वरूपदास गोस्वामी

इस्कॉन से बाहर के गुरु

परम्परा से बाहर किसी से श्रवण न करें

अच्छा हो कि आप अधिकारप्राप्त व्यक्ति से श्रवण करें जैसे कि आपके आध्यात्मिक गुरु अथवा अनुभवी गुरुभाई, परंतु परम्परा क्रम से बाहर के व्यक्ति से कभी श्रवण न करें। ऐसा श्रवण करना और फिर उस भूल को सुधारना, समय का अपव्यय है।

हंसदूत को लिखे पत्र से। हैम्बर्ग सितंबर **5, 1969**

कृपया उनसे दूर रहें

"मुझे आपका सितंबर **3, 1975** दिनांकित पत्र मिला जिसमें बन महाराज का उल्लेख है। अतः मैंने आदेश जारी किए हैं कि मेरे सभी शिष्य मेरे गुरुभाइयों से दूर रहें। उनके साथ कोई लेन–देन एवं पत्राचार आदि न

करें, न तो मेरी कोई पुस्तक उन्हें दें न ही उनकी पुस्तकें खरीदें। न ही आपको उनके किसी मंदिर में जाना चाहिए। कृपया उनसे दूर रहें।"

विश्वकर्मा को लिखे पत्र से। मुंबई, नवंबर **9, 1975**

उन्हें प्रसाद दें, ज्येष्ठ वैष्णव की तरह उनका आदर करें परंतु वे प्रवचन नहीं कर सकते...

सभी वैष्णव कृष्ण भावनामृत का प्रचार करने के अधिकारी होते हैं परंतु अधिकार के भी चरण होते हैं। मोटे तौर पर यदि इन बन महाराज का उद्देश्य मुझे दबाना है तो हम इनका स्वागत कैसे कर सकते है? वे पहले ही एक प्रोफेसर पर गलत प्रभाव डाल चुके हैं। उन्हें एक अतिथि माना जाए, यदि वे हमारे मंदिर में आएं तो उन्हें प्रसाद दें, एक वरिष्ठ वैष्णव की तरह आदर करें परंतु वे प्रवचन नहीं कर सकते। यदि वे प्रवचन देना चाहें तो आप उनसे कहें कि वक्ता पहले से निर्धारित है। बस।

सत्स्वरूप को लिखे पत्र से। होनोलुलू जून **4, 1975**

अतिरिक्त उद्धरण पाठ 4 इस्कॉन में गुरु वृन्द

जीबीसी

"गवर्निंग बॉडी कमीशन (जीबीसी) समूचे कृष्ण भावनामृत संघ के प्रबंधन की सर्वोच्च प्राधिकारी होगी।"

श्रील प्रभुपाद के इच्छापत्र में घोषित, जून **1977**

गौडीय मिशन अपने प्रचार कार्य में असफल रहा...

आपको इस प्रचार कार्य में निरंतर संलग्न रहना होगा। गौडीय मठ अपने प्रचार में असफल हो गया क्योंकि उन्होंने इस सिद्धांत को अंगीकार किया, उन्हें मठ के नाम पर तनिक –सा आश्रय मिलता और वे एकाध दर्जन शिष्य लेकर पहुँच जाते, वहीं स्थापित हो जाते, यह दर्शाने के लिए कि वे कितने महान कीर्तनिया हैं, हरेकृष्ण भजन करने लगते। और कहाँ है आपका प्रचारकार्य? अतः मेरे गुरु महाराज ने इस नीति की भर्त्सना की।'मन तुमि किसेर वैष्णव –मन तुम कैसे वैष्णव हो' 'प्रतिष्ठार तरे निर्जनेर घरे तव हरिनाम केवल' 'केवल तुच्छ प्रसिद्धि के लिए– अरे वह वैष्णव है...वह कीर्तन कर रहा है...ठीक है' 'कोई समस्या नहीं, चूँकि कोई प्रचार नहीं, इसलिए कोई कष्ट भी नहीं। आप बैठे लोगों को दिखा सकते हैं कि 'मैं मुक्त जीव हो गया हूँ' बस जप और ध्यान। यह तो ऊँघना हुआ।इस प्रकार के उपक्रम का मेरे गुरु महाराज ने निषेध किया। यह छल है। उन्होंने ऐसे उपक्रम का अनुमोदन नहीं किया। वे सबको प्रचार सेवा में लगा देखना चाहते थे।

श्रीमद् भागवतम **6•3•18** गोरखपुर फरवरी **11, 1971**

श्रील प्रभुपाद की आज्ञा थी कि जीबीसी के प्राधिकार को स्वीकार करें

वैष्णव सिद्धांत के अनुसार गुरु होने की अनिवार्य योग्यता यह है कि व्यक्ति अपने गुरु की आज्ञा का पालन करे। वह सदैव सेवक रहता है, स्वामी नहीं बनता। अतएव इस्कॉन में गुरु बनने की योग्यता पाने के लिए श्रील प्रभुपाद की आज्ञा का पालन करना अत्यावश्यक था, वे चाहते थे कि सभी भक्त जीबीसी के अधीन सहयोगपूर्वक सेवा करें। जीबीसी का प्राधिकार स्वीकार करना स्वेच्छिक या वैकल्पिक व्यवस्था नहीं वरन् श्रील प्रभुपाद का आदेश था, अतः गुरु–पद के लिए भी आवश्यक है।

गुरु रिफॉर्म–रवीन्द्रस्वरूप दास–इस्कॉन कम्यूनिकेशन जर्नल **2•1**

शिष्य को गुरु की आज्ञा का अडिग रहकर पालन करना चाहिए

श्रील भक्तिसिद्धांत सरस्वती गोस्वामी महाराज इस संदर्भ में कहते हैं, ''शिष्य अपने जीवन का लक्ष्य पाने में पूर्णरूपेण सफल हो सकता है यदि वह अपने गुरु के मुख से निकले उपदेश का अक्षरशः पालन करे।'' गुर्वाज्ञा को इसप्रकार शिरोधार्य करना 'श्रौत वाक्य' कहलाता है, गुरू की आज्ञा का अडिग रहकर पालन करना। श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर इस संबंध में टिप्पणी करते हैं, 'शिष्य को चाहिए कि वह गुरु की आज्ञा को अपना जीवनप्राण माने।''

श्री चैतन्य चरितामृत आदिलीला **7•72**

श्रील प्रभुपाद का आज्ञापालन परंतु उनकी जीबीसी का नहीं...

श्रील प्रभुपाद के कक्ष में एक और आमना–सामना हुआ जब कुछ भक्त प्रभुपाद का अनुसरण करने परंतु जीबीसी प्रतिनिधि या इस्कॉन के प्राधिकार न मानने पर तुले हुए थे। ये भक्त हवाई में इस्कॉन के भूतपूर्व प्रतिनिधि थे परंतु अब सारी धन–संपत्ति अपने नाम करने की धमकी दे रहे थे। प्रभुपाद उनसे पूछते रहे, '' आप चले क्यों गए? आप रहते क्यों नहीं? आप शरण क्यों नहीं लेते?'' भक्त कहते रहे कि वे प्रभुपाद पर विश्वास करते हैं किंतु जीबीसी पर नहीं।

शरणागत होने के लिए प्रभुपाद द्वारा किए जा रहे सरल से अनुरोध को अमान्य होता देखकर कक्ष में बैठे एक जीबीसी सदस्य ने क्षुब्ध होकर कहा, ''आप प्रभुपाद को स्वीकार करते हैं?''

'हाँ'' वे बोले।

'' और आप उनपर श्रद्धा रखते हैं?''

''हाँ''

'' आप मानते हैं कि उनकी प्रत्येक आज्ञा का पालन करेंगे?''

''हाँ''

'' यदि प्रभुपाद आपसे जीबीसी का अनुसरण करने को कहें, तो आप करेंगे?'' कक्ष में गंभीर शांति छा गई।

'' नहीं, हम नहीं कर सकते।''

जैसे ही उन्होंने 'न' कहा, श्रील प्रभुपाद ने मेज पर मुक्का मारा और पथभ्रष्ट भक्तों की ओर संकेत करते हुए बोले, ''देखिए इनका कपट ''।

प्रभुपाद के इस कठोर निष्कर्ष के बाद भी वे 'हम आपका आश्रय ले सकते हैं –इस्कॉन का नहीं' विचारधारा पर ही अड़े रहे जबतक प्रभुपाद ने उन्हें जाने के लिए नहीं कह दिया। प्रभुपाद ने कक्ष में बचे बाकी भक्तों से कहा, '' जब वे कहते हैं कि वे इस्कॉन या जीबीसी को पसंद नहीं करते तो वास्तव में वे कहते हैं कि उन्हें मेरी आज्ञा का पालन करना पसंद नहीं है जिसका अर्थ है उन्हें मेरी आज्ञा पसंद नहीं है। इसका अर्थ उन्हें मुझपर श्रद्धा नहीं है। यह गुरु अपराध है। मेरे प्रति उनकी श्रद्धा का दावा केवल मिथ्याचार है।

होनोलुलू, फरवरी **8, 1975**। 'प्रभुपाद लीलामृत' से। ले• सत्स्वरूपदास गोस्वामी

शिष्य को अपने गुरु के समक्ष सदैव नासमझ ही बने रहना चाहिए

श्री चैतन्य महाप्रभु ने शिष्यत्व का श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया। आध्यात्मिक गुरु बहुत अच्छी तरह जानते हैं कि प्रत्येक शिष्य को उसके योग्य विशिष्ट सेवा में किसप्रकार संलग्न किया जाए, परंतु यदि शिष्य स्वयं को गुरु से अधिक उन्नत मानकर उनकी अवज्ञा करे और स्वतंत्र रूप से कार्य करे तो अपनी आध्यात्मिक प्रगति को बाधित कर लेता है। प्रत्येक शिष्य को चाहिए कि वह स्वयं को कृष्ण विज्ञान के क्षेत्र में अज्ञ माने

और तत्परता से गुर्वाज्ञा का पालन करे ताकि कृष्णभावना में सक्षम बन सके। शिष्य को अपने गुरु के समक्ष सदैव नासमझ ही बने रहना चाहिए।

श्री चैतन्य चरितामृत आदिलीला **7•72**

समझदार व्यक्ति को चाहिए कि वह सत्–असत् विवेकबुद्धि से काम लेना सीखे

हमें इसप्रकार जीवनयापन करना चाहिए कि मानसिक एवं बौद्धिक दृष्टि से हम स्वयं को स्वस्थ और सबल रख सकें ताकि समस्याओं से भरे जीवन के बीच अपने जीवन के लक्ष्य को पहचान सकें। समझदार व्यक्ति को चाहिए कि वह सत्–असत् विवेकबुद्धि से काम लेना सीखे, ताकि उचित–अनुचित में भेद कर वह अपने जीवन के लक्ष्य को पा सके।

श्रीमद् भागवतम तात्पर्य **7•6•5**

इकाई दो

गुरु के साथ संबंध स्थापित करना

.....

पाठ **5** **गुरु पादाश्रय**
प्रभुपादाश्रय
दीक्षा अथवा शिक्षा गुरु पादाश्रय तथा प्रभुपादाश्रय

पाठ **6** **गुरु का चयन**
प्रामाणिक गुरु की योग्यताएं
गुरु का चयन

पाठ **7** **दीक्षा की प्रतिज्ञाएं**
दीक्षा प्रतिज्ञाओं का कठोर पालन
प्रतिज्ञापालन में आनेवाली कठिनाइयां अथवा चुनौतियां
कठिनाइयों के समाधान
संशोधन के चरण

पाठ 5 गुरु–पादाश्रय

पाठ के विषय

प्रभुपादाश्रय दीक्षा अथवा शिक्षा गुरु पादाश्रय

यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ
तस्यैते कथिताह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः

'ऐसे महात्माओं पर वैदिक ज्ञान का अभिप्राय स्वतः प्रकाशित हो जाता है, जिनकी श्रीभगवान तथा आध्यात्मिक गुरु में गहन निष्ठा है।'

श्वेताश्वतर उपनिषद **6•23**

प्रभुपादाश्रय संबंधी दिशानिर्देश

कतिपय ऐसे विशेष तरीकों की सूची बनाएं जिनके द्वारा आप अपने आध्यात्मिक जीवन के आरंभ से ही श्रील प्रभुपाद के साथ गहन और विश्वासजनक भक्तिमय संबंध विकसित कर सकते हैं।

श्रील प्रभुपाद का प्रत्येक इस्कॉन भक्त के साथ अनोखा संबंध है

अंतर्राष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ के संस्थापक आचार्य, अग्रगण्य शिक्षा गुरु एवं सर्वोच्च प्राधिकारी होने के कारण श्रील प्रभुपाद का प्रत्येक इस्कॉन भक्त के साथ अद्वितीय संबंध है।

303, श्रील प्रभुपाद के पद विषयक जीबीसी का वक्तव्य –मार्च **2013** से उद्धरण

नवागत सदस्यों को प्रभुपाद का आश्रय लेने का उपदेश दें

इस्कॉन भक्त नए सदस्यों को उपदेश देंगे कि वे श्रील प्रभुपाद का आश्रय लें तथा कृष्णभावनामृत के उपदेशकों से मार्गदर्शन, प्रशिक्षण तथा सहायता लें। इस्कॉन सदस्य स्वयं चुनेंगे कि वे कब और किससे दीक्षा लेना चाहेंगे। उन्हें अपना ध्यान संस्थापक आचार्य तथा अग्रगण्य शिक्षा गुरु के रूप में श्रील प्रभुपाद पर केंद्रित करना चाहिए।

इस्कॉन नियमावली **7•2•1** प्रथम (हरिनाम) दीक्षा

प्रभुपाद के प्रणाममंत्र का कम से कम पहला भाग पढ़ें

प्रणाम के समय अपने गुरु का प्रणाम मंत्र पढ़ने के बाद सभी पौत्रशिष्य तथा भावी पीढ़ियों के शिष्य, संस्थापक आचार्य का सम्मान करने के लिए श्रील प्रभुपाद के प्रणाम मंत्र का कम से कम पहला भाग अवश्य पढ़ें।

दीक्षा अथवा शिक्षा गुरू पादाश्रय एवं प्रभुपादाश्रय

दीक्षा अथवा शिक्षा गुरू पादाश्रय तथा प्रभुपादाश्रय में क्या संबंध है? नीचे लिखें।

इस्कॉन में गुरु पादाश्रय

इस्कॉन के शिष्य को तीन आश्रय स्वीकारने चाहिए : **श्रील प्रभुपाद** शिक्षा गुरु दीक्षा गुरु

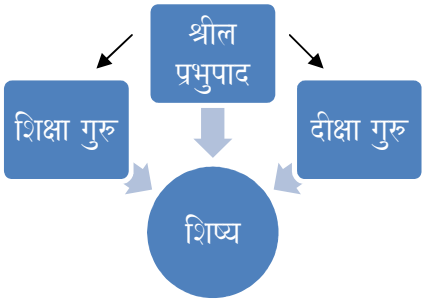

शिक्षा गुरु, दीक्षा गुरु की शिक्षाओं के विरुद्ध कुछ नहीं कहते...

दीक्षा गुरु सदैव उपस्थित नहीं रहते। अतः व्यक्ति किसी वरिष्ठ भक्त से शिक्षा और उपदेश ले सकता है। वे शिक्षा गुरु कहलाते हैं। शिक्षा गुरु से यह अपेक्षित नहीं कि वह दीक्षा गुरु के उपदेशों के विरुद्ध शिक्षा दे। ऐसा व्यक्ति शिक्षा गुरु नहीं, एक धूर्त है।

श्रील प्रभुपाद प्रत्येक इस्कॉन सदस्य के लिए अग्रगण्य शिक्षा गुरु हैं

इन सहयोगी तत्वों के अंतर्गत श्रील प्रभुपाद इस्कॉन के संस्थापक आचार्य होने के कारण अग्रगण्य शिक्षा गुरु हैं। इस्कॉन की सभी पीढ़ियों के सदस्य प्रभुपाद तथा उनकी पुस्तकों, शिक्षाओं, सेवाओं और संघ का आश्रय लेने हेतु प्रोत्साहित किए जाते हैं।

303, श्रील प्रभुपाद के पद विषयक जीबीसी का वक्तव्य–मार्च **2013**

पाठ 6 गुरु का चयन

पाठ के विषय

प्रामाणिक गुरु की योग्यताएं गुरु का चयन

प्रश्न : आपकी एक गुरु से क्या अपेक्षाएं हैं? नीचे लिखें।

प्रामाणिक गुरु की योग्यताएं

प्रश्न : प्रामाणिक गुरु में क्या योग्यताएं होनी चाहिए? आपसी चर्चा के निष्कर्ष से नीचे लिखें।

प्रामाणिक गुरु की योग्यताएं

वाचो वेगं मनसः क्रोध वेगं जिह्वा वेगं उदरोपस्थ वेगं
एतान् वेगान् यो विषहेत धीरः सर्वा अपीमां पृथिवीं स शिष्यात्

–जो धीर व्यक्ति बोलने के वेग, मन के वेग, क्रोध के वेग, जिह्वा के वेग, उदर एवं जननेंद्रियों के वेगों को संयमित कर सकता है, वह संपूर्ण विश्व में शिष्य बना सकता है।

उपदेशामृत श्लोक **1**

दो योग्यताएं...

तद्विज्ञानार्थं सगुरुं एवाभिगच्छेत्
समित्पाणिः श्रौत्रियं ब्रह्म-निष्ठं

–इन विषयों को भलीप्रकार समझने के लिए व्यक्ति को हाथ में समिधा (तथा गुरुसेवा के लिए उपयुक्त अन्य सामग्री) लेकर एक ऐसे गुरु के पास जाना चाहिए, जो वेदों में पारंगत हो तथा परम सत्य की सेवा में दृढ़तापूर्वक स्थित हो।

मुंडक उपनिषद **1•2•12**

प्रामाणिक गुरु किसी प्रकार का कपोलकल्पित, मनगढ़ंत ज्ञान नहीं देते, उनका ज्ञान मानक और परम्परा-प्राप्त होता है। वे भगवतसेवा में दृढ़तापूर्वक स्थित होते हैं(ब्रह्म-निष्ठं)। ये हैं उनही दो योग्यताएं ः **पहली** कि उन्होंने वेदों का ज्ञान गुरु परम्परा से प्राप्त किया हो तथा **दूसरी** यह कि वे भगवतभक्ति में दृढ़ रूप से स्थित हों। यह आवश्यक नहीं कि वे प्रकांड विद्वान हों परंतु उन्होंने उपयुक्त अधिकारी से श्रवण किया हो।

भगवान कपिल का शिक्षामृत, श्लोक **4**, प्रामाणिक गुरुपादाश्रय

गुरु का चयन

गुरु का चयन करने के कुछ अनुपयुक्त कारण लिखें ः

गुरु का चयन करने के चरण

हरिनाम दीक्षा की ओर बढ़ने के निम्नलिखित चरण इस्कॉन नियमावली से अंगीकार किए गए हैं। परिशिष्ट 4 में पूरा विवरण देखें।

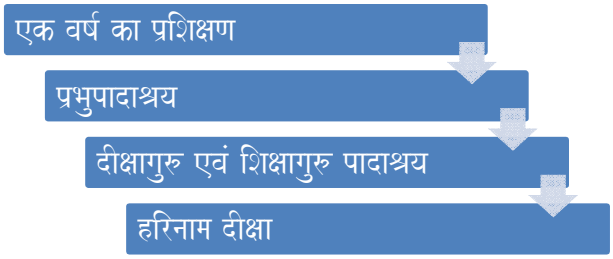

एक वर्ष का प्रशिक्षण

भक्तिमय सेवा में अनुकूल भाव से संलग्न होना
चार नियामक सिद्धांतों का दृढ़ता से पालन
प्रतिदिन सोलह माला जप करना
पूरे प्रातःकालीन कार्यक्रम में उपस्थित रहना (मंदिर निवासी के लिए)
घर अथवा नामहट्ट में पूरे प्रातःकालीन कार्यक्रम में उपस्थित रहना (जो मंदिर निवासी नहीं हैं)

प्रभुपादाश्रय

पूर्व प्रतिष्ठित शिक्षा गुरु के रूप में श्रील प्रभुपाद पर ध्यान केंद्रित करना
प्रणाम करते समय प्रभुपाद के प्रणाम मंत्र का उच्चारण करना
इस्कॉन में आध्यात्मिक प्राधिकारियों (शिक्षा गुरुओं) से मार्गदर्शन लेना

शिक्षागुरु एवं दीक्षागुरु पादाश्रय

व्यक्ति छह माह की अवधि तक उपर्युक्त नियमों को पालन करने के उपरांत इस्कॉन अनुमोदित दीक्षा गुरुओं में से किसी एक का चयन कर सकता है, जिनसे वह शिक्षा लेता रहा है। स्मरण रहे कि छह माह न्यूनतम अवधि है, वह इस चयन के लिए जितना चाहे समय ले सकता है।

भक्त का दायित्व है कि ः

वह अपनी बुद्धिमत्ता का उपयोग कर गुरु का चयन करे।
मंदिर अध्यक्ष अथवा संबंधित प्राधिकारी को सूचित करे।
इस्कॉन प्राधिकारी द्वारा आयोजित लिखित परीक्षा दे।
इस्कॉन अधिकारी से अनुशंसा पत्र ले।
चयन किए गए गुरु से अनुमति ले।
गुरु की पूजा करे, उनका प्रणाम मंत्र पढ़े (प्रभुपाद प्रणाम मंत्र के पहले)।
चयनित दीक्षा गुरु से उपदेश लेने के साथ वह पूर्ववत अपने स्थापित शिक्षा गुरु से शिक्षा लेता रहे।

यदि भक्त किसी अन्य इस्कॉन गुरु से दीक्षा लेने का इच्छुक हो तो गुरु तथा स्थानीय अधिकारियों को इस बात की सूचना दे।

हरिनाम दीक्षा

उपर्युक्त के न्यूनतम छह माह पश्चात व्यक्ति वैष्णव दीक्षा प्राप्त कर सकता है।

गुरु किसी दीक्षार्थी को दीक्षा देने के लिए बाध्य नहीं होंगे।

दीक्षा के उपरांत दीक्षा गुरु के आदेशानुसार शिक्षा गुरु स्वीकारने चाहिए।

प्रामाणिक गुरु की योग्यताएं

व्यक्तिगत आचरण एवं प्रचार

'आचार' 'प्रचार' नामेर करह दुई कार्य
तुमि सर्व गुरु तुमि जगतेर आर्य

'आप हरिनाम से संबंधित आचार एवं प्रचार नामक दोनों दायित्व साथसाथ निभाएं। आप समस्त संसार के गुरु हैं क्योंकि आप सबसे महान भक्त हैं।' तात्पर्य ः सनातन गोस्वामी ने प्रामाणिक जगद्गुरु की स्पष्ट परिभाषा दी है। उनके अनुसार दो योग्यताएं हैं शास्त्रानुसार आचरण तथा प्रचार। जो ऐसा करता है, वही प्रामाणिक गुरु है।

श्री चैतन्य चरितामृत अंत्य **4•103**

किसी भी आश्रम से...

किबा विप्र किबा न्यासी शूद्र केने नय
येइ कृष्ण तत्ववेत्ता सेइ गुरु हय

यदि किसी को कृष्णतत्व का ज्ञान है तो वह आध्यात्मिक गुरु बन सकता है चाहे वह ब्राह्मण हो, संन्यासी हो अथवा शूद्र।

श्री चैतन्य चरितामृत मध्य **8•128**

आप सब आध्यात्मिक गुरु बनें

आमार आज्ञाय गुरु हञ तार' एइ देश
यारे देख तारे कह कृष्ण उपदेश

भगवान श्री चैतन्य महाप्रभु कहते हैं कि आप सब आध्यात्मिक गुरु बनें। एक या दो क्यों? आप सभी।'गुरु बनना बहुत कठिन है', नहीं। कठिन नहीं है। चैतन्य महाप्रभु ने कहा 'आमार आज्ञाय' 'मेरी आज्ञा का पालन मात्र करें।' तब आप गुरु बन जाते हैं।

भगवद्गीता **4•1–2**, कोलंबस, मई **9, 1969**

"मेरी आज्ञा से" यह निर्णायक बिंदु है

तो हर कोई आध्यात्मिक गुरु कैसे बने? गुरु के पास पर्याप्त ज्ञान तथा अन्य अनेक योग्यताएं होनी चाहिए। नहीं।बिना योग्यताओं के भी गुरु बनना संभव है। कैसे? श्री चैतन्य महाप्रभु इसकी विधि बताते हैं, आमार आज्ञा ः "मेरी आज्ञा से"। यह निर्णायक बिंदु है। कोई अपनी मनमर्जी से गुरु नहीं बन जाता, यह गुरु नहीं। उसे अपने उच्चाधिकारी से आज्ञा प्राप्त होनी चाहिए।तब वह गुरु बनेगा। आमार आज्ञाया। ठीक मेरी तरह। हमारे उच्चाधिकारी, मेरे गुरु ने मुझे आज्ञा दी कि तुमने मुझसे जो भी सीखा, उस वेदज्ञान को अंग्रेजी में प्रचारित करने का प्रयत्न करो।हमने वही प्रयत्न किया।ऐसा नहीं कि मैं बहुत योग्य हूँ। एकमात्र

योग्यता है कि मैंने अपने वरिष्ठ अधिकारी की आज्ञा पालन करने का प्रयास किया। सफलता का यही रहस्य है।

भगवद्गीता **2•2**, लंदन, अगस्त **3, 1973**

अचानक कट्टरतावश गुरु नहीं चुन लेना चाहिए, यह बहुत घातक है...

शास्त्रों का आदेश है कि गुरु का चयन करने से पहले हमें सूक्ष्म विश्लेषण करते हुए यह पता लगाना चाहिए कि हम उनके प्रति शरणागत हो सकते हैं या नहीं। हमें कट्टरतावश गुरु नहीं बना लेना चाहिए, यह बहुत घातक है। गुरु को भी शिष्य का आकलन कर यह जानना चाहिए कि वह दीक्षित करने योग्य है या नहीं। गुरु एवं शिष्य के बीच संबंध इसप्रकार स्थापित होता है।

आत्मसाक्षात्कार का विज्ञान, **2**अ, 'गुरु कौन है'

कम से कम एक वर्ष तक सम्पर्क में रहें

सनातन गोस्वामी रचित 'हरिभक्ति विलास' के अनुसार गुरु तथा शिष्य को एक वर्ष तक सम्पर्क में रहना चाहिए। वार्तालाप के माध्यम से शिष्य यह जान सकेगा कि इस व्यक्ति को मैं अपना गुरु स्वीकार कर सकता हूँ। और गुरु भी यह जान पाएं कि यह व्यक्ति मेरा शिष्य बनने योग्य है। इसप्रकार स्थापित संबंध मधुर होते हैं।

श्रीमद् भागवतम **1•16•25** प्रवचन, हवाई, जनवरी **21, 1974**

कम से कम एक वर्ष उनसे श्रवण करें

अतः सही विधि यह है कि दीक्षा लेने से पहले एक वर्ष अपने भावी गुरु से श्रवण करें। और जब आश्वस्त हो जाएं कि 'यही वे गुरु हैं जो मुझे शिक्षा दे सकते हैं' तब गुरु स्वीकारें। अपनी सनक से नहीं।

श्रीमद् भागवतम **1•16•25** प्रवचन, हवाई, जनवरी **21, 1974**

किसी को गुरु–त्याग की विपदा अपने ऊपर नहीं लानी चाहिए

शास्त्र परामर्श देते हैं कि गुरु एवं शिष्य एकदूसरे को स्वीकारने से पहले अच्छी तरह परख लें। आज जबकि साधारण घरेलू उपयोग की वस्तुएं भी जाँचपरख कर ली जाती हैं, केवल कोई अभागा नासमझ ही होगा जो अपने वास्तविक गुरु के चयन का प्रयास न करे...गुरु, जो सब जीवों के सच्चे मित्र होते हैं। तात्पर्य यह कि किसी को गुरु–त्याग की विपदा अपने ऊपर नहीं लानी चाहिए। यदि व्यक्ति विवेकशील है तो ऐसी स्थिति से बच सकता है।

हरिनाम चिंतामणि **–6**

सामाजिक रूढ़िगत गुरु नहीं स्वीकारने चाहिए

एक गंभीर शिष्य के लिए यह अत्यावश्यक है कि वह शास्त्रों के निदेशानुसार गुरु का चयन करे। श्री जीव गोस्वामी सलाह देते हैं कि वंशपरम्परानुगत अथवा सामाजिक रूढ़िगत गुरु नहीं स्वीकारने चाहिए। व्यक्ति को वास्तविक आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने हेतु एक प्रामाणिक सुयोग्य गुरु ढूँढ़ने का प्रयास करना चाहिए।

श्री चैतन्य चरितामृत आदिलीला **1•35** तात्पर्य

अपनी बुद्धि का उपयोग कर सही चयन करें

दीक्षार्थी का यह व्यक्तिगत दायित्व है कि वह अपनी बुद्धि का उपयोग कर, अपने गुरु के रूप में एक विशिष्ट भक्त का सही चयन करे। गुरु की अपने शिष्य को वापस भगवद्धाम ले जाने की क्षमता के प्रति परिपक्व एवं सुदृढ़ श्रद्धा उपजने पर ही गुरु से दीक्षा लेनी चाहिए। एक भक्त की प्रगति का स्तर 'गुरु, साधु

एवं शास्त्र' इन अधिकारिक संदर्भों से जाँचा जा सकता है। इस्कॉन में गुरु बनने का औपचारिक अनुमोदन मिलना इस बात का द्योतक है कि उस भक्त ने इस्कॉन नियमावली द्वारा निर्धारित प्राधिकार प्रक्रिया को सफलतापूर्वक पूरा किया है तथा कुछ वरिष्ठ भक्तों के निर्णयानुसार वह भक्त इस्कॉन नियमावली के विहित मार्गदर्शक मानदंडों को पूरा करता है। तथापि यह अनुमोदन, अनुमोदित गुरु के भगवद्साक्षात्कार के स्तर से संबंधित विधान या प्रमाण के अर्थ में न लिया जाए, न ही दीक्षार्थी अपनी विवेकबुद्धि की उपेक्षा करे।

इस्कॉन नियमावली **7•2**, दीक्षार्थी का दायित्व

अतिरिक्त उद्धरण पाठ 6 गुरु का चयन

प्रामाणिक गुरु की योग्यताएं

तस्मद् गुरुम् प्रपद्येत जिज्ञासुः श्रेय उत्तमं
शाब्दे परे च निष्णातम् ब्रह्मण्य उपशमाश्रयं

अतः वास्तविक आनंद के अभिलाषी व्यक्ति को चाहिए कि वह प्रामाणिक गुरु से दीक्षा लेकर उनका शरणागत बने। प्रामाणिक गुरु की योग्यता यह है कि वे विचार-विमर्श के द्वारा शास्त्रों के निष्कर्षों का साक्षात्कार कर चुके हों तथा अन्य लोगों को भी इन निष्कर्षों का प्रत्यय दिला सकें। ऐसे महाजनों को प्रामाणिक गुरु माना जाए, जो समस्त भौतिक चिंताओं से दूर होकर परमेश्वर भगवान की शरण ग्रहण कर चुके हैं।

श्रीमद् भागवतम **11•3•21**

गुरु का चयन

शिष्य को सावधानीपूर्वक एक 'उत्तम अधिकारी' को अपना गुरु चुनना चाहिए

जब किसी व्यक्ति को अपने श्रीकृष्ण के नित्य सेवक होने का साक्षात्कार हो जाता है तो वह कृष्णसेवा के अतिरिक्त अन्य सब में रुचि खो देता है। वह सदैव कृष्ण का चिंतन करता है, हरिनाम का प्रचार करने के उपाय ढूंढ़ता रहता है और समझ लेता है कि कृष्ण भावनामृत का विश्वव्यापी प्रचार करना ही उसका एकमात्र कार्य है। ऐसा व्यक्ति 'उत्तम अधिकारी' कहलाता है और उसका संग छह प्रीतिलक्षणों (ददाति, प्रतिग्रहणाति...)की विधि से तत्काल स्वीकार लेना चाहिए। वास्तव में एक उत्तम अधिकारी भक्त को ही गुरु के रूप में स्वीकारना चाहिए तथा अपनी समस्त संपत्ति उन्हें अर्पित कर देनी चाहिए क्योंकि शास्त्रादेश के अनुसार अपना सर्वस्व गुरु को अर्पण करना चाहिए...

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने इस विषय में कुछ व्यवहारिक संकेत दिए हैं कि एक उत्तम अधिकारी वैष्णव को, अनेक पतित आत्माओं को वैष्णव बना देने की उसकी क्षमता से पहचाना जा सकता है।

...इस श्लोक में रूप गोस्वामी परामर्श देते हैं कि भक्त को इतना बुद्धिमान होना चाहिए कि वह कनिष्ठ, मध्यम तथा उत्तम अधिकारी में अंतर देख सके। उत्तम अधिकारी का स्तर प्राप्त किए बिना किसी को गुरु नहीं बनना चाहिए। कनिष्ठ या मध्यम अधिकारी भी शिष्य बना सकते हैं परंतु ये शिष्य भी समान स्तर पर हों तथा यह जान लेना चाहिए कि इस गुरु के अपर्याप्त मार्गदर्शन में वे जीवन के परम लक्ष्य की ओर अग्रसर नहीं हो सकते। अतः शिष्य को सावधानीपूर्वक एक 'उत्तम अधिकारी' को अपना गुरु चुनना चाहिए।

उपदेशामृत श्लोक **5** तात्पर्य

गुरु की विस्तृत परिभाषा नहीं चाहिए...

गुरु क्या है, आपको इसकी विस्तृत परिभाषा नहीं चाहिए। अतः वैदिक ज्ञान आपको संकेत देता है 'तद् विज्ञानार्थम्'। यदि आपको आध्यात्मिक जीवन का विज्ञान सीखना है, 'तद् विज्ञानार्थम् स गुरुम् इव अभिगच्छेत' (मुंडक उपनिषद **1•2•12**), आपको एक गुरु के समीप जाना चाहिए। और गुरु कौन है? गुरु का अर्थ है भगवान का निष्ठावान सेवक। बहुत आसान है।

श्रीमद् भागवतम **6•1•26–27** प्रवचन, फिलाडेल्फिया, जुलाई **12, 1975**

पाठ 7 दीक्षा की प्रतिज्ञाएं

पाठ के विषय

दीक्षा प्रतिज्ञाओं का कठोर पालन
प्रतिज्ञापालन में आनेवाली कठिनाइयां अथवा चुनौतियां
कठिनाइयों के समाधान
संशोधन के चरण

माँसाहार नहीं	←	दया
नशा नहीं	←	तपः
व्यभिचार नहीं	←	शौचम्
जुआ नहीं	←	सत्यम्

श्रीमद् भागवतम **1•17•24**

दीक्षा प्रतिज्ञाओं के दृढ़तापूर्वक पालन का महत्व

मैं आपको सुरक्षित नहीं रख सकता। यह संभव नहीं।

इन चार नियामक सिद्धांतों का पालन कठिन नहीं है। यदि आप गंभीर होना चाहते हैं तो ये चार वस्तुएं वर्जित हैं, अन्यथा स्वाँग करें और अपनी मनमानी करते रहें। मैं आपकी रक्षा नहीं कर पाऊँगा। वह संभव नहीं है। अतः यदि आप गंभीर हैं तो इन चार नियमों का पालन करना ही होगा। उसके उपरांत ही दीक्षा लें। अन्यथा स्वाँग न करें। यही मेरा निवेदन है।

श्रीमद् भागवतम **1•16•35**, हवाई, जनवरी **28, 1974**

अन्यथा वे मेरे शिष्य नहीं

मेरा सुझाव है कि न्यूनतम सोलह माला हरे कृष्ण महामंत्र का जप एवं चार नियामक सिद्धांतों का पालन करें। मेरे सभी शिष्यों को इससे सहमत होना चाहिए अन्यथा वे मेरे शिष्य नहीं हैं। मेरे शिष्यों को सदैव इन सिद्धांतों का पालन करना चाहिए चाहे वे स्वर्ग में हों अथवा नर्क में।

राजलक्ष्मी को लिखे पत्र से। मायापुर, फरवरी **17, 1976**

कठिनाइयों के समाधान

ऐसे कुछ सुझाव लिखें जो दीक्षा प्रतिज्ञाओं के दृढ़तापूर्वक पालन में सहायक हों ः

तपस्या –कृष्णभावना में आपकी तीव्र वेग से प्रगति के लिए

यदि आप गुरु को दिए गए वचन को निभाने में अभी भी असमर्थ हैं, तो अपने आपको भक्त और शिष्य कहलाने का क्या अर्थ है? यह दिखावा है। आपको सोचना चाहिए कि आपने अपने गुरु को वचन दिया है और अब निरपवाद रूप से इसे निभाना है अन्यथा स्वयं को उनका शिष्य कहलाना ठीक नहीं। यह कृष्णभावना में तीव्र वेग से प्रगति के लिए आपकी तपस्या होगी। तपस्या के बिना प्रगति का प्रश्न नहीं उठता। यदि भौतिक संसार आपको इतना आकर्षक लगता है कि इस प्रकार का त्याग नहीं कर सकते तो अच्छा हो कि आप ये सब भक्तिकार्य छोड़कर चले जाएं और जो चाहें करें। परंतु यदि आप स्वयं को भक्त कहलाना और इस क्षमता से कृष्ण की सेवा करना चाहते हैं तो आपको अपरिहार्य रूप से और बिना किसी अपवाद के इन चार मूलभूत निषेधों का पालन करना ही होगा। निश्चय ही एक या दो बार कृष्ण क्षमा कर सकते हैं परंतु बार–बार आपको क्षमा करना उनके लिए भी कठिन होगा और आशंका है कि इतना समय देने और प्रयास करने के बाद भी आप सबकुछ खो बैठें।

संकर्षण के लिखे पत्र स। मुंबई, दिसंबर **31, 1972**

अवज्ञा का अर्थ है आध्यात्मिक गुरु से संबंध तोड़ना

आपने प्रश्न किया है कि क्या आध्यात्मिक गुरु अपने सभी शिष्यों को आध्यात्मिक आकाश में पहुँचा देने तक भौतिक संसार में ही रहते हैं? उत्तर है हाँ, यही नियम है।अतः सभी शिष्यों को सावधान रहना चाहिए कि उनसे ऐसा कोई अपराध न हो जिससे आध्यात्मिक संसार में उनकी वापसी बाधित हो जाए, परिणामतः उनका उद्धार करने के लिए गुरु को पुनः शरीर धारण करना पड़े। इस प्रकार की सोच गुरु के प्रति अपराध है। दस अपराधों में से प्रमुख है गुरु की अवज्ञा करना। दीक्षा के समय गुरु द्वारा दी गई आज्ञा का दृढ़ता से पालन करना चाहिए, इससे व्यक्ति अध्यात्म के मार्ग पर अग्रसर होगा। परंतु यदि कोई इन आज्ञाओं का जानबूझकर उल्लंघन करता है तो उसका आध्यात्मिक विकास आरंभ से ही बाधित हो जाता है। अवज्ञा का तात्पर्य है आध्यात्मिक गुरु से संबंध तोड़ना। यदि कोई ऐसा करता है तो जन्म–जन्मांतरों तक गुरु की सहायता पाने की आशा उसे छोड़ देनी चाहिए। आशा है इस उत्तर से आप संतुष्ट होंगे।

जयपताका प्र को लिखे पत्र से। लॉस एंजलिस, जुलाई **11,1969**

यदि मैं उसपर पानी डालूँ तो प्रज्ज्वलित करने में कठिनाई होगी

हरिनाम का जप निश्चित ही आपकी चेतना को शुद्ध करेगा। जिस प्रकार मैं यह अग्नि प्रज्ज्वलित करना चाहता हूँ, यह सूखी लकड़ी है। यदि मैं इसे सूखा रहने दूँ तो आग अच्छी तरह जलेगी, प्रज्ज्वलित हो उठेगी परंतु मैं इसपर पानी डाल दूँ तो जलना कठिन है। इसीप्रकार कृष्ण भावनामृत की आग आपको सदा प्रगतिशील रखेगी किंतु उसपर स्वेच्छा से पानी न छिड़कें। हरेकृष्ण जप से आप प्रगति करेंगे परंतु स्वेच्छा से कोई अनुचित या निरर्थक कार्य न करें तो बहुत अच्छा होगा। यदि आप पानी डालते रहे– उस व्यक्ति की तरह जो औषधि लेने के साथसाथ कुपथ्य भी करता है, तो उसका रोग जाएगा नहीं या बहुत समय लेगा। चूँकि जीवन बहुत छोटा है, हमें किसी भी उत्तरदायित्व से भागना नहीं चाहिए।

दीक्षा प्रवचन, सॅन फ्रांसिस्को, मार्च **10, 1968**

चैतन्य महाप्रभु एक शर्त पर सभी प्रकार के पापियों को स्वीकार करते हैं

जिस समय श्री चैतन्य महाप्रभु अपने सुदर्शन चक्र का आवाहन कर रहे थे और नित्यानंद प्रभु उनसे जगाई और मधाई को क्षमा करने की विनती कर रहे थे, तभी दोनों भाई महाप्रभु के चरणकमलों में गिरकर अपने दुर्व्यवहार के लिए उनसे क्षमायाचना करने लगे। उनका पश्चात्ताप देखकर नित्यानंद प्रभु ने भी महाप्रभु से उनका उद्धार करने का अनुरोध किया, तब महाप्रभु ने इस शर्त पर उन्हें स्वीकार किया कि अबसे वे समस्त पापकर्मों और विषयोपभोग को त्याग देंगे। दोनों भाइयों ने इसपर सहमति दी तथा समस्त पापकर्मों को छोड़ देने का वचन दिया, तब महाप्रभु ने उन्हें स्वीकारा और फिर कभी उनके कुकर्मों की चर्चा नहीं की। यह चैतन्य महाप्रभु की विशेष दयालुता है। इस संसार में कोई पापमुक्त नहीं है, किसी के लिए भी ऐसा दावा करना असंभव है। किंतु श्री चैतन्य महाप्रभु इस शर्त पर सभी पापियों को स्वीकारते हैं कि प्रामाणिक गुरु से दीक्षा लेने के पश्चात वे पापकर्मों में लिप्त नहीं होंगे...इस कलियुग के लगभग सभी लोगों में जगाई– मधाई जैसे अवगुण हैं। यदि वे अपने पापफलों से मुक्त होना चाहते हैं तो उन्हें श्री चैतन्य महाप्रभु की शरण लेनी चाहिए और आध्यात्मिक दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् उन कर्मों से दूर रहना चाहिए, जिनका शास्त्रों में निषेध किया गया है।

श्रीमद् भागवतम की भूमिका से

शुद्धिकरण विधि पहले से ही भक्त के हृदय में विद्यमान है

वेदों का एक आदेश है कि यदि कोई व्यक्ति अपनी उच्च स्थिति से पतित हो जाता है तो उसे अपनी शुद्धि के लिए विधिवत प्रायश्चित्त करना चाहिए। परंतु भक्त के लिए ऐसा कोई नियम नहीं है क्योंकि पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान के निरन्तर चिंतन के फलस्वरूप उसके हृदय का शुद्धिकरण होता रहता है। अतः 'हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे, हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे' का जप अखंड करना चाहिए।

भगवदगीता **9•31**

तब आप भद्रपुरुष भी नहीं, भक्त होने का तो प्रश्न ही नहीं

हृदयानंद (अनुवाद करते हुए) ः वे जानना चाहते हैं कि क्या गुरु की अवज्ञा सबसे घोर अपराध है?

प्रभुपाद ः हाँ। यह पहला अपराध है। 'गुरोर्–अवज्ञा श्रुतिशास्त्र निन्दनम्'। यदि आप गुरु स्वीकार करें और फिर उसकी अवज्ञा करें तो आपकी क्या स्थिति होगी? आप भद्र पुरुष भी नहीं होंगे। आप गुरु के समक्ष, कृष्ण के समक्ष कहते हैं "मैं आपकी आज्ञा का पालन करूँगा, यह कार्य सम्पादित करूँगा", और फिर नहीं करते, तो आप भक्त तो क्या एक भद्रपुरुष भी नहीं हैं। यह तो सामान्य–सी बात है।

भगवदगीता **2•11** प्रवचन, मेक्सिको, फरवरी **11, 1975**

इकाई तीन

गुरु के साथ संबंध के अंतर्गत गतिविधियां

पाठ 8 गुरु पूजा

श्रील प्रभुपाद की नियमित पूजा
गुरु पूजा का महत्व
इस्कॉन गुरुओं की औपचारिक पूजा
व्यास पूजा

पाठ 9 गुरु सेवा

शिष्य की योग्यताएं
गुरु सेवा और इस्कॉन की सेवा
दायित्वों का संतुलित निर्वाह

पाठ 10 गुरु वपु तथा वाणी सेवा

गुरु की वपु एवं वाणी सेवा की विधियां
गुरु की वपु सेवा का महत्त्व
गुरु की उपस्थिति में उचित व्यवहार
गुरु से जिज्ञासा करना
गुरु की वाणी सेवा का महत्त्व

पाठ 11 आध्यात्मिक गुरु का त्याग

गुरु त्याग का सिद्धांत एवं प्रक्रिया
गुरु के संबंध में आशंकाओं के निराकरण की प्रक्रिया
पुनर्दीक्षा
इस्कॉन के अंतर्गत भक्तिसाधना को निरंतर रखना

पाठ 8 गुरु पूजा

पाठ के विषय

श्रील प्रभुपाद की नियमित पूजा
गुरु पूजा का महत्त्व
इस्कॉन गुरुओं की औपचारिक पूजा
व्यास पूजा

गुरु पूजा का महत्त्व

साक्षात् हरित्वेन समस्त शास्त्रैः
उक्तस्तथा भाव्यत एव सद्भिः

आध्यात्मिक गुरु का भगवान जितना ही आदर किया जाना चाहिए क्योंकि वे भगवान के सबसे विश्वासपात्र सेवक होते हैं।

श्री श्री गुर्वाष्टक श्लोक **7**

आराधनानाम् सर्वेषां विष्णोराराधनंपरम्
तस्मात् परतरं देवी तदीयानाम् समर्चनम्

(शिवजी ने देवी दुर्गा से कहा ः)'प्रिय देवी, वेदों में देवताओं की पूजा का विधान है परंतु विष्णु की आराधना सर्वोच्च है। तथापि विष्णु के भक्तों अर्थात् वैष्णवों की सेवा करना उससे भी श्रेष्ठ है।'

पदमपुराण से, चैतन्य चरितामृत मध्यलीला **11•31**

ये मे भक्त–जनाः पार्थ न मे भक्ताश्च ते जनाः
मद्भक्तानाम् च ये भक्तास्ते मे भक्त–तमा मताः

(भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कहा ः) 'जो मेरे भक्त हैं वे वास्तव में मेरे भक्त नहीं हैं परंतु जो मेरे सेवक के भक्त हैं वे मेरे वास्तविक भक्त हैं।'

आदि पुराण से, चैतन्य चरितामृत मध्यलीला **11•28**

यह आत्मश्लाघा या अतिशयोक्ति नहीं, सच्ची शिक्षा है

जो गुरु–पूजा हम कर रहे हैं, आत्मश्लाघा या अतिशयोक्ति नहीं, सच्ची शिक्षा है। आप प्रतिदिन क्या गाते हैं? 'गुरु मुख पदम वाक्य चित्तेते करिया ऐक्य'। मैं आपसे सच कहूँ, हमें इस कृष्ण भावनामृत आंदोलन में जितनी भी सफलता मिली, वह मेरे गुरु महाराज की आज्ञा पर मेरे विश्वास के कारण। आप यह परम्परा बनाए रखें। तब सारी सफलताएं प्राप्त होंगी।

आगमन संबोधन– न्यूयार्क, जुलाई **9, 1976**

नियमित रूप से गुरुपूजा करने के कुछ लाभ लिखें ः

इस्कॉन गुरुओं की औपचारिक पूजा

प्रणाम मन्त्र

सभी पौत्रशिष्य तथा भावी पीढ़ियों के शिष्यों को चाहिए कि वे प्रणाम करते समय अपने दीक्षागुरु का प्रणाम मंत्र पढ़ने के बाद, संस्थापक आचार्य के सम्मान में, श्रील प्रभुपाद प्रणाम मंत्र का कम से कम पहला भाग अवश्य पढ़ें।

इस्कॉन नियमावली **1•2•1**

आरात्रिक अर्पित करना

मंदिर अथवा मंदिर कार्यक्रमों में आरती करते समय पुजारी अपने दीक्षा गुरु का चित्र वेदी के बदले आरती की थाली या मेज पर रख सकता है, यदि वे गुरु इस्कॉन द्वारा अनुमोदित तथा वर्तमान में सम्मानजनक स्थिति में हैं। दीक्षा गुरु का चित्र वेदी पर रखे प्रभुपाद के चित्र से छोटा हो तथा आरती के पश्चात हटा लिया जाए।

इस्कॉन नियमावली **6•4•8•3** ए

गुरु पूजा (वर्तमान इस्कॉन दीक्षा गुरुओं के लिए)

श्रील प्रभुपाद के अतिरिक्त अन्य इस्कॉन गुरुओं के शिष्य उनकी गुरु-पूजा, मंदिरकक्ष के बाहर सम्पन्न करें। मंदिर प्राधिकारी को चाहिए कि गुरु पूजा सम्पन्न करने के लिए शिष्यों को सुविधाएं प्रदान करे।

इस्कॉन नियमावली **6•4•8•1•1**

वर्जित उपाधियां

किसी भी इस्कॉन सदस्य को सार्वजनिक रूप से 'हिज डिवाइन ग्रेस' 'कृष्णकृपाश्रीमूर्ति' कहकर संबोधित न किया जाए, न ही उसके नाम के अंत में 'पाद' या 'देव' जैसी उपाधियां लगाई जाएं। शिष्य अपने शिक्षा अथवा दीक्षा गुरु को गुरुदेव अथवा गुरु महाराज कह सकते हैं।

इस्कॉन नियमावली **6•4•8**

वैष्णवों का स्वागत

वैष्णवों (जिनमें गुरु भी सम्मिलित हैं)के स्वागत का आयोजन शालीन होना चाहिए, जैसे आसन, प्रसादम, पेय आदि अर्पित करना, माला पहनाना तथा कीर्तन करना।

इस्कॉन नियमावली **6•4•8•2**

व्यास पूजा

व्यासपूजा समारोह में उपस्थित रहने की कुछ अनुभूतियां नीचे लिखिए ः

इस्कॉन के वर्तमान शिक्षा एवं दीक्षा गुरु की व्यास पूजा

श्रील प्रभुपाद पर तथा प्रत्येक भक्त के साथ उनके विशिष्ट संबंध पर प्रमुखता से ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए, अतः इस्कॉन के शिक्षा तथा दीक्षा गुरु वर्ष में एक बार सार्वजनिक रूप से आरती, पादप्रक्षालन आदि सहित अपनी व्यासपूजा इस्कॉन के स्वामित्ववाले स्थलों में स्वीकार कर सकते हैं। यह समारोह मंदिरकक्ष में सम्पन्न किया जा सकता है, समारोह का आयोजन करनेवाले भक्त इसे शालीन बनाए रखें। यह समारोह श्रील प्रभुपाद की व्यासपूजा की तुलना में सादगीपूर्ण होना चाहिए। भक्तों को सामान्यतया ऐसी व्यासपूजा स्थानीय स्तर पर मनानी चाहिए। इस्कॉन में व्यासपूजा पुस्तकें केवल श्रील प्रभुपाद के लिए प्रकाशित की जा सकती हैं।

इस्कॉन नियमावली **6•4•8•1•1**

नोट ः सामान्यतया अपने गुरु की व्यासपूजा के अवसर पर उनके गुरुभाइयों एवं गुरुबहनों से समारोह में भाग लेने, प्रशंसा करने अथवा विज्ञप्ति लिखने का अनुरोध करना वैष्णव सदाचार के विरूद्ध माना जाता है।

गुरु सेवा कमिटी का सुझाव

श्रील प्रभुपाद की व्यासपूजा एवं तिरोभाव तिथि

श्रील प्रभुपाद की व्यासपूजा एवं तिरोभाव तिथि को इस्कॉन के सदस्य अग्रगण्य व्यासपूजा के रूप में मनाएं तथा श्रील प्रभुपाद के लिए वार्षिक विज्ञप्ति भी लिखें।

गुरु के चित्र का आदर करें

'मुझमें और मेरे चित्र में कोई अंतर नहीं है। अतः हमें चित्र को उस भावना से रखना चाहिए। यदि हम चित्रों को यहाँ–वहाँ फेंकें तो यह अपराध है। आध्यात्मिक संसार में नाम और छवि व्यक्ति से अभिन्न होते हैं।'

जदुरानी को लिखे पत्र से, न्यू वृंदावन, सितंबर **4, 1972**

आध्यात्मिक गुरु की आविर्भाव तिथि पर व्यासपूजा की जाती है

ज्ञान का पका हुआ फल गुरु परम्परा द्वारा हाथों हाथ प्राप्त होता है, और श्रील व्यासदेव से चली आ रही गुरुशिष्य परम्परा में जो व्यक्ति कार्य करता है वह व्यासदेव का प्रतिनिधि माना जाता है, अतः प्रामाणिक गुरु की आविर्भाव तिथि पर 'व्यासपूजा' की जाती है। यही नहीं, जिस उच्चासन पर गुरु बैठते हैं वह भी 'व्यासासन' कहलाता है।

बलिमर्दन को लिखे पत्र से, टोक्यो, अगस्त **25, 1970**

वाइसराय एक भी उपहार या रत्न को छू नहीं सकता था...

व्यासपूजा का अर्थ है आध्यात्मिक गुरु जो कि व्यासदेव का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, गुरुपरम्परा से प्राप्त ज्ञान को यथावत प्रदान कर रहे हैं, वर्ष में एक बार उनकी जन्मतिथि पर सम्मानित किए जाएं। यहा व्यासपूजा कहलाती है। गुरु यह सारा सम्मान और योगदान परमेश्वर भगवान की ओर से स्वीकार करते हैं न कि स्वयं के लिए। ब्रिटिश राज में जब वाइसराय या राजा के प्रतिनिधि, किसी कार्यक्रम में जाते थे तो लोग उन्हें आदर सहित बहुमूल्य रत्न आदि उपहार में देते थे। परंतु यह कानून था कि वाइसराय एक भी उपहार या रत्न को छू नहीं सकता था, सबकुछ राजकोष में जमा किया जाता था। राजा के प्रतिनिधि के रूप में वाइसराय कोई भी उपहार ले सकता था पर वह सब राजा की संपत्ति होता था। इसीप्रकार व्यासपूजा के दिवस पर गुरु को जितना भी आदर, भाव और योगदान अर्पित किया जाता है वहसब... जिसप्रकार ज्ञान अवरोही पद्धति से आता है, उसीप्रकार सम्मान आरोही पद्धति से ऊपर की ओर बढ़ता है। चूँकि गुरु अपने शिष्य का शिक्षक है, उसे शिष्य को सिखाना होगा कि उसे मिला सम्मान और उपहार भगवान को कैसे लौटाया जाए। यह व्यासपूजा कहलाती है।

श्री व्यासपूजा, न्यू वृंदावन, सितंबर **2, 1972**

व्यास पूजा का रहस्य

यह है व्यास पूजा का रहस्य। जब हम परम भगवान की दिव्य लीलाओं पर ध्यान करते हैं तो स्वयं को उनके नित्य सेवक के रूप में पाकर हमें गर्व होता है और हम प्रसन्नचित्त होकर नृत्य करते हैं। मेरे गुरु देव की जय हो, जिनकी असीम कृपा से मेरे हृदय में शाश्वत अस्तित्व का ऐसा आंदोलन जाग उठा। हम सब उनके चरणों में वन्दना करें।

श्रील प्रभुपाद। श्रील भक्तिसिद्धांत सरस्वती ठाकुर को व्यासपूजा श्रद्धांजलि, मुंबई, फरवरी **1935**

पाठ 9 गुरु सेवा

पाठ के विषय

गुरु सेवा और इस्कॉन की सेवा
दायित्वों का संतुलित निर्वाह

'सेवया' अर्थात् सेवा से

जिसप्रकार कोई वस्तु खरीदने पर उसका मूल्य चुकाना होता है उसप्रकार आध्यात्मिक गुरु द्वारा दी गई विद्या का आप मूल्य नहीं चुका सकते। यह संभव नहीं है। यह 'सेवया' –सेवा से हो सकता है। आपको अपना जीवन इस सेवा के लिए समर्पित करना होगा। आप अपने गुरु को दे ही क्या सकते हैं?

गुरु सेवा और इस्कॉन आंदोलन की सेवा

नीचे की तालिका में सूची बनाएं ः

गुरु की सेवा किन तरीकों से की जा सकती है?	इस्कॉन आंदोलन की सेवा किन तरीकों से की जा सकती है?

गुरु की सेवा तथा इस्कॉन आंदोलन की सेवा के संतुलित निर्वाह पर टिप्पणी लिखें ः

दायित्वों का संतुलित निर्वाह

गुरु के प्रति दायित्वों के अतिरिक्त आपके जीवन में जो अन्य दायित्व हैं, उनमें से कुछ नीचे लिखें ः

सुझाव दें कि गुरु के प्रति तथा अन्य दायित्वों को संतुलित रूप से निभाने में जो कठिनाइयां आती हैं उन्हें कैसे हल किया जाए।

शिष्य का कर्त्तव्य है आज्ञा पालन... श्री चैतन्य महाप्रभु के संदेश का विश्वव्यापी प्रसार

पृथिवी ते आछे यत नगरादि ग्राम
सर्वत्र प्रचार हइबे मोर नाम

श्री चैतन्य चरितामृत अंत्य खंड **4•126**

श्री चैतन्य महाप्रभु के भक्तों को चाहिए कि संपूर्ण विश्व के नगर और ग्रामों में कृष्ण भावना का प्रचार करें। इससे भगवान संतुष्ट होंगे। ऐसा नहीं कि कोई अपनी व्यक्तिगत तुष्टि के लिए जो मन में आए करे। यह आदेश परम्परा प्रणाली का होता है तथा गुरु अपने शिष्य को आज्ञा देते हैं कि वह श्री चैतन्य महाप्रभु के संदेश का प्रसार करे। यह प्रत्येक शिष्य का धर्म है कि वह प्रामाणिक गुरु की आज्ञा का पालन करे तथा श्री चैतन्य महाप्रभु के संदेश का विश्वव्यापी प्रसार करे।

श्री चैतन्य चरितामृत, तात्पर्य, मध्य लीला **16•65**

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्वदर्शिनः

आध्यात्मिक गुरु का आश्रय लेकर उनसे तत्व जानने का प्रयास करें। उनसे विनम्रतापूर्वक प्रश्न करें तथा उनकी सेवा करें। आत्मसाक्षात्कारी महात्मा आपको ज्ञान दे सकते हैं क्योंकि उन्होंने परमसत्य का दर्शन किया है। ऐसे गुरु के प्रति पूर्णतः शरणागत तथा मिथ्या अहंकार से मुक्त होकर उनकी हरसंभव सेवा करनी चाहिए। आत्मसाक्षात्कारी गुरु की संतुष्टि ही आध्यात्मिक जीवन में प्रगति का रहस्य है।

भगवद्गीता यथारूप **4•34**

शरणागति नहीं तो प्रगति नहीं

हमारे आंदोलन में आध्यात्मिक विकास का आरंभ शरणागति से है। शरणागति नहीं तो प्रगति भी नहीं। 'सर्व धर्मांपरित्यज्य मामेकं शरणं व्रज' (भ•गीता **18•66**)। यह आरंभ है। यदि यह विद्यमान नहीं तो प्रगति आरंभ नहीं होती। इसपर पहले भी चर्चा हो चुकी है। 'न सिद्धिं स अवाप्नोति, न सुखं न परम गतिः'। यह आध्यात्मिक जीवन का प्रारंभ है। शब्द है 'शिष्य'। शिष्य का अर्थ है जो अनुशासन स्वीकार करे। यदि अनुशासन नहीं तो शिष्य कैसे कहलाएगा?

कक्ष वार्तालाप। मेलबर्न। जुलाई **1, 1974**

आज्ञा का पालन दृढ़ता से करना चाहिए

गुरु की आज्ञा का पालन दृढ़ता से करने का सिद्धांत अपनाना चाहिए। गुरु अलग-अलग शिष्यों को भिन्न-भिन्न निर्देश देते हैं। जिसप्रकार श्री चैतन्य महाप्रभु ने रूप गोस्वामी, सनातन गोस्वामी तथा जीव गोस्वामी को प्रचार करने का आदेश दिया जबकि श्री रघुनाथ दास गोस्वामी से संन्यास आश्रम के नियमों का दृढ़तापूर्वक पालन करने के लिए कहा। सभी गोस्वामियों ने महाप्रभु की आज्ञा का कठोरता से पालन किया। भक्ति में प्रगति का यही सिद्धांत है। श्रीगुरु से आज्ञा प्राप्त करने के उपरांत उसका पालन दृढ़ता से करना चाहिए, यह सफलता का मार्ग है।

श्री चैतन्य चरितामृत, अंत्य लीला **6•313**

इसप्रकार भक्ति-लता सूख जाती है

नियामक तत्वों को त्याग देने तथा अपने मनोवेगों के वशीभूत होकर कार्य करने के अपराध को 'मदांध गज' के समान कहा गया है जो भक्ति-लता को जड़ से उखाड़कर उसके टुकड़े-टुकड़े कर देता है। इसप्रकार भक्ति-लता सूख जाती है। ऐसा अपराध विशेषतः तब होता है जब कोई अपने गुरु के आदेश की अवमानना करता है, इसे 'गुरु-अवज्ञा' कहते हैं। अतः भक्त को गुरु के उपदेश की अवज्ञा के अपराध से बचना चाहिए। जैसे ही कोई गुरु के निदेशों से पथभ्रष्ट होता है, उसकी भक्तिलता का उन्मूलन प्रारंभ हो जाता है और क्रमशः सारी पत्तियां सूख जाती हैं।

श्री चैतन्य चरितामृत, तात्पर्य, मध्य लीला **19•156**

आध्यात्मिक गुरु की आज्ञा शिष्य का जीवन-सार है

गुरु से दीक्षा एवं आज्ञा प्राप्त होने के पश्चात शिष्य को चाहिए कि वह अन्य किसी विषयवस्तु से भ्रमित न हो तथा सदैव उसी आज्ञा का विचार करे। श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर भी भ•गीता **2•41** पर टिप्पणी करते हैं कि गुरु की आज्ञा शिष्य का जीवन-सार है। शिष्य को यह चिंता नहीं करनी चाहिए कि वह भगवद्धाम वापस जा रहा है या नहीं, गुरु की आज्ञा का पालन ही उसकी प्राथमिकता होनी चाहिए। शिष्य को सदैव गुर्वाज्ञा पर चिंतन करना चाहिए और यही चिंतन की सिद्धि है। गुरु की आज्ञा पूजनीय होनी चाहिए तथा उसके निष्पादन (वास्तविकता में उतारने) के उपाय भी करने चाहिए।

श्रीमद् भागवतम **4.24.15**

शिष्य, जो अनुशासन से संबंध रखता है

आध्यात्मिक गुरु स्वीकारने का अर्थ है एक महान व्यक्तित्व के दिए निर्देशों और नियमों का पालन करने के लिए स्वेच्छापूर्वक सहमति देना। शिष्य होने का यही अर्थ है –स्वेच्छा से सहमत होना। 'जी गुरुदेव, आप जो भी कहें मुझे स्वीकार है। संस्कृत शब्द शिष्य का अर्थ है –'जो नियमों का पालन करे'। अंग्रेजी में इसे डिसायपल कहते हैं जिसका संबंध डिसिप्लिन से है। शिष्य गुरु के द्वारा अनुशासित या प्रशिक्षित किया जाता है। 'मेरी व्यक्तिगत असुविधा के उपरांत भी मुझे आज्ञा का पालन करना होगा।'

श्रीमद् भागवत **5•5•1**। टिटेनहर्स्ट लंदन में प्रवचन। सितंबर **12, 1969**

एक प्रामाणिक गुरु का आश्रय लें और हृदय से उनकी सेवा करें

आध्यात्मिक उपलब्धि का सरलतम मार्ग यह है कि एक प्रामाणिक गुरु का आश्रय लें और हृदय से उनकी सेवा करें। यही सफलता का रहस्य है। विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर रचित गुरुप्रार्थना का आठवां अंतरा है,'यस्य प्रसादात् भगवत् प्रसादः'– गुरु की सेवा करने और उनकी कृपा पाने से ही भगवान की कृपा प्राप्त होती है। माता देवहूति अपने भगवद्भक्त पति कर्दम मुनि की सेवा कर उनकी आध्यात्मिक उपलब्धियों में सहभागी बनीं। इसीप्रकार प्रामाणिक गुरु की सेवा करने मात्र से एक निष्ठावान शिष्य, भगवान तथा गुरु की समस्त कृपा एकसाथ पा सकता है।

श्रीमद् भागवतम **3•23•7**

गुर्वाज्ञा के अनुसरण के सिद्धांत का दृढ़ता से पालन करें

यदि कोई शिष्य अपने आध्यात्मिक गुरु के ध्येय अथवा आंदोलन के प्रति गंभीर है, उसे वाणी एवं वपु के माध्यम से पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान का सान्निध्य तत्काल प्राप्त होगा। भगवान का दर्शन पाने का यह एकमात्र रहस्य है। वृंदावन के किसी कुंज में भगवान के दर्शन पाने के लिए प्रयत्नशील किंतु स्वयं इंद्रियतृप्ति में डूबे रहने की अपेक्षा यदि शिष्य अपने गुरु की वाणी का दृढ़ता से अनुसरण करे तो बिना किसी कठिनाई के भगवान के दर्शन कर सकता है।

श्रीमद् भागवतम **4•28•51**

आप मेरे आंदोलन में मेरी सहायता कर रहे हैं...यह वास्तविक संग है

आप लिखते हैं कि आप पुनः मेरा संग पाने के इच्छुक हैं, किंतु आप यह क्यों भूल जाते हैं कि आप सदैव मेरे साथ है? जब आप मेरे आंदोलन में सहायता करते हैं तब मैं सदैव आपके विषय में चिंतन करता हूँ और आप मेरे। यही वास्तविक संग है।

गोविंद को लिखे पत्र से –लॉस एंजलिस। अगस्त **17, 1969**

मैं आपके साथ हूँ जिसप्रकार मेरे गुरु महाराज मेरे साथ

गुरु हर उस स्थल पर उपस्थित होते हैं जहाँ उनके शिष्य उनके उपदेशों का अनुपालन कर रहे हैं। यह श्रीकृष्ण की कृपा से ही संभव है। मेरे प्रति आपके सेवाभाव तथा आपकी गंभीर भक्ति भावना में मैं आपके साथ हूँ, जिसप्रकार मेरे गुरु महाराज मेरे साथ। इसे सदा याद रखें।

भक्त डॉन को लिखे पत्र से –लॉस एंजलिस। दिसंबर **1, 1973**

पाठ 10 गुरु वपु एवं वाणी–सेवा

पाठ के विषय

गुरु की वपु एवं वाणी सेवा की विधियां
- गुरु की वपु सेवा का महत्त्व
- गुरु की उपस्थिति में उचित व्यवहार
- गुरु से जिज्ञासा करना
- गुरु की वाणी सेवा का महत्त्व

'साधुसंग' 'साधुसंग' सर्व शास्त्रे कय
लव मात्र साधुसंगे सर्व सिद्धि हय

सभी शास्त्रों का मत है कि शुद्ध भक्त के सान्निध्य में क्षणमात्र रहने से भी मनुष्य को समस्त सिद्धि अथवा सफलता प्राप्त हो सकती है।

श्री चैतन्य चरितामृत, मध्य लीला **22•54**

गुरु की उपस्थिति में उचित व्यवहार

शिष्य के लिए सदाचार नियम (हरिभक्ति विलास से)

- गुरु को देखते ही दण्डवत प्रणाम करना चाहिए।
- गुरु के आते समय उनके सम्मुख रहना तथा जाते समय उनका अनुगमन करना चाहिए।
- बिना अनुमति लिए गुरु के सामने से नहीं हटना चाहिए।
- गुरु का नाम असावधानी से नहीं अपितु आदर से पुकारना चाहिए।
- गुरु की चाल, क्रियाकलाप अथवा वाणी की नकल नहीं उतारनी चाहिए।
- गुरु के निर्देशों का सदैव सम्मान करना चाहिए।
- गुरु द्वारा दंडित किए जाने पर उसे गुरु की कृपा समझनी चाहिए।
- गुरु, शास्त्र एवं भगवान की निंदा कभी न सुने और उस स्थान से तत्काल चला जाए।
- गुरु के हार, बिस्तर, जूतों, आसन, छाया तथा मेज़ को पैरों से नहीं छूना चाहिए।
- गुरु के समक्ष पैर फैलाकर बैठना,जम्हाई लेना,हँसना और अनादरपूर्ण आवाजें निकालना वर्जित है।
- गुरु के समक्ष आसन अथवा बिस्तर पर नहीं बैठना चाहिए।
- गुरु के पहले किसी और का अर्चन नहीं करना चाहिए।
- गुरु के समक्ष दीक्षा देना, शास्त्रार्थ करना तथा अपनी श्रेष्ठता दिखाना वर्जित है।

- शिष्य अपने गुरु को आज्ञा न दे, अपितु सदैव उनकी आज्ञा का पालन करे।
- गुरु के गुरु को उतना ही सम्मान देना चाहिए।
- गुरु की पत्नी, पुत्र एवं संबंधियों को गुरुवत आदर देना चाहिए परंतु उनके पुत्र की स्नान–स्वच्छता, पादप्रक्षालन, उच्छिष्ट सेवन नहीं करना चाहिए।

हरिभक्ति विलास –प्रामाणिक शिष्य की योग्यताएं। पंचरात्र प्रदीप से

गुरु की वपु–सेवा

गुरु की व्यक्तिगत सेवा कर उन्हें शारीरिक सुविधाएं देना

'गुरु–शुश्रूषया' शब्द का अर्थ है व्यक्तिगत रूप से अपने गुरु की सेवा करते हुए उन्हें शारीरिक सुविधाएं देना, उदाहरणार्थ स्नान में सहायता करना, वस्त्र धारण कराना, भोजन तथा शयन कराना आदि। स्वयं को तुच्छ सेवक मानकर गुरु की सेवा करनी चाहिए तथा अपनी समस्त संपत्ति उन्हें समर्पित कर देनी चाहिए।

श्रीमद् भागवतम **7•7•30–31**

वज्र के समान कठोर एवं पुष्प के समान कोमल

आचार्य अथवा वैष्णव सम्प्रदाय के महान व्यक्तित्व अपने सिद्धांतों के विषय में बहुत कठोर होते हैं। परंतु वे वज्र के समान कठोर होते हैं और पुष्प के समान कोमल भी। इसप्रकार वे वास्तव में स्वतंत्र हैं।

श्री चैतन्य चरितामृत, आदि लीला **7•55**

गुरु के समान आदरणीय

श्रेयस्तु गुरुवद–वृत्तिर नित्यं इव समाचरेत
गुरु–पुत्रेषु दारेषु गुरोश्चैव स्व–बंधुषु

गुरु के पुत्र, पत्नी एवं संबंधियों के प्रति शिष्य का व्यवहार उतना ही सम्मानजनक हो जितना गुरु के साथ।

हरिभक्ति विलास –प्रामाणिक शिष्य की योग्यताएं। प्रथम विलास, श्लोक **84** –पंचरात्र प्रदीप से

गुरु के परिजन उन्हें साधारण मनुष्य समझते हैं

यदि कोई व्यक्ति परम भगवान कृष्ण अथवा भगवान रामचंद्र को साधारण मनुष्य समझता है तो इसका अर्थ यह नहीं कि वे साधारण मनुष्य हो गए। इसी प्रकार गुरु अर्थात् पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान के प्रामाणिक प्रतिनिधि को यदि उसके परिजन साधारण मनुष्य मानें तो गुरु साधारण नहीं हो जाते। गुरु का स्थान भगवान के समान है, अतः आध्यात्मिक प्रगति के विषय में गंभीर शिष्य को गुरु का आदर इसी भाव से करना चाहिए। इस धारणा से किंचित–सा विचलन भी शिष्य के वेदाध्ययन और तपस्या का विनाश कर सकता है।

श्रीमद् भागवतम **7•15•27**

गुरु के गुरुबंधुओं का आदर किया जाना चाहिए

श्री अद्वैत प्रभु, नित्यानंद प्रभु तथा श्री ईश्वर पुरी (श्री चैतन्य महाप्रभु के आध्यात्मिक गुरु), श्री माधवेंद्र पुरी के शिष्य थे। अतः महाप्रभु के गुरु के गुरुबंधु के रूप में श्री अद्वैत आचार्य आदरणीय हैं क्योंकि गुरु के गुरुबंधुओं का आदर अपने गुरु के समान किया जाना चाहिए।

श्री चैतन्य चरितामृत, आदि लीला **5•147**

वैष्णव सदाचार का पालन एवं संरक्षण करना भक्त का लक्षण है

प्रिय सनातन, यद्यपि तुम संपूर्ण ब्रह्मांड के उद्धारकर्ता हो तथा देवता–सन्त सभी तुम्हारे स्पर्श से शुद्ध हो जाते हैं, तथापि वैष्णव सदाचार का पालन एवं संरक्षण करना ही एक भक्त का लक्षण है। वैष्णव सदाचार के अनुरूप आचरण ही भक्त का आभूषण होता है। यदि कोई इन शिष्टाचारों का उल्लंघन करता है तो जनसाधारण उसका उपहास करता है तथा इसप्रकार इहलोक तथा परलोक में भी उसका सर्वनाश हो जाता है। सदाचारों का पालन कर तुमने मेरे मन को संतुष्ट किया।

श्री चैतन्य चरितामृत, अंत्य लीला **4•129–133**
श्री चैतन्य महाप्रभु, सनातन गोस्वामी से।

गुरु से जिज्ञासा करना

इसमें चुनौती देने की भावना नहीं होनी चाहिए

भागवत के श्रोता अर्थ की स्पष्टता जानने के लिए वक्ता से प्रश्न कर सकते हैं किंतु इसमें चुनौती देने की भावना नहीं होनी चाहिए। प्रश्न विषय–वस्तु तथा वक्ता के प्रति अत्यंत सम्मान के साथ प्रस्तुत किए जाने चाहिए। भगवद् गीता में भी ऐसा करने की संस्तुति की गई है। आध्यात्मिक विषय सीखने के लिए उचित स्रोतों से विनम्रतापूर्वक श्रवण करना चाहिए। अतः इन साधुओं ने श्रील सूत गोस्वामी को अत्यंत आदरपूर्वक संबोधित किया।

श्रीमद् भागवतम **1•1•5**

केवल वे ही जिज्ञासाएं प्रकट की जानी चाहिए जो आध्यात्मिक विज्ञान से संबंधित हों

प्रामाणिक गुरु से सीखने के लिए व्यक्ति को अत्यंत जिज्ञासु होना चाहिए। केवल वे ही जिज्ञासाएं प्रकट की जानी चाहिए जो आध्यात्मिक विज्ञान से संबंधित हों, 'जिज्ञासुः श्रेय उत्तमम्'। 'उत्तमम्' शब्द ऐसे ज्ञान की ओर संकेत करता है जो भौतिक ज्ञान से परे है।'तम' का अर्थ है 'इस भौतिक संसार का अंधकार' तथा 'उत्' का अर्थ है 'दिव्य'। सामान्यतया लोग सांसारिक विषयवस्तु के प्रति अत्यंत जिज्ञासु होते हैं परंतु जो व्यक्ति ऐसे विषयों में अपनी रुचि खो चुका है और केवल आध्यात्मिक विषय में रुचि रखता है, वह दीक्षा दिए जाने योग्य है।

उपदेशामृत श्लोक **5**

गुरु की वाणी सेवा का महत्त्व

वाणी का अस्तित्व सदैव बना रहता है

विष्णुपाद श्रील भक्तिसिद्धांत सरस्वती ठाकुर भौतिक दृष्टिकोण के अनुसार इस जगत से दिसंबर **1936** के अंतिम दिवस को प्रस्थान कर गए थे। मैं अनुभव करता हूँ कि अपनी वाणी और वचनों के माध्यम से वे आज भी मेरे साथ हैं। संग दो प्रकार से होता है –वपु तथा वाणी। वपु का अर्थ है शारीरिक उपस्थिति। भौतिक उपस्थिति कभी होती है कभी नहीं परंतु वाणी का अस्तित्व सदैव बना रहता है। व्यक्ति को वाणी का लाभ उठाना चाहिए न कि वपु का। उदाहरणार्थ भगवद् गीता भगवान कृष्ण की वाणी है। पाँच हजार वर्ष पूर्व भगवान स्वयं उपस्थित थे परंतु भौतिक दृष्टिकोण से इस समय वैसा नहीं है, तथापि भगवद् गीता अभी भी उपस्थित है।

श्री चैतन्य चरितामृत, अंत्य लीला –समापन

वाणी वपु से अधिक महत्वपूर्ण है

गुरु की शिक्षाओं का पालन करना उनके प्रत्यक्ष अर्चन से अधिक महत्वपूर्ण है, किंतु दोनों में से किसी की भी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। भौतिक स्वरूप **वपु** कहलाता है तथा शिक्षाएं, **वाणी**। दोनों की पूजा होनी चाहिए। वाणी वपु से अधिक महत्वपूर्ण है।

तुष्ट कृष्ण को लिखे पत्र से। अहमदाबाद। दिसंबर **14, 1972**

राजा की गोद में बैठा हुआ खटमल

जहाँ तक व्यक्तिगत संग का प्रश्न है, मैं अपने गुरु महाराज के साथ केवल चार या पाँच बार ही रहा, किंतु मैंने उनका संग कभी नहीं छोड़ा, क्षणभर भी नहीं। चूँकि मैं उनके उपदेशों का पालन कर रहा हूँ, मैंने कभी विछोह का अनुभव नहीं किया।भारत में मेरे कुछ गुरुबंधु हैं जो गुरु महाराज के संग रहे, किंतु अब वे उनकी आज्ञा की उपेक्षा कर रहे हैं। यह तो राजा की गोद में बैठे खटमल के समान है, वह अपनी स्थिति के प्रति कितना ही गर्वित हो परंतु राजा को काटने के अलावा कुछ नहीं कर सकता। वपु के संग से सेवा का संग कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

सत्धन्य को लिखे पत्र से। कलकत्ता। फरवरी **20, 1972**

यदि आप कृपया मेरे आंदोलन की पूर्णता में सहयोग करें...वही हमारा निरंतर संग होगा

जहाँ तक मेरा प्रश्न है मैं अपने गुरु से विछोह का अनुभव नहीं करता क्योंकि मैं उनकी इच्छानुसार उनकी सेवा करने का प्रयास कर रहा हूँ। यह हमारा ध्येयवाक्य होना चाहिए। यदि आप कृपया मेरे आंदोलन की पूर्णता में सहयोग करें, जिसके लिए आपको वहाँ भेजा गया है, वही हमारा निरंतर संग होगा।

हंसदूत को लिखे पत्र से।लॉस एंजलिस। जून **22, 1970**

विछोह की भावनाएं अलौकिक आनंद में बदल जाएंगी

कृपया विछोह में सुखी रहें। मैं अपने गुरु महाराज से सन् **1936** से बिछड़ा हूँ परंतु मैं तबतक उनके साथ हूँ जबतक उनके निर्देशानुसार कार्य कर रहा हूँ। श्रीकृष्ण की संतुष्टि के लिए हम सभी को एकसाथ काम करना चाहिए, ऐसा करने से विछोह की भावनाएं अलौकिक आनंद में बदल जाएंगी।

उद्धव को लिखे पत्र से। बोस्टन। मई **3, 1968**

पाठ 11

आध्यात्मिक गुरु का त्याग

पाठ के विषय

गुरु त्याग का सिद्धांत एवं प्रक्रिया
गुरु के संबंध में आशंकाओं के निराकरण की प्रक्रिया
पुनर्दीक्षा
इस्कॉन के अंतर्गत भक्तिसाधना को निरंतर रखना

गुरु त्याग का सिद्धांत एवं प्रक्रिया

ऐसा शिक्षक त्याज्य है जो जघन्य कार्यों में लिप्त हो

आध्यात्मिक सूत्रों के अनुसार ऐसा शिक्षक जो जघन्य कार्यों में लिप्त हो तथा अपनी सत्–असत् विवेकबुद्धि खो बैठा हो, त्याग देने योग्य है।

भगवद् गीता यथारूप **2•5**

ऐसे गुरु को अस्वीकार करना चाहिए जो स्वयं को पद के अयोग्य सिद्ध करे

वैदिक शास्त्रों के अनुसार ऐसे शिक्षक अथवा गुरु को अस्वीकार कर देना चाहिए जो स्वयं को गुरु–पद की प्रतिष्ठा के अयोग्य सिद्ध करे...

श्रीमद् भागवतम **1•7•43**

गुरोर अप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यम् अजानतः
उपथ–प्रतिपन्नस्य परित्यागो विधीयते

यदि गुरु भगवद्भक्ति छोड़कर किसी नीच पथ पर अग्रसर हो जाता है, इंद्रियतृप्ति में आसक्त हो जाता है, और कर्त्तव्य–निष्ठता खो बैठता है तो उसका परित्याग कर देना चाहिए।

महाभारत, उद्योग पर्व **179•25**

आप भूल से एक धूर्त के पास आ गए... उसका त्याग करें

यदि कोई भूल से एक धूर्त के पास चला जाए, जैसे ही आप को पता चले कि " यह धूर्त है और कृष्ण के विषय में कुछ नहीं जानता, मैं इसके पास चला आया " –उसे त्याग दें। यह शास्त्रों का विधान है। 'गुरोर अपि अवलिप्तस्य...' यदि आप भूल से ऐसे धूर्त के पास पहुँच जाएं जिसे गुरु बनने का ज्ञान ही नहीं है तो आप उसे अस्वीकार कर सकते हैं। उससे जुड़े रहने का क्या औचित्य है? उसका त्याग करें।

कक्ष वार्तालाप, भुवनेश्वर, जनवरी **31, 1977**

ऐसी परिस्थिति में, जब कोई गुरु स्वयं को पद के अयोग्य सिद्ध कर दे, इस्कॉन अपने शिष्यों की रक्षा कैसे करता है? अपनी टिप्पणी नीचे लिखें ः

गुरु के संबंध में आशंकाओं के निराकरण की प्रक्रिया

शिष्य अपने गुरु से संबंधित आशंकाओं के विषय में निम्नलिखित से चर्चा कर सकते हैं ः

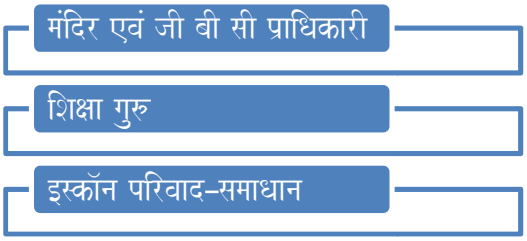

यदि आप अपने गुरु का साथ त्याग दें...यह आपके लिए अच्छा नहीं है

परंतु जब कोई अपने गुरु का त्याग करता है तब उसके पीछे कोई कारण होता है। शास्त्रों में वह कारण दिया गया है, 'गुरोर अपि अवलिप्तस्य कार्याकार्यम् अजानतः'। कार्य अकार्य –यदि गुरु को नहीं पता कि वास्तव में क्या करना उचित है और क्या अनुचित, और वह शास्त्रों के विधिनियमों के विरुद्ध आचरण करता है तो ऐसी स्थिति में गुरु का त्याग किया जा सकता है। परंतु जबतक आपको गुरु का आचरण शास्त्र और गुरु के नियमविरुद्ध न प्रतीत हो, यदि आप अपने गुरु का साथ त्याग दें...यह आपके लिए अच्छा नहीं है। यह आपका पतन है।

श्रीमद् भागवतम **1•16•36** –टोक्यो, जनवरी **30, 1974**

जबतक तुम्हारे मंत्र गुरु उपस्थित हैं, तुम अन्यत्र नहीं जा सकते...

एक दिन श्रील गदाधर पंडित ने महाप्रभु को अपनी पुनर्दीक्षा की इच्छा का कारण बताया। उन्होंने कहा, "जबसे मैंने अपने गुरु के द्वारा दिया गया इष्ट मंत्र एक अपात्र व्यक्ति को बता दिया है, तबसे मेरा मन अशांत है। हे महाप्रभु, आप कृपया मुझे उसी इष्ट मंत्र से पुनः दीक्षित करें ताकि मेरा मन प्रसन्न हो सके।" महाप्रभु ने कहा, "सावधान रहो कि इष्ट मंत्र की दीक्षा देनेवाले गुरु के प्रति कोई अपराध न हो जाए। जबतक तुम्हारे मंत्र गुरु उपस्थित हैं, तुम अन्यत्र नहीं जा सकते, यहाँतक कि मेरे पास भी नहीं आ सकते। इससे हम दोनों का आध्यात्मिक जीवन संकट में पड़ जाएगा।

श्री चैतन्य भागवत, अंत्य खंड अध्याय **10**, श्री पुण्डरीक विद्यानिधि की लीलाएं

बोधः कलुषितस्तेन दुरात्मयं प्रकटी–कृतं
गुरुर्येन परित्यक्तास्तेन त्यक्तः पुरा हरिः

अपने आध्यात्मिक गुरु का त्याग करने पर बुद्धि कलुषित हो जाती है तथा अत्यंत दुर्बल चरित्र के लक्षण प्रकट होते हैं। ऐसा व्यक्ति निश्चित ही भगवान हरि के द्वारा अस्वीकृत किया जा चुका है।

ब्रह्म वैवर्त पुराण

पुनर्दीक्षा

ऐसा भक्त जिसने जी बी सी के गुरु–त्याग विषयक नीतिनिर्देशों के अनुसार तथा वरिष्ठ इस्कॉन भक्तों से परामर्श करने के उपरांत अपने प्रामाणिक गुरु को अस्वीकृत करने का निर्णय ले लिया है, अन्य किसी इस्कॉन अनुमोदित गुरु से दीक्षा हेतु अनुरोध कर सकता है। प्रथम एवं द्वितीय दीक्षा के लिए इस्कॉन नियमावली में वर्णित सामान्य प्रक्रिया अपनाई जाए।

इस्कॉन नियमावली **7•2•6**

एक शिष्य किन उपायों के द्वारा गुरु–त्याग तथा पुनर्दीक्षा के बीच की अवधि में श्रील प्रभुपाद, गुरु परम्परा तथा इस्कॉन से जुड़ा रह सकता है? नीचे लिखें ः

कृपया मेरी शिक्षाओं के माध्यम से मेरा सदैव स्मरण करें, और हम सदा संग रहेंगे

कृपया मेरी शिक्षाओं के माध्यम से मेरा सदैव स्मरण करें, और हम सदा संग रहेंगे। जैसा कि मैंने श्रीमद् भागवतम के प्रथम संस्करण में लिखा है, " गुरु अपने दिव्य उपदेशों के द्वारा चिरकाल जीवित रहते हैं और शिष्य उनके साथ जीते हैं।" मैं अपने गुरु महाराज से अबतक कभी नहीं बिछड़ा, क्योंकि मैंने सदैव उनकी सेवा की तथा उनकी शिक्षाओं का पालन किया।

चिदानंद को लिखे पत्र से –भक्तिवेदांत मॅनर, नवंबर **25, 1973**

इकाई चार

सहयोगपूर्वक संबंध निभाना तथा दृढ़ीकरण

पाठ 12 **अपने गुरु की सार्वजनीन प्रस्तुति**
श्रील प्रभुपाद को प्रस्तुत करना
वर्तमान इस्कॉन गुरुओं को प्रस्तुत करना

पाठ 13 **इस्कॉन के भीतर संबंध**
गुरु के आधार पर भेद–भाव
सहयोगपूर्ण संबंधों का विकास

पाठ 14 **पाठ्यक्रम पुनरावलोकन**

पाठ 12

अपने गुरु की सार्वजनीन प्रस्तुति

पाठ के विषय

श्रील प्रभुपाद को प्रस्तुत करना
वर्तमान इस्कॉन गुरुओं को प्रस्तुत करना

श्रील प्रभुपाद को प्रस्तुत करना

इस्कॉन के संस्थापकाचार्य एवं अग्रगण्य शिक्षा गुरु के रूप में श्रील प्रभुपाद को प्रचारित करना हमारे वर्तमान तथा भविष्य के लिए किसप्रकार लाभप्रद है? कुछ लाभ नीचे लिखें ः

वर्तमान इस्कॉन गुरुओं को प्रस्तुत करना

इस्कॉन गुरुओं को प्रस्तुत किए जाने के कुछ अनुपयुक्त तरीके नीचे दिए गए स्थान में सूचीबद्ध करें।

इस्कॉन गुरुओं को अनुपयुक्त तरीके से प्रस्तुत किए जाने के संभावित परिणाम क्या हो सकते हैं? नीचे लिखें।

नवागत सदस्यों को श्रील प्रभुपाद का आश्रय लेने के लिए निर्देशित करें

इस्कॉन नियमावली **7•2•1** प्रथम (हरिनाम) दीक्षा

उपाधियों का प्रयोग

इस्कॉन के प्रकाशनों जैसे पुस्तकें, पत्रिकाएं, समाचारपत्र, पत्रक, सूचनापत्र, आमंत्रण आदि में श्रील प्रभुपाद का नाम उपाधियों सहित यथा –'कृष्णकृपाश्रीमूर्ति ए•सी•भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद, कृष्ण भावनामृत संघ के संस्थापक आचार्य' स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होना चाहिए।

इस्कॉन नियमावली **2•3•1**

नाम–पट्ट

उन समस्त इस्कॉन मंदिरों एवं भवनों में, जिनमें श्रील प्रभुपाद का नाम पहले से अंकित नहीं है, वहाँ कृष्ण भावनामृत संघ के संस्थापक पद को दर्शाते हुए पूरे नाम सहित उनके नाम–पट्ट लगाए जाएं। यह नियम भक्तिवेदांत बुक ट्रस्ट, भक्तिवेदांत इंस्टीट्यूट तथा श्रील प्रभुपाद द्वारा स्थापित अथवा इस्कॉन से संबद्ध किसी भी अन्य संस्था के मुख्य भवनों पर लागू है।

इस्कॉन नियमावली **2•3•3**

व्यक्ति को अपना गुरु गोपनीय रखना चाहिए

गोपयेद् देवतं इष्टम गोपयेद् गुरुं आत्मनः
गोपयेद् च निजं मन्त्रं गोपयेन्निज मालिकाम्

व्यक्ति को अपने इष्ट देव, अपने गुरु, अपने मन्त्र तथा अपनी जप माला को गोपन रखना चाहिए।

हरिभक्ति विलास, श्लोक **2•147**

गुरु टी–शर्ट, पोस्टर्स, जप थैली आदि का सार्वजनिक प्रदर्शन

शिष्यों को चाहिए कि श्रील प्रभुपाद के अतिरिक्त अपने शिक्षा अथवा दीक्षा गुरु के चित्र वाले टी–शर्ट, कॅप, पोस्टर्स, जप थैली, आदि न पहनें, न ही उनका सार्वजनिक प्रदर्शन करें।

इस्कॉन नियमावली संस्तुति **6•4•8** पूजा एवं सदाचार

इस्कॉन शिक्षा अथवा दीक्षा गुरु के छायाचित्र

इस्कॉन मंदिर के निवासी भक्त अपने शिक्षा अथवा दीक्षा गुरु के छायाचित्र अपने निजी आश्रमआवास में रख सकते हैं किंतु मंदिर परिसर में उनका सार्वजनिक प्रदर्शन न करें। यदा–कदा विशेष प्रचार कार्यक्रमों को अपवाद माना जाए।

इस्कॉन नियमावली संस्तुति **6•4•8** पूजा एवं सदाचार

वेब साइट्स श्रील प्रभुपाद की छवि को प्रमुखता से दिखाएं

इस्कॉन केंद्रों के पदाधिकारियों का दायित्व है कि उनके केंद्र से प्रकाशित समस्त वेब साइट्स के परिचय–पृष्ठ पर श्रील प्रभुपाद की छवि को प्रमुखता से दिखाएं। यह छायाचित्र अन्य किसी व्यक्ति जैसे जीबीसी, केंद्र अध्यक्ष अथवा गुरु के चित्र से बड़ा होना चाहिए। श्रील प्रभुपाद को उनके औपचारिक नाम तथा उपाधियों के साथ –'कृष्णकृपाश्रीमूर्ति ए•सी•भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद, कृष्ण भावनामृत संघ के संस्थापक आचार्य' संबोधित किया जाए।

304, श्रील प्रभुपाद के पद विषयक जीबीसी का वक्तव्य (मार्च **2013**)

पाठ 13 **इस्कॉन के भीतर संबंध**

पाठ के विषय

गुरु के आधार पर भेद-भाव
सहयोगपूर्ण संबंधों का विकास

गुरु के आधार पर भेद-भाव

भेद-भाव

'वस्तुओं में अंतर या भेद करना, देखना या समझना।'

ऑक्सफोर्ड इंग्लिश शब्दकोश 2रा संस्करण ऑक्सफोर्ड वि वि प्रेस

'भेद-भाव ऐसा पक्षपातपूर्ण व्यवहार है जो सामान्यतया एक समूह अथवा वर्ग की सदस्यता से प्रेरित होता है...इसमें एक वर्ग के व्यक्तियों को उन अवसरों से वंचित कर दिया जाता है जो अन्य वर्गों को उपलब्ध होते हैं।'

समाजशास्त्र की भूमिका। 7वां संस्करण। न्यूयॉर्क। डब्ल्यू डब्ल्यू नॉर्टन एंड कं। 2009 पृ 324

क्या इस्कॉन में आपके साथ कभी दीक्षा अथवा शिक्षा गुरु के आधार पर अनुचित भेद-भाव हुआ? कृपया उसका विवरण दें।

गुरु के आधार पर किए जानेवाले अनुचित भेद-भाव के कारण इस्कॉन में कौनसे दीर्घकालीन परिणाम संभावित हैं? नीचे लिखें ः

सहयोगपूर्ण संबंधों का विकास

आपकी दृष्टि में इस्कॉन का सर्वांगीण चित्र कैसा होगा, यदि भक्त सभी इस्कॉन गुरु एवं शिष्यों के बीच सहायोगपूर्ण तथा सकारात्मक संबंध बनाए रखें।

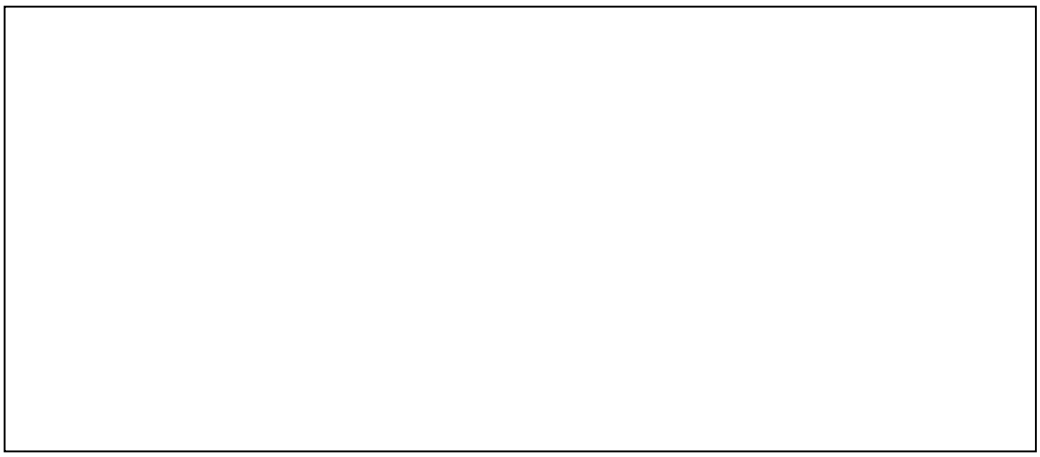

मैं तुम्हारी परस्पर मित्रता से इतना प्रसन्न हूँ कि तुम्हें सौभाग्य का आशीष देता हूँ

श्री भगवान ने कहा ः प्रिय राजपुत्रों, मैं तुम्हारे मैत्रीपूर्ण संबंधों से अत्यंत प्रसन्न हूँ। तुम सब एक ही कार्य में संलग्न हो –भक्तिमय सेवा। मैं तुम्हारी परस्पर मित्रता से इतना प्रसन्न हूँ कि तुम्हें सौभाग्य का आशीष देता हूँ। तुम मुझसे कोई भी वरदान माँग लो।

श्रीमद् भागवतम **4•30•8**। भगवान ने राजा प्राचीनबर्हिशत के पुत्रों से कहा

मेरे जाने के पश्चात् इस संस्था को संगठित रखने में सहयोग करें

''आपका मेरे प्रति प्रेम'', श्रील प्रभुपाद ने कहते हैं, ''इस बात से प्रकट होगा कि मेरे जाने के पश्चात् इस संस्था को संगठित रखने में आप कितना सहयोग करते हैं।''

श्रील प्रभुपाद लीलामृत , खंड **6, 52** 'मैंने अपना कार्य कर दिया'

संगठन में शक्ति है और विभाजन में पतन

स्वयं चैतन्य महाप्रभु हमसे सहयोग चाहते थे। वे परमेश्वर हैं, कृष्ण। अतः सहयोग बहुत महत्वपूर्ण है। किसी को यह नहीं सोचना चाहिए कि ''मैं कितना सक्षम हूँ, अकेला ही पर्याप्त हूँ।'' नहीं। हम केवल सहयोग के बल पर ही कोई भव्य काम कर सकते हैं। 'संगठन में शक्ति है और विभाजन में पतन'। कृष्ण भावना के प्रचार में दृढ़ता से जुट जाएं, और कृष्ण सहायता करेंगे। वे सर्वशक्तिमान हैं। हमें भी संगठित रहना चाहिए।

राधा–दामोदर कीर्तन पार्टी के साथ कक्ष वार्तालाप। मायापुर। मार्च **16, 1976**

आपने इस पाठ्यक्रम से क्या सीखा?

परिशिष्ट

1। अतिरिक्त उद्धरण
2। श्रील प्रभुपाद के पद विषयक जीबीसी का वक्तव्य
3। इस्कॉन में दीक्षागुरु की अनिवार्य योग्यताएं
4। इस्कॉन गुरुओं के आचरण मानक
5। इस्कॉन में दीक्षा हेतु योग्यताएं
6। पतित गुरु का त्याग
7। इस्कॉन की प्राधिकार श्रेणियों में समन्वय (जीबीसी का औपचारिक नीति पत्र)
8। इस्कॉन शिष्य पाठ्यक्रम पर जीबीसी का संकल्प
9। कक्षा में व्यवहार के मानदण्ड **एवं** पठनीय संदर्भ ग्रंथ सूची
10। पाठ्यक्रम की रूपरेखा

परिशिष्ट 1 अतिरिक्त उद्धरण

पाठ 1 स्वागत एवं प्रस्तावना

हमें केवल अपने गुरु की आज्ञा का पालन करना है

हमें केवल अपने गुरु की आज्ञा का पालन करना है, कृष्णभावनामृत का प्रचार करना है तथा वैष्णवों (महाजनों) के पथ का अनुसरण करना है। गुरु, भगवान कृष्ण एवं वैष्णवों के प्रतिनिधि होते हैं अतः गुरु की आज्ञा का पालन करने तथा हरे कृष्ण का जप करने से सबकुछ शुभ होगा।

तात्पर्य, श्रीमद् भागवतम **4•23•7**

यह प्रशिक्षण महाविद्यालय आवश्यक है

मेरे पास जैसे ही कोई शिष्य बनने के लिए आता है, मैं उससे कह देता हूँ कि " ये सब आदतें तुम्हें छोड़नी ही होंगी।" मैं उसे तभी स्वीकारता हूँ जब वह सहमत हो जाए। इसीलिए मेरे पास कुछ चुनिंदा प्रशिक्षित शिष्य हैं। यह प्रशिक्षण महाविद्यालय, संस्थान आवश्यक है जहाँ शास्त्रों पर आधारित उचित प्रशिक्षण दिया जाए। परिस्थिति बदलने की संभावना तभी बनेगी।

राज्यपाल से वार्तालाप, वृंदावन, अप्रैल **20, 1975**

पाठ 5 गुरु पादाश्रय

यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ
तस्यैते कथिताह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः

'ऐसे महात्माओं पर वैदिक ज्ञान का आशय स्वतः प्रकाशित हो जाता है, जिनकी श्री भगवान तथा आध्यात्मिक गुरु में गहन निष्ठा है।'

श्वेताश्वतर उपनिषद **6•23**

गुरु के चरणों में सर्वस्व समर्पित कर दें

शिष्य को एक तुच्छ सेवक की भाँति अपने गुरु की सेवा करनी चाहिए तथा अपना सर्वस्व गुरु को समर्पित कर देना चाहिए। 'प्राणैः अर्थैः धिया वाचा'। शिष्य को चाहिए कि अपना जीवन, संपत्ति, बुद्धि तथा वाणी अपने गुरु के माध्यम से परमेश्वर भगवान को समर्पित करे। गुरु के प्रति समर्पण शिष्य का कर्त्तव्य है परंतु यह हृदय एवं अंतरात्मा से किया जाना चाहिए, भौतिक प्रतिष्ठा पाने के लिए ऐसा कृत्रिम प्रयास न करें।

श्रीमद् भागवतम **7•7•30–31**

एक प्रामाणिक गुरु का आश्रय लें और हृदय से उनकी सेवा करें

आध्यात्मिक उपलब्धि का सरलतम मार्ग यह है कि एक प्रामाणिक गुरु का आश्रय लें और हृदय से उनकी सेवा करें। यही सफलता का रहस्य है। विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर रचित गुरुप्रार्थना का आठवाँ अंतरा है,**'यस्य प्रसादात् भगवत् प्रसादः'**– गुरु की सेवा करने और उनकी कृपा पाने से ही भगवान की कृपा प्राप्त होती है। माता देवहूति अपने भगवद्भक्त पति कर्दम मुनि की सेवा कर उनकी आध्यात्मिक उपलब्धियों में सहभागी बनीं। इसीप्रकार प्रामाणिक गुरु की सेवा करने मात्र से एक निष्ठावान शिष्य, भगवान तथा गुरु की समस्त कृपा एकसाथ पा सकता है।

श्रीमद् भागवतम **3•23•7**

पाठ 7 दीक्षा की प्रतिज्ञाएं

गुरु के प्रति प्रेम तथा गुर्वाज्ञा का पालन

आपको यह समझना चाहिए कि दीक्षा के समय यज्ञ के लिए बैठकर आपने गुरु के समक्ष प्रतिज्ञा की थी। तो आपको प्रतिज्ञा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। आप कहेंगे कि आप भक्तों के संग में प्रसन्न हैं किंतु आप भौतिक आकर्षण का सामना कैसे करेंगे, यदि आप भगवान के नाम का नियमित एवं अपराधरहित जप नहीं करते? आध्यात्मिक गुरु के प्रति प्रेम तथा गुर्वाज्ञा का पालन दोनों अभिन्न हैं। मैं निर्देश देता हूँ कि मेरे सभी शिष्य प्रतिदिन मंगल आरती में उपस्थित हों तथा सोलह माला जप करें।

जीवन बहुत क्षणभंगुर है। मृत्यु किसी भी क्षण आ सकती है। अतः हमें अपने वरिष्ठ अधिकारियों, गुरु तथा भगवान कृष्ण की भगवद् गीता के उपदेशों का दृढ़ता से पालन करना चाहिए।

राधा कान्त को लिखे पत्र से, वृंदावन, अगस्त **20, 1974**

यह रस्साकशी है

यह रस्साकशी है। अतः माया से न डरें। नामजप में वृद्धि करें और आप जीत जाएंगे। बस। 'नारायण–पराः सर्वे न कुतश्चन बिभ्यति' (श्रीमद् भागवतम **6•17•28**) हम माया से नहीं डरते क्योंकि कृष्ण हमारे रक्षक हैं। कृष्ण कहते हैं, 'कौंतेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति' (भगवद् गीता **9•31**) घोषित कर दो कि "मेरे भक्त का माया से कभी विनाश नहीं होगा।" माया कुछ नहीं कर सकती। केवल हमें प्रबल बनना है। और बल क्या है? 'हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे' का ऊँचे स्वर में जप करो।

भगवद् गीता **3•6–10**, लॉस एंजलिस, दिसंबर **23, 1968**

पाठ 12 अपने गुरु को प्रस्तुत करना

हम अपने शिष्यों से नहीं कहते कि वे मेरा नाम जपें

हम अपने शिष्यों से नहीं कहते कि वे मेरा नाम जपें, 'भक्तिवेदांत स्वामी भक्तिवेदांत स्वामी'। नहीं। वे 'हरे कृष्ण' जप रहे हैं। 'हरित्वेन समस्त शास्त्रैर्उक्तः' 'गुरु कृष्ण के समान सम्माननीय हैं' परंतु इसका अर्थ यह नहीं कि मैं उन्हें अपना नाम जपने को लिए कहूँ,'भक्तिवेदांत स्वामी भक्तिवेदांत स्वामी'। क्या है यह? हम सिखा रहे हैं, 'हरे कृष्ण जपिए'। हरेर नाम हरेर नाम हरेर नामैव केवलम्...

श्रील प्रभुपाद की प्रातःकालीन सैर, मुंबई, मार्च **29, 1974**

स्वयं को महाप्रभु का भक्त विज्ञापित करना...

'मैं गौरांग का, मैं गौरांग का' कहकर स्वयं को महाप्रभु का भक्त विज्ञापित करना ही पर्याप्त नहीं है। वास्तव में वे ही लोग महाप्रभु के अनुयायी सिद्ध होंगे जो उनके द्वारा सिखाई गई साधना के मार्ग पर चल रहे हैं।

श्रील जगदानंद पंडित, प्रेम विवर्त **8•6**

पाठ 14 पाठ्यक्रम पुनरावलोकन

यदि दोनों पक्षों से व्यवहार उत्तम हो... तो कृष्ण भावनामृत अत्यंत सरल है

'समझने' को लेकर व्यक्ति को गंभीर होना चाहिए तथा सुयोग्य महात्मा गुरु के पास जाना चाहिए। तब उसका कार्य, यह परस्पर लेन–देन अच्छी तरह संपन्न होगा। यह वैदिक विधि है...यदि शिष्य एवं गुरु, दोनों की ओर से व्यवहार उत्तम हो तो कृष्ण भावनामृत अत्यंत सरल है।

श्रीमद् भागवतम **1•5•29**, वृंदावन, अगस्त **10, 1974**

303, श्रील प्रभुपाद के पद विषयक जीबीसी का वक्तव्य (मार्च 2013)

हमारी संस्था में 'दीक्षा तथा शिक्षा गुरुओं एवं समस्त इस्कॉन सदस्यों के संबंध में श्रील प्रभुपाद का अग्रगण्य पद' तथा 'इस्कॉन सोसायटी में दीक्षा एवं दीक्षा गुरुओं के पद व कार्य', इन बिंदुओं पर स्पष्टता प्रदान करने हेतु एक संक्षिप्त वक्तव्य की आवश्यकता है।

संकल्पित ः जीबीसी निम्न लिखित वक्तव्यों की पुष्टि करती है कि ः

अंतर्राष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ के संस्थापक आचार्य, अग्रगण्य शिक्षा गुरु एवं हमारी संस्था में सर्वोच्च प्राधिकारी होने के कारण श्रील प्रभुपाद का प्रत्येक इस्कॉन भक्त के साथ अद्वितीय संबंध है। पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान कृष्ण मूल गुरु हैं जिनकी कृपा गुरुशिष्य परम्परा के माध्यम से हमतक अवतरित होती है। अंततः श्रीकृष्ण की कृपा से ही भक्त का उद्धार होता है जो उसे विभिन्न माध्यमों अथवा उनके संयोजनों से प्राप्त होती है। इनमें चैत्य गुरु, श्रील प्रभुपाद, गुरु परम्परा, एक दीक्षा गुरु, अन्य शिक्षा गुरु, हरिनाम, शास्त्र, भक्ति के नौ अंग आदि का समावेश है तथापि भगवान की कृपा इन तक ही सीमित नहीं होती।

इन परस्पर सहयोगी तत्वों में से अंतर्राष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ के संस्थापक आचार्य के रूप में श्रील प्रभुपाद, इस्कॉन के समस्त सदस्यों के अग्रगण्य शिक्षागुरु हैं। इस्कॉन की सभी पीढ़ियों के सभी सदस्यों को प्रभुपाद का आश्रय लेने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है। इस्कॉन के सभी सदस्यों को यह अधिकार एवं प्रोत्साहन दिया जाता है कि वे प्रभुपाद रचित पुस्तकों, शिक्षाओं, सेवाओं और इस्कॉन संघ के माध्यम से प्रभुपाद के साथ अपना व्यक्तिगत संबंध निर्मित करें।

इस्कॉन में नेतृत्व की भूमिका स्वीकार करनेवाले सभी सदस्यों, जिनमें दीक्षा एवं शिक्षा गुरु भी सम्मिलित हैं, का कर्त्तव्य है कि वे श्रील प्रभुपाद द्वारा उनकी पुस्तकों, प्रवचनों, तथा व्यक्तिगत संप्रेषणों में दिए गए निर्देशों का पालन करने हेतु इस्कॉन के गवर्निंग बॉडी कमीशन (जीबीसी) के अधीन सहयोगपूर्ण तरीके से सेवा करें। व्यापक रूप से कहा जाए तो सभी शिक्षा गुरु, दीक्षा गुरु तथा नेतृत्व के पद पर आसीन सदस्यों की प्राथमिकता, श्रील प्रभुपाद की, उनके गुरु महाराज श्रील भक्तिसिद्धांत सरस्वती ठाकुर तथा हमारे ब्रह्म मध्व गौडीय सम्प्रदाय के प्रति सेवा में सहायता करना ही होनी चाहिए। जो शिक्षा अथवा दीक्षा गुरु के रूप में सेवाएं दे रहे हैं उनमें अपने वचनों और आचरण द्वारा श्रील प्रभुपाद की शिक्षाओं का उत्कृष्ट प्रतिनिधित्व कर सकने की योग्यता होनी चाहिए। शिक्षा गुरु परम्परा तथा श्रील प्रभुपाद का प्रतिनिधित्व करते हुए आध्यात्मिक निदेश एवं प्रेरणा प्रदान करते हैं। दीक्षा गुरु आध्यात्मिक उपदेश, प्रेरणा, प्रथम दीक्षा तथा आध्यात्मिक नाम प्रदान करते हैं तथा इसके उपरांत श्रील प्रभुपाद एवं हमारी गुरु परंपरा के सेवार्थ, सुयोग्य शिष्य को पवित्र गायत्री मंत्र प्रदान करते हैं।

श्रील प्रभुपाद ने यह बात स्पष्ट रूप से समझाई है कि कृष्ण भावना के सिद्धांतों का दृढ़ता से पालन करनेवाले भक्तों का सेवाकार्य मुक्त–जीव के स्तर पर होता है, अतः वे शुद्ध भक्त हैं, चाहे यथार्थ में अबतक मुक्त न भी हों। (ऐसी शुद्ध भक्ति किसी की भूमिका अथवा सेवा के पद से नहीं अपितु उसके साक्षात्कार से निश्चित की जाती है)।

जो इस्कॉन में दीक्षा अथवा शिक्षा गुरु के रूप में सेवाएं दे रहे हैं उनके लिए श्रील प्रभुपाद के उपदेशों का कठोरता से अनुसरण करना अनिवार्य है, और जब तक वे अनुसरण कर रहे हैं, वे मुक्ति के स्तर से कार्य कर रहे हैं। इस प्रकार वे श्रील प्रभुपाद के आदेशानुसार भगवान तथा गुरु परम्परा के प्रामाणिक प्रतिनिधि तथा उनकी कृपा के माध्यम के रूप में सेवा कर सकते हैं। तथापि यह स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि यदि ऐसे दीक्षा अथवा शिक्षा गुरु, दृढ़ अनुसरण के मार्ग से पथभ्रष्ट होते हैं तो उनका अपने पद से पतन हो सकता है। इसप्रकार, इस्कॉन में दीक्षा गुरु होने का अर्थ है, श्रील प्रभुपाद के दिशानिर्देशों के अनुरूप जीबीसी के अधीन एक 'नियमित गुरु' के रूप में, अन्य प्राधिकारियों के साथ सहयोग करते हुए सेवा करना।

यह वक्तव्य इन सिद्धांतों की चर्चा का अंतिम निष्कर्ष नहीं है। भविष्य में जीबीसी हमारे संस्थापक आचार्य श्रील प्रभुपाद के अग्रगण्य पद, इस्कॉन गुरुओं की भूमिका व उत्तरदायित्व, तथा इस्कॉन सदस्यों एवं दीक्षितों के तत्संबंधी कर्त्तव्यों पर अधिक स्पष्टीकरण के लिए अतिरिक्त प्राधिकृत वक्तव्य एवं पत्र जारी कर सकती है।

संकल्पित ः

सभी जी बी सी सदस्य इस्कॉन के समस्त सदस्यों के ज्ञानार्थ यह संकल्प उपयुक्त संवाद–माध्यमों से सभी इस्कॉन मंदिरों, भक्तसमूहों तथा गृहस्थ समुदायों को वितरित करेंगे। इस वक्तव्य का अध्ययन सभी इस्कॉन पाठ्यक्रमों यथा प्रारंभिक पाठ्यक्रमों, इस्कॉन शिष्य पाठ्यक्रम, आध्यात्मिक नेतृत्व संगोष्ठी (सेमिनार)ः इस्कॉन में गुरु पद, आदि तथा अन्य संबंधित स्थानों पर किया जाएगा। दीक्षा से पूर्व इस वक्तव्य को पढ़ना तथा उसे पढ़े जाने की पुष्टि करना सभी दीक्षार्थियों की परीक्षा का भाग होगा।

'आध्यात्मिक संबंध एवं कर्त्तव्य' विषय पर अधिक विवरण जीबीसी द्वारा **2012** में अनुमोदित 'इस्कॉन की प्राधिकार श्रेणियों में समन्वय' शीर्षक के औपचारिक पत्र में पाया जा सकता है।

304, इस्कॉन मंदिर वेब साइट्स पर संस्थापक आचार्य को सर्वोच्चता (मार्च 2013)

इस्कॉन मंदिरों की अनेक वेब साइट्स वर्तमान समय में अपने परिचय पृष्ठ (होम पेज) पर कृष्ण भावनामृत के संस्थापक आचार्य कृष्णकृपाश्रीमूर्ति ए•सी• भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद के व्यक्तित्व एवं शिक्षाओं को प्रमुखता से प्रदर्शित नहीं कर रही हैं। कई में तो प्रभुपाद का चित्र भी नहीं है। कुछ ही साइट्स में श्रील प्रभुपाद की पुस्तकों, चलचित्र एवं श्रव्य सामग्री के लिंक दिए गए हैं। अनेक मंदिरों की वेब साइट्स पर इस्कॉन संस्थापक आचार्य के रूप में श्रील प्रभुपाद के अग्रगण्य पद को पर्याप्त महत्व नहीं दिया जा रहा है। कुछेक साइट्स में केवल प्रारंभिक पृष्ठों पर 'इस्कॉन' अथवा 'प्रभुपाद' बहुत बारीक और फीके अक्षरों में आता है, साथ ही, वर्तमान में ऐसी कोई सूचना उपलब्ध नहीं है कि इस्कॉन केंद्रों की वेब साइट्स पर श्रील प्रभुपाद का नाम तथा औपचारिक उपाधि किस रूप में प्रदर्शित किए जाएं।

संकल्पित ः

इस्कॉन केंद्रों के पदाधिकारियों का उत्तरदायित्व होगा कि उनके केंद्र से प्रकाशित समस्त वेब साइट्स के परिचय–पृष्ठ पर श्रील प्रभुपाद की छवि को प्रमुखता से दिखाना सुनिश्चित करें। यह छायाचित्र अन्य किसी व्यक्ति जैसे जीबीसी, केंद्र अध्यक्ष अथवा गुरु के चित्र से बड़ा होना चाहिए। श्रील प्रभुपाद को उनके औपचारिक नाम तथा उपाधियों के साथ –'कृष्णकृपाश्रीमूर्ति ए•सी•भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद, कृष्ण भावनामृत संघ के संस्थापक आचार्य' अथवा 'इस्कॉन संस्थापक आचार्य कृष्णकृपाश्रीमूर्ति ए•सी•भक्तिवेदान्त

स्वामी प्रभुपाद,' अथवा किसी तुल्य अनुवाद से संबोधित किया जाए। ऐसी समस्त वेब साइट्स अपने परिचय पृष्ठ पर सीधी लिंक्स प्रदर्शित करेंगी जो श्रील प्रभुपाद को प्रमुखता दें तथा जिनसे सामान्य दर्शक को श्रील प्रभुपाद की शिक्षाएं तथा चलचित्र सरलता से उपलब्ध हो सकें। होम पेज पर औपचारिक नाम व उपाधि सहित श्रील प्रभुपाद का चित्र हो, जिसमें किसी अन्य व्यक्ति की छवि सम्मिलित न हो। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो चित्र में केवल प्रभुपाद ही दिखाई पड़ें। प्रभुपाद का नाम व उपाधि सुपाठ्य अक्षरों में लिखे जाएं। सभी इस्कॉन केंद्रों की वेब साइट्स को प्रस्ताव पारित होने के **90** दिनों के भीतर यह मानदंड लागू करना होगा।

305, 'इस्कॉन की प्राधिकार श्रेणियों में समन्वय' अवलोकन योग्य पत्र(इस्कॉन नियमावली)

यह कि इस्कॉन के विभिन्न प्राधिकारियों के बीच समन्वय की आवश्यकता है,

यह कि भक्तों के जीवन में दीक्षा गुरु महत्वपूर्ण आध्यात्मिक प्राधिकारी हैं, साथ ही अन्य इस्कॉन प्राधिकारियों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है।

यह कि जीबीसी का 'इस्कॉन की प्राधिकार श्रेणियों में समन्वय' शीर्षक पत्र व्याख्या करता है कि किस प्रकार गुरु तथा अन्य इस्कॉन प्राधिकारियों की सेवा के मध्य समन्वय स्थापित किया जाए।

संकल्पित ः कि

जीबीसी का 'इस्कॉन की प्राधिकार श्रेणियों में समन्वय' शीर्षक औपचारिक पत्र को दीक्षा से पूर्व पढ़ना सभी हरिनाम दीक्षार्थियों के लिए आवश्यक रहेगा। हरिनाम दीक्षा के लिए अनुशंसा करनेवाला इस्कॉन प्राधिकारी तथा दीक्षा देनेवाले गुरु, दोनों को इस बात का सत्यापन करना होगा। समस्त जीबीसी आंचलिक सचिव (झोनल सेक्रेटरी) तीन महीनों की अवधि में ः

- पत्र का अनुवाद उनके अंचल के भक्तों की सुविधा हेतु उपयुक्त भाषा में कराएं।
- पत्र की प्रति समस्त अनुमोदित दीक्षा गुरु, नॅशनल काउंसिल तथा क्षेत्रीय निकायों, मंदिर अध्यक्षों, भक्तसमुदाय के प्रमुख सदस्यों तथा अंचल के अन्य अधिकारियों को वितरित करें।

306 दीक्षा हेतु आवश्यक परीक्षा संबंधी संशोधन (इस्कॉन नियमावली)

यह कि 'श्रील प्रभुपाद के पद विषयक जीबीसी का वक्तव्य' तथा 'इस्कॉन की प्राधिकार श्रेणियों में समन्वय' शीर्षक पत्र जीबीसी द्वारा अनुमोदित हैं तथा सभी हरिनाम दीक्षार्थियों के लिए न केवल इन्हें पढ़ना वरन् समझना भी आवश्यक है।

यह कि इस्कॉन नियमावली **7•2•1•1•6** के अनुसार समस्त दीक्षार्थी भक्तों के लिए यह परीक्षा अनिवार्य रखी गई है। परीक्षा के माध्यम से अच्छी तरह जाँचा जा सकेगा कि इन पत्रों की महत्वपूर्ण धारणाओं को दीक्षाार्थी किस स्तर तक समझ सके हैं।

संकल्पित ः

(अ) इस्कॉन नियमावली **7•2•1•1•6** के अनुसार आयोजित परीक्षा में दीक्षार्थियों से निम्न तीन प्रश्न भी पूछे जाएंगे ः

14 क्या आपने 'श्रील प्रभुपाद के पद विषयक जीबीसी का वक्तव्य' पढ़ा?

15 क्या आपने 'इस्कॉन की प्राधिकार श्रेणियों में समन्वय' पत्र पढ़ा?

16 क्या आपने 'इस्कॉन की प्राधिकार श्रेणियों में समन्वय' पत्र के मुख्य बिन्दु समझ लिए?

तथा (ब) गुरु सेवा कमिटी दीक्षापूर्व ली जानेवाली परीक्षा को, जीबीसी सदस्यों तथा गुरुओं के उपयोगार्थ तदनुसार अद्यतन करेगी।

परिशिष्ट 3 दीक्षा गुरु की अनिवार्य योग्यताएं

इस्कॉन नियमावली **6•2•1** जी बी सी **2010** संकल्प

1। न्यूनतम दस वर्षों तक दीक्षित शिष्य रहे हों।

2। चार नियामक तत्त्वों का कड़ाई से पालन करते हों, प्रतिदिन प्रातःकालीन कार्यक्रम में उपस्थित रहते हों तथा सोलह माला जप करते हों तथा विगत दस वर्षों से अच्छी प्रतिष्ठा कायम हो।

3। चरित्र में वैष्णव नैतिक सिद्धांतों के विरुद्ध कार्य करने की प्रवृत्ति प्रदर्शित न हो।

4। प्रचार कार्य में दक्ष हों।

5। विद्वान तथा शास्त्रज्ञान में पारंगत हों।

6। परंपरा का अनुसरण करते हुए बिना कुछ जोड़े-घटाए, सिद्धांतनिष्ठित शास्त्रज्ञान का प्रचार करें।

7। प्रभावी प्रचारक तथा परामर्शदाता (समुपदेशक) हों।

8। श्रील प्रभुपाद, उनकी शिक्षा एवं इस्कॉन के प्रति निष्ठा में बाधक बननेवाली अन्य कोई निष्ठा न रखते हों।

9। पुस्तक वितरण तथा इस्कॉन की अन्य परियोजनाओं को चलाने तथा बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध हों तथा श्रील प्रभुपाद के आंदोलन का महत्व समझते हुए उसके प्रति समर्पित हों।

10। सर्वोच्च प्रबंधन प्राधिकार के रूप में जीबीसी को स्वीकार करे, जीबीसी का समर्थन तथा अनुसरण करे।

11। इस्कॉन के किसी केंद्र अथवा इस्कॉन अनुमोदित प्रचार कार्यक्रम में पूर्णकालिक भक्त के रूप में संलग्न हो।

12। विगत कम से कम दस वर्षों में किसी गंभीर आपराधिक गतिविधि में लिप्त अथवा निम्न के लिए उत्तरदायी न रहे हों ः

- आर्थिक अपराध जिसमें बड़ी धनराशि या अन्य संपत्ति संकट में पड़ जाए।
- अपने नियंत्रण में दी गई धन-संपत्ति का अनुपयुक्त प्रबंधन जिससे विधिक कार्यवाही का संकट खड़ा हो जाए।
- अनधिकार कार्यकलापों द्वारा बड़ी धनराशि की हानि का कारण बनना।
- निवासक्षेत्र की न्यायिक व्यवस्था अथवा जीबीसी द्वारा धर्मगुरु हेतु परिभाषित विवेकसम्मतता को अमान्य किसी अनैतिक अथवा अधम कार्य में लिप्त होना।

13। गुरु-सेमिनार में उपस्थित रहना भी आवश्यक है।

विवेकाधीन योग्यताएं ः

- इस्कॉन में गुरु के रूप में सेवा करने की योग्यता के लिए अनापत्ति प्रमाणपत्र प्रदान किए जाने हेतु आध्यात्मिक उपाधियों यथा भक्ति शास्त्री, भक्ति वैभव तथा भक्ति वेदांत (उपलब्धिनुसार) की प्रबल संस्तुति की जाएगी।
- उनके चरित्र, आचरण तथा परिस्थितयों में ऐसा कुछ न हो जिससे गुरुओं की आचरणसंहिता के पालन संबंधी उनकी योग्यता पर संदेह उत्पन्न हो।
- किसी भी असामान्य व्यक्तिगत परिस्थिति में लिप्त न हों। उदाहरण के लिए बिखरा या अनियमित पारिवारिक जीवन, जिससे गुरु-पद के कर्त्तव्य निभाने में कोई बाधा आए, अथवा उसके अनुयायियों को कोई परेशानी हो।
- सामान्य व्यवहार में वे उत्तरदायी, जागरूक तथा गरिमामय हों।

- वे समस्त भक्तों के लिए सदैव श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करें।
- अपने शिष्यों को श्रील प्रभुपाद के उपदेशों का उसप्रकार अनुसरण करना सिखाएं जिसप्रकार इस्कॉन में सिखाया तथा किया जाता है।
- समस्त भक्तों की अपने गुरु, श्रील प्रभुपाद तथा श्रीकृष्ण के प्रति निष्ठा का संरक्षण करें।
- इस्कॉन के प्रति सदस्यों के विश्वास को संरक्षण दें तथा नवागतों को विश्वास रखने हेतु प्रोत्साहन।
- दीक्षा की प्रक्रिया पूरी हुए बिना किसी को दीक्षा न दें।
- अपने शिष्यों की संख्या बढ़ाने के लिए प्रचार न करें।
- समस्त अदीक्षित भक्तों को उनकी पसंद से गुरु का चयन करने की पूरी स्वतंत्रता दें।
- अपना आश्रय लेनेवाले दीक्षार्थियों को उनकी पसंद का कोई अन्य दीक्षा गुरु चुनने की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करें।
- इस्कॉन गुरु द्वारा प्राप्त की गई गुरु-दक्षिणा इस्कॉन की संपत्ति है, अतः उसका उपयोग कृष्ण भावनामृत आंदोलन के लिए ही होना चाहिए। सारी गुरु-दक्षिणा एक विशेष खाते में, बेहतर हो कम से कम दो हस्ताक्षरों वाले इस्कॉन खाते में रखी जाए तथा खाते के सम्यक् अभिलेख रखे जाएं।
- दीक्षार्थियों के लिए कोई न्यूनतम दक्षिणा राशि निर्धारित करना अथवा दीक्षा पाने के लिए किसी आर्थिक प्रतिबद्धता की शर्त रखना निषिद्ध है।
- गुरु अपने व्यक्तिगत सेवकों तथा यात्रा परिचारकों की संख्या न्यूनतम रखेंगे। जैसा कि शास्त्रों का आदेश है, गुरु को कभी विपरीत लिंग के अविवाहित व्यक्ति को अथवा विपरीत लिंग के अकेले विवाहित व्यक्ति को उनके पति/पत्नी के बिना, अपनी व्यक्तिगत सेवा में नहीं लेना चाहिए, न ही उनके साथ एकांत में बैठना चाहिए।

6•4•3•2 जीबीसी निकाय के साथ संबंध के मानक

- समस्त गुरु, श्रील प्रभुपाद द्वारा चयनित उत्तराधिकारी 'जीबीसी' का सर्वोच्च प्रबंधन प्राधिकारी के रूप में सम्मान करें और उसके प्रति आदरयुक्त सेवा की मनोवृत्ति बनाए रखें।
- श्रील प्रभुपाद की परंपरा में गुरु होने के कारण, इस्कॉन में कार्य करने के लिए उन्हें श्रील प्रभुपाद का अनुसरण करना चाहिए तथा जीबीसी को अपना अधिकारी मानते हुए उसके दिशानिर्देशों का पालन करना चाहिए।
- जीबीसी द्वारा लागू किए गए किन्हीं भी अनुशासनात्मक प्रतिबन्धों (नए शिष्यों को दीक्षा न देना आदि) को स्वीकार करना चाहिए।

6•4•3•3 जीबीसी आंचलिक सचिवों (झोनल सेक्रेटरी) के साथ संबंध के मानक

- जीबीसी आंचलिक सचिवों के पर्यवेक्षण के अधीन तथा समन्वय में कार्य करें।
- स्थानीय जीबीसी आंचलिक सचिव से परामर्श किए बिना अपना निवास स्थान न बदलें क्योंकि इसका प्रभाव मंदिर एवं भक्तों पर पड़ सकता है।
- जीबीसी सचिवालय को प्रतिवर्ष अपना आर्थिक विवरण दें।

6•4•3•4 इस्कॉन आध्यात्मिक प्राधिकारियों के साथ संबंध के मानक

- स्थानीय इस्कॉन प्राधिकारियों से सहयोग करें तथा उनके प्रति उत्तरदायी रहें।
- ऐसे किसी भक्त को दीक्षा न दें जिसे उपयुक्त इस्कॉन आध्यात्मिक प्राधिकारी से समुचित संस्तुति न मिली हो।
- किसी प्रकार की असहमति उत्पन्न होने पर शिष्यों तथा भक्तों को सदाचार–पालन एवं इस्कॉन प्राधिकारियों के साथ सहयोग करने का निदेश दें।
- इस्कॉन प्राधिकारियों के साथ मिलकर कार्य करते हुए सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखें तथा इसे बिगड़ने न दें।
- शिष्य के स्थानीय अधिकारी से विचारविमर्श किए बिना सेवा, स्थान अथवा आश्रम परिवर्तन के विषय में किसी शिष्य से चर्चा न करें, क्योंकि मंदिर अध्यक्ष तथा परियोजना–प्रमुख ही भक्तों को सेवा में संलग्न करने के लिए पूरी तरह उत्तरदायी होते हैं।

6•4•5 जीबीसी द्वारा गुरुओं पर अनुशासनात्मक प्रतिबन्ध

गुरु के दुर्व्यवहार के कारण जीबीसी निकाय द्वारा अनुशासनात्मक प्रतिबन्ध लागू किया जा सकता है।

6•4•5•1 चेतावनी (अथवा आक्षेप)

यदि कोई गुरु आध्यात्मिक साधनाओं से विचलित होते या उनकी अवहेलना करते पाए जाएं परंतु यह विचलन या अवहेलना बहुत गंभीर तथा आदतन न हो, अथवा वे गुरु की आचरण संहिता का उल्लंघन करें (जैसे शिष्यों की संख्या बढ़ाने के लिए प्रचार करना आदि) तो गुरु को गुप्त रूप से चेतावनी देनी चाहिए अथवा प्रतिबंध लगाना चाहिए।

6•4•5•2 परिवीक्षा (प्रोबेशन)

यदि आध्यात्मिक साधनाओं से विचलन या अवहेलना अधिक गंभीर हो अथवा आचरण संहिता का आदतन और गंभीर उल्लंघन किया जा रहा हो तो गुरु पर प्रतिबन्ध लगाए जाकर उन्हें विशिष्ट परिस्थिति में परिवीक्षा पर रखा जा सकता है, गुरु के रूप में उनके कार्य सीमित किए जा सकते हैं (जैसे नए शिष्यों को दीक्षा देने का अधिकार अस्थायी तौर पर वापस लेना)। साथ ही उनके सुधार व पुर्नस्थापन के उद्देश्य से उन्हें सामान्य अनुशंसा अथवा विशिष्ट कार्य सौंपे जा सकते हैं।

6•4•5•3 निलंबन (सस्पेंशन)

यदि कोई गुरु परिवीक्षा के नियमों की घोर उपेक्षा करें अथवा नियामक सिद्धांतों में से किन्हीं का बार–बार उल्लंघन करे, अथवा वर्तमान इस्कॉन या जीबीसी नीतियों के विरुद्ध अनादरपूर्ण क्षतिकारक कार्य करे, अथवा अनुमति के बिना अपना आश्रम या संन्यास त्याग दे, अथवा भक्तों के संग व इस्कॉन आंदोलन को छोड़ दे, अथवा साधना के मानक पथ से पूरी तरह भ्रष्ट हो जाए, तो उसे निलंबित किया जा सकता है। निलंबित गुरु न दीक्षा दे सकते हैं, न अपने शिष्यों के परम शिक्षक रह सकते हैं, न उनका परिचय गुरु के रूप में दिया जा सकता है, न ही वे गुरु के रूप में गुरुपूजा अथवा गुरुदक्षिणा स्वीकार कर सकते हैं।

6•4•5•4 निष्कासन (रिमूव्हल)

यदि कोई गुरु खुले तौर पर श्रील प्रभुपाद अथवा इस्कॉन का विरोधी बन जाएं, अथवा उनके क्रियाकलाप आसुरी हों, अथवा वे मायावादी बन जाएं, अथवा श्री चैतन्य महाप्रभु के सिद्धांतों के विरुद्ध किसी अनधिकृत अपसम्प्रदाय का प्रचार करने लगें, अथवा इस्कॉन व जीबीसी नीतियों की सतत घोर अवज्ञा करें, अथवा इंद्रियतृप्ति के प्रति उनकी गंभीर, प्रलंबित तथा हताशाजनक आसक्ति हो, तो शास्त्रों के निर्देशानुसार उन्हें दीक्षा अथवा शिक्षा गुरु के पद से निष्कासित या पदच्युत किया जा सकता है।

परिशिष्ट 5 इस्कॉन में दीक्षा हेतु योग्यताएं

7•2 दीक्षा अभ्यर्थी का दायित्व

दीक्षार्थी का यह व्यक्तिगत दायित्व है कि वह अपनी बुद्धि का उपयोग कर, एक विशिष्ट भक्त का अपने गुरु के रूप में सही चयन करे। गुरु की अपने शिष्य को वापस भगवद्धाम ले जाने की क्षमता के प्रति परिपक्व एवं सुदृढ़ श्रद्धा उपजने पर ही गुरु से दीक्षा लेनी चाहिए। एक भक्त की प्रगति का स्तर 'गुरु, साधु एवं शास्त्र' इन तीन अधिकारिक संदर्भों से जाँचा जा सकता है। इस्कॉन में गुरु बनने का औपचारिक अनुमोदन मिलना इस बात का द्योतक है कि उस भक्त ने इस्कॉन नियमावली द्वारा निर्धारित प्राधिकार प्रक्रिया को सफलतापूर्वक पूरा किया है तथा कुछ वरिष्ठ भक्तों के निर्णयानुसार वह भक्त इस्कॉन नियमावली के विहित मार्गदर्शक मानदंडों को पूरा करता है। तथापि यह अनुमोदन, अनुमोदित गुरु के भगवद्साक्षात्कार के स्तर से संबंधित विधान या प्रमाण के अर्थ में न लिया जाए, न ही दीक्षार्थी अपनी विवेकबुद्धि को खूँटी पर टांग दे (उसकी उपेक्षा करे)।

7•2•1 प्रथम (हरिनाम) दीक्षा हेतु योग्यताएं

1•1 एक वर्ष तैयारी की अवधि

प्रथम दीक्षा हेतु अभ्यर्थी को न्यूनतम एक वर्ष तक अनुकूल भाव से भक्तिमय सेवा में संलग्न होना चाहिए, चार नियामक सिद्धांतों का दृढ़ता से पालन करना चाहिए तथा प्रतिदिन हरेकृष्ण महामंत्र का सोलह माला जप करना चाहिए।

इस्कॉन भक्तों को चाहिए कि वे नवागत सदस्यों को श्रील प्रभुपाद का आश्रय लेने हेतु प्रोत्साहित करें तथा उन भक्तों से मार्गदर्शन, प्रशिक्षण एवं सहायता लेने की सलाह दें जो उन्हें कृष्णभावना में प्रत्यक्ष तथा व्यवहारिक उपदेश दे रहे हैं। इस्कॉन सदस्य स्वयं निर्धारित करेंगे कि वे कब व किससे दीक्षा हेतु अनुरोध करना चाहेंगे। उन्हें अपना ध्यान संस्थापक आचार्य व अग्रगण्य शिक्षागुरु श्रील प्रभुपाद पर केंद्रित करना चाहिए।

श्रील प्रभुपाद की वाणी से ठोस संबंध स्थापित करने तथा दृढ़ साधना की न्यूनतम छह माह की अवधि के बाद वे अपने भावी गुरु के रूप में किसी प्राधिकृत इस्कॉन भक्त का चयन कर सकते हैं तथा अगली न्यूनतम छह माह की अवधि के पश्चात् उनसे वैष्णव दीक्षा ले सकते हैं। यह समझ लेना आवश्यक है कि इस्कॉन में शिक्षा एवं दीक्षा का उद्देश्य, भक्तों का श्रील प्रभुपाद के साथ निष्ठा, लगाव तथा प्रेम का दृढ़ संबंध जोड़ना है।

अपने भावी दीक्षागुरु निर्धारित करने, उनसे अनुमति लेने, तथा अपने स्थानीय मंदिर अध्यक्ष अथवा संबंधित अधिकारी को सूचित करने के उपरांत दीक्षार्थी को चाहिए कि वह प्रणाममंत्र पढ़े तथा आध्यात्मिक गुरु के रूप में उनकी पूजा प्रारंभ करे। सभी पौत्र शिष्य तथा आगामी पीढ़ियों के शिष्य अपने दीक्षा गुरु का प्रणाम मंत्र पढ़ने के पश्चात्, संस्थापक आचार्य का सम्मान करने के लिए श्रील प्रभुपाद के प्रणाममंत्र का कम से कम प्रथम भाग अवश्य पढ़ें। संबंधित गुरु द्वारा आश्रय प्रदान किए जाने तथा स्थानीय मंदिर अध्यक्ष या संबंधित अधिकारी को सूचित किए जाने की तिथि के छह माह पश्चात् ही वास्तविक दीक्षाविधि हो सकती है।

1•4 मंदिर समुदायों में रहनेवाले भक्त

मंदिर समाजों में रहनेवाले भक्तों के लिए एक वर्ष की तैयारी की अवधि के दौरान उपर्युक्त आवश्यकताएं पूरी करने के साथ, नियमित रूप से संपूर्ण प्रातःकालीन कार्यक्रम में उपस्थित रहना भी आवश्यक है।

1•5 मंदिर समाजों के बाहर रहनेवाले भक्त

जो भक्त मंदिर समाज में निवास नहीं करते और मंदिर कार्यक्रमों में प्रतिदिन उपस्थित नहीं हो सकते, उन्हें दीक्षा तभी दी जाएगी यदि वे घर अथवा नामहट्ट केंद्र में नियमित रूप से प्रातःकालीन कार्यक्रम करें।

1•6 परीक्षा में उत्तीर्ण होना

इससे पूर्व कि भक्त औपचारिक रूप से किसी इस्कॉन गुरु का आश्रय ले तथा तदनुसार दीक्षा के लिए उसकी अनुशंसा की जाए, उसे मंदिर अध्यक्ष अथवा अन्य अनुशंसा प्राधिकारी द्वारा आयोजित मौखिक या लिखित परीक्षा में श्रील प्रभुपाद की शिक्षाओं संबंधी अपना मूलभूत ज्ञान दर्शाना होगा।

ऐसी परिस्थिति में, जब कोई भक्त एक गुरु से आश्रय प्राप्त करने के उपरांत किसी अन्य इस्कॉन गुरु से दीक्षा प्राप्त करने का इच्छुक हो, तब दोनों गुरुओं तथा स्थानीय प्राधिकारी को इसकी सूचना देनी चाहिए। नए गुरु द्वारा औपचारिक स्वीकृति दिए जाने के बाद दीक्षापूर्व की छह माह की अवधि आरंभ होगी।

इससे पूर्व कि अभ्यर्थी को दीक्षा दी जाए, भावी गुरु को उसके विषय में उपयुक्त इस्कॉन आध्यात्मिक प्राधिकारी द्वारा औपचारिक लिखित अनुशंसा प्राप्त हो जानी चाहिए।

प्रथम व द्वितीय दीक्षा के बीच एक वर्ष का अंतराल

प्रथम दीक्षा पाने के पश्चात् दीक्षित भक्त को द्वितीय दीक्षा की योग्यता प्राप्त करने के लिए प्रथम दीक्षा के समय से न्यूनतम एक वर्ष के लिए अनुकूल भक्ति में दृढ़ रहना, प्रतिदिन सोलह माला का नियमित जप करना तथा चार नियामक सिद्धांतों का कठोर पालन करना आवश्यक है। साथ ही मंदिर, प्रचार केंद्र, नामहट्ट केंद्र अथवा घर में प्रातःकालीन कार्यक्रम में उपस्थिति अनिवार्य है।

गंभीर रूप से पतित भक्त के लिए दो वर्ष का अंतराल

हरिनाम दीक्षा प्राप्त करने के बाद दीक्षा प्रतिज्ञाओं की अवहेलना या त्याग करने अथवा दीर्घकाल तक इस्कॉन भक्तों का संग छोड़ देने के कारण यदि किसी भक्त का आध्यात्मिक मानदंडों से गंभीर पतन हो जाए, तो साधना की सामान्य स्थिति में लौटने के पश्चात् उन्हें द्वितीय दीक्षा के लिए कम से कम दो वर्ष प्रतीक्षा करनी होगी।

दीक्षा गुरु का परीक्षा विकल्प

ब्राह्मण दीक्षा के लिए शिष्य की योग्यता निर्धारित करना दीक्षा गुरु का दायित्व है। इस हेतु गुरु अपने शिष्य की कोई उपयुक्त परीक्षा ले सकते हैं।

4•2•6 द्वितीय दीक्षा के लिए औपचारिक अनुशंसा

द्वितीय दीक्षा अभ्यर्थी के गुरु को उपयुक्त इस्कॉन प्राधिकारी से लिखित अनुशंसा प्राप्त होना आवश्यक है। उपयुक्त प्राधिकारी का निर्धारण प्रथम दीक्षा में वर्णित तरीके से होगा।

केवल अनुमोदित गुरुओं से दीक्षा ली जाए

इस्कॉन नियमावली का अतिक्रमण करनेवाले उन इस्कॉन सदस्यों को इस्कॉन में सेवा करने की अनुमति नहीं होगी जिन्होंने ऐसे गुरुओं से दीक्षा ली है, जो इस्कॉन द्वारा दीक्षा गुरु के रूप में अनुमोदित नहीं हैं। यदि ऐसे गुरु का इस्कॉन से बाहर कोई संस्थान या आश्रम है तो शिष्टाचार के अनुरूप उसके शिष्यों को अपने गुरु के

संस्थान में सेवा करनी चाहिए, न कि इस्कॉन में। (यह नियम उन व्यक्तियों पर लागू नहीं है जो इस्कॉन की सदस्यता लेने के पूर्व दीक्षा ले चुके थे।)
तथापि जीबीसी मानता है कि इस सामान्य नियम के अपवाद हो सकते हैं।
अंततः स्थानीय इस्कॉन प्राधिकारियों को यह निर्णय लेने का अधिकार है कि उनके अधिकार क्षेत्र में कोई व्यक्ति रहे, सेवा करे अथवा नहीं। परिस्थितियों को देखते हुए वे इस्कॉन के साथ किसी व्यक्ति का संपर्क अपने विवेकाधीन निर्णय से वर्जित भी कर सकते हैं।

अ-प्रामाणिक गुरुओं से पूर्व में हो चुकी दीक्षा

इस्कॉन की सदस्यता लेने से पूर्व जिन व्यक्तियों की दीक्षा किसी अप्रामाणिक गुरु से हो चुकी है, उन्हें श्रील जीव गोस्वामी की आज्ञा का अनुसरण कर, ऐसे अनुपयोगी गुरु, कुलगुरु आदि का त्याग कर एक प्रामाणिक गुरु को स्वीकार करना चाहिए।

7•3 दिशानिदेश 7•3•1 अनधिकृत 'दीक्षा' समारोह

जब तक गुरु-शिष्य के औपचारिक संबंध को इस्कॉन नियमावली में दी गई प्रक्रिया द्वारा उचित स्वीकृति नहीं मिलती, तब तक किसी भी इस्कॉन सदस्य द्वारा इस्कॉन के अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों को दीक्षा समारोह का कोई भी घटक -जैसे आध्यात्मिक नाम, पवित्र जपमाला, कंठीमाला आदि प्रदान नहीं किया जाना चाहिए, न ही किसी समारोह अथवा प्रतिज्ञादि अनुष्ठान में भाग लेना चाहिए, जिसका निर्दिष्ट या अनिर्दिष्ट प्रयोजन अथवा परिणाम, औपचारिक गुरु-शिष्य संबंध बनाने का आभास देता है।
यदि ऐसी अनधिकृत गतिविधि पहले ही सम्पन्न हो चुकी है ः
अ• सभी प्रतिभागियों को सूचित किया जाए कि न तो दीक्षा हुई है न ही दीक्षा की प्रतिज्ञाएं ली गई हैं।
ब• इस कार्य में सम्मिलित कनिष्ठ भक्त को एक ऐसे अधिकृत दीक्षा गुरु से संपर्क करना चाहिए जिनके प्रति वह पूरी श्रद्धा रख सके।
सभी भक्तों को चाहिए कि यदि कोई नाम दिए गए हैं तो उनका प्रयोग बंद कर दें।

8•2•1•5 इस्कॉन में दीक्षित निवासी भक्त

इस्कॉन में सेवा तथा निवास करनेवाले भक्तों की दीक्षा इस्कॉन में ही होनी चाहिए। यदि किसी व्यक्ति ने पूर्व में किसी मान्यताप्राप्त संप्रदाय से दीक्षा ली है तथा अब इस्कॉन में सम्मिलित होकर स्थानीय जीबीसी के अनुमोदन व मार्गदर्शन के अधीन सेवा करने का इच्छुक है, तो उसे अपवाद माना जाए।

15•4•1 गृहस्थ भक्तों की दीक्षा

गृहस्थ भक्तसमुदाय पर इस्कॉन नियमावली में दिए गए दीक्षा तथा गुरु स्वीकारने विषयक सभी मानक लागू होंगे। इस्कॉन नियमावली के अनुसार स्थानीय मंदिर अथवा क्षेत्रीय प्राधिकारी, गृहस्थ अभ्यर्थी की अनुशंसा करेंगे। तथापि सभी योग्य भक्तों के लिए यह प्रक्रिया एकसमान होगी। यदि स्थानीय प्राधिकारी की दृष्टि में कोई अभ्यर्थी दीक्षा के योग्य नहीं है, तो अभ्यर्थी को सूचित किया जाए कि इस्कॉन नियमावली के अनुसार योग्यता पाने के लिए क्या किया जाना चाहिए। दीक्षा के लिए कोई न्यूनतम दक्षिणाराशि, आर्थिक प्रतिबद्धता अथवा ऐसी कोई भी शर्त रखना प्रतिबंधित है जिसका उल्लेख श्रील प्रभुपाद द्वारा या इस्कॉन नियमावली में न किया गया हो।
जैसा कि इस्कॉन नियमावली में उल्लेखित है, कोई गुरु किसी भक्त को उचित अनुशंसा दी जाने के कारण दीक्षा देने के लिए बाध्य नहीं होंगे।

परिशिष्ट 6 पतित गुरु का त्याग

निम्नलिखित नियम तथा श्री नरहरि सरकार ठाकुर (श्री चैतन्य महाप्रभु के पार्षद) रचित 'श्रीकृष्ण भावनामृत', श्री जीव गोस्वामी रचित 'भक्ति संदर्भ', श्रील भक्तिविनोद ठाकुर रचित 'जीव धर्म' एवं श्रील ए•सी• भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद के ग्रंथों पर आधारित हैं।

6•5•1•1 पतित गुरु का त्याग कब किया जा सकता है

यदि गुरु की आत्मस्वीकृति अथवा अकाट्य तथा विश्वसनीय साक्षी (साक्ष्यों) द्वारा प्रमाणित हो जाए कि दीक्षा के समय गुरु पतित थे, तो शिष्य को उनका त्याग करने एवं किसी प्रामाणिक गुरु से पुनर्दीक्षा लेने का न्यायसंगत अधिकार है।

6•5•1•2 पतित गुरु का त्याग कब कर देना चाहिए

6•5•1•2•1 *हताशाजनक रूप से इंद्रियतृप्ति में लिप्त हों*

यदि विश्वसनीय प्रमाण या उनकी आत्मस्वीकृति से यह सिद्ध हो जाए कि वे नियमित रूप से कृष्ण भावनामृत के नियामक सिद्धांतों का उल्लंघन कर रहे हैं तथा उनके सुधार की कोई संभावना नहीं है, तो शिष्य को उनका त्याग कर देना चाहिए, जिसके पश्चात् वह पुनर्दीक्षा ले सकता है।

6•5•1•2•2 *जब आसुरी गुण ग्रहण कर लें*

यदि गुरु आसुरी गुणों को ग्रहण कर लें तथा इस्कॉन के विरोधी बन जाएं, तो उनका त्याग कर देना चाहिए, जिसके पश्चात् शिष्य पुनर्दीक्षा ले सकता है।

6•5•1•3 पतित गुरु का त्याग कब न किया जाए

जब गुरु इंद्रियतृप्ति में लिप्त हों तथा एक या अधिक नियामक सिद्धांतों का उल्लंघन कर रहे हों किंतु उनके सुधार की संभावना हो, तो शिष्य को चाहिए कि उनका त्याग न करे वरन् उन्हें सुधार के लिए समय दे तथा उस अवधि में शिक्षा गुरु के रूप में श्रील प्रभुपाद व वरिष्ठ वैष्णवों का आश्रय ले।

6•5•1•4 निलंबित गुरु का त्याग कब करें

निलंबित गुरु का शिष्य जिसकी अपने गुरु पर किंचित भी श्रद्धा न बची हो तथा उनके प्रति अपराध की मनोवृत्ति उत्पन्न हो गई हो, इस विषय में अनेक निर्देश सुनने पर भी जो पुनः उनके प्रति श्रद्धा जागृत करने में असफल रहे, वह अपने गुरु से मुक्त होने की अनुमति ले सकता है ताकि किसी अन्य दीक्षा गुरु का आश्रय ले सके। ऐसे भक्त को अपने स्थानीय जीबीसी प्रतिनिधि से परामर्श लेना चाहिए। यदि निलंबित गुरु अनुमति रोक रखते हैं, तो शिष्य अनुमति हेतु जीबीसी से अनुरोध कर सकता है।

6•5•1•5 मार्गदर्शन हेतु 'गुरु आश्रय'

ऐसे भक्त जिनके गुरु का पतन हो गया हो, जीबीसी के 'गुरु आश्रय' तथा 'पुनर्दीक्षा के विषय में प्रश्नोत्तर'शीर्षक पत्रों से मार्गदर्शन लें। इन पत्रों में गुरु का आश्रय लेने का महत्व तथा शिक्षा गुरु की भूमिका विषयक इस्कॉन के दिशानिर्देश भी सम्मिलित हैं।

परिशिष्ट 7 इस्कॉन की प्राधिकार श्रेणियों में समन्वय
जीबीसी का औपचारिक नीति पत्र

यह आलेख उन सिद्धांतों को परिभाषित करने पर केंद्रित है, जिनका पालन दीक्षागुरु, शिक्षागुरु, दीक्षागुरु अथवा शिक्षागुरु के शिष्य, आंचलिक जीबीसी, क्षेत्रीय सचिव, मंदिर अध्यक्ष तथा इस्कॉन के अन्य अधिकृत प्रबंधकों द्वारा किया जाना चाहिए। इसका प्रयोजन है आध्यात्मिक गुरु तथा प्रबंधकों के बीच मिथ्याबोधों (ग़लतफ़हमियों) को रोकना, ताकि उन दोनों के आश्रयाधीन भक्तों पर इन संभावित मिथ्याबोधों का प्रभाव कम से कम पड़े।

'आध्यात्मिक गुरु' का अर्थ है दीक्षा, शिक्षा अथवा दोनों

ध्यान रखें, कि इससे आगे जबतक विशिष्ट उल्लेख न किया जाए, 'आध्यात्मिक गुरु' से दीक्षा गुरु तथा शिक्षा गुरु (वे प्रबंधक भी जो इस रूप में कार्य कर रहे हों) –दोनों का अर्थ लिया जाए। इसके अतिरिक्त 'आध्यात्मिक प्राधिकारियों' का प्रयोग होनेपर उसका अर्थ है कोई भी गुरु अथवा प्रबंधक, जिनके उपदेशों एवं शिक्षा के बल पर किसी भक्त की भक्तिमय सेवा में श्रद्धा स्थापित हुई तथा जो उस श्रद्धा को दृढ़ता प्रदान कर रहे हैं।

इस्कॉन में प्राधिकार

यह आलेख इस्कॉन की प्रबंधन प्रणाली अथवा गुरु तत्व –गुरु के अपेक्षित गुण, कर्त्तव्य एवं गुरु के चयन की प्रक्रिया का विस्तृत अथवा व्याख्यात्मक विश्लेषण नहीं है।

इस आलेख की पृष्ठभूमि इसप्रकार है ः
एक भक्त, चाहे वह दीक्षा गुरु हो, शिक्षा गुरु, संन्यासी, गवर्निंग बॉडी कमिश्नर, आंचलिक सचिव, क्षेत्रीय सचिव, मंदिर अध्यक्ष, भक्तसमुदाय प्रतिनिधि अथवा इस्कॉन में अधिकारिक पद पर आसीन कोई भी, उस भक्त को पूरा अधिकार तभी प्रदान किया जाएगा यदि वह इस्कॉन में श्रील प्रभुपाद के निर्देशानुसार जीबीसी निकाय के प्राधिकार के अधीन सेवा करता है।
इस आधार को स्थापित करने के लिए हमें केवल इस तथ्य पर बल देना है, कि श्रील प्रभुपाद ने अपनी शिक्षाओं तथा अपने द्वारा हस्ताक्षरित औपचारिक कार्यालयीन दस्तावेज़ों में भी इस सिद्धांत को निरंतर तथा स्पष्टतः प्रस्थापित किया है। इसप्रकार श्रील प्रभुपाद ने जीबीसी की सर्वोच्च प्रबंधन प्राधिकारी के रूप में सुस्पष्ट स्थापना की एवं यह भी निर्दिष्ट किया कि गुरु के रूप में सेवा कर रहे भक्तों सहित सभी भक्तों को आध्यात्मिक मार्गदर्शन (शिक्षा) देने का दायित्व भी जीबीसी के ही अधिकारक्षेत्र में है।

संवाददाता ः क्या आपने किसी व्यक्ति को आंदोलन का उत्तराधिकारी शिक्षक नियुक्त किया है?
श्रील प्रभुपाद ः "मैं कुछ भक्तों को प्रशिक्षित कर रहा हूँ, मेरा तात्पर्य है कुछ प्रगत शिष्यों को, ताकि वे इस दायित्व को सरलता से सँभाल लें। मैंने उन्हें जीबीसी बनाया है।"[1]

[1] संवाददाता के साथ वार्तालाप, लॉस एंजलिस, जून 4, 1976

दूसरे शब्दों में, यद्यपि जीबीसी इस्कॉन में सर्वोच्च प्रबंधन प्राधिकारी है, परंतु उनक दायित्व न केवल प्रबंधन अपितु शिक्षा प्रदान करना भी है।

प्राधिकार की दो श्रेणियां

चूँकि प्रत्येक भक्त अपने वरिष्ठ प्राधिकारियों से आध्यात्मिक प्रेरणा प्राप्त करता है, अतः इस्कॉन में प्राधिकार की दो श्रेणियां होती हैं ः–एक प्रधानतः आध्यात्मिक तथा दूसरी प्रधानतः प्रबंधकीय। ये दोनों प्राधिकार श्रेणियां अपने–अपने अद्वितीय किंतु अन्योन्याश्रित उद्देश्यों को लेकर संस्थापक आचार्य के आदेशानुसार कार्य करती हैं। दोनों ही श्रेणियां भक्तों को आश्रय प्रदान करने के लिए जीबीसी द्वारा प्राधिकृत हैं। आश्रय प्रदान करने के दो मार्ग हैं –शिक्षा द्वारा एवं उदाहरण द्वारा।
प्राधिकार की दो श्रेणियों में इसप्रकार भिन्नता बताकर –प्रधानतः आध्यात्मिक तथा प्रधानतः प्रबंधकीय, हम यह संकेत नहीं दे रहे कि ये एकदूसरे की विरोधी हैं अथवा आध्यात्मिक प्राधिकार श्रेणी के पास कोई विशेषाधिकार अथवा अंतर्निहित शुद्धता है।

''प्रबंधन भी आध्यात्मिक गतिविधि है... यह कृष्ण का प्रतिष्ठान है।''[2]
'' हमारे प्रचार कार्य में हम कितनी सारी पुस्तकों का क्रय–विक्रय करते हैं तथा कितनी ही संपत्ति व धन का व्यवहार करते हैं, किंतु ये व्यवहार कृष्णभावना आंदोलन से संबद्ध हैं अतः इन्हें कभी भौतिक न समझा जाए। जो व्यक्ति ऐसे प्रबंधन के विचारों में मग्न है, वह कृष्णभावना से बाहर नहीं हो जाता। यदि कोई व्यक्ति महामंत्र के प्रतिदिन सोलह माला जप के नियामक सिद्धांत का दृढ़ता से पालन करता है तो कृष्णभावना के प्रसार के लिए भौतिक संसार में उसके समस्त व्यवसाय, कृष्णभावना के अनुशीलन से अभिन्न हैं।[3]

एक आध्यात्मिक समाज में कोई प्रबंधक केवल नियमों की घोषणा कर तथा उन्हें लागू कर देने मात्र से अपना दायित्व नहीं निभा सकता। नियमों की आधारशिला आध्यात्मिक होनी चाहिए तथा उन्हें वैष्णव सिद्धांतों के अनुरूप लागू व कार्यान्वित किया जाना चाहिए। जो प्रबंधक इस समझ के साथ कार्य करते हैं वे अपने कनिष्ठों के आध्यात्मिक दायित्व का भार पूरी तरह उठा सकते हैं।

अतः हमें 'आध्यात्मिक' तथा 'प्रबंधकीय' में अभिन्नत्व देखना चाहिए। परंतु उनमें कुछ भेद भी है, एक ही समय पर यह भेद तथा अभेद समझना तभी संभव है जब इन दो शब्दों का स्पष्टीकरण किया जाए।

प्राधिकार की आध्यात्मिक श्रेणी

प्राधिकार की आध्यात्मिक श्रेणी भगवान श्रीकृष्ण से आरंभ होकर ब्रह्माजी, नारद, व्यासदेव से होती हुई सम्पूर्ण गुरु–शिष्य परम्परा का निर्माण करती है जिसमें हमारे संस्थापक आचार्य श्रील प्रभुपाद भी हैं। हमारे सम्प्रदाय के प्रति विनीत भाव रखते हुए जीबीसी के अधीन सेवा करने वाले भक्त इस्कॉन के अंतर्गत इस प्राधिकार श्रेणी में शिक्षा तथा आश्रय प्रदान करने के लिए प्राधिकृत हैं। इस श्रेणी में गवर्निंग बॉडी कमिश्नर,

[2] कक्ष वार्तालाप, जनवरी 16, 1977, कोलकाता
[3] श्रीमद् भागवतम, 5•16•3• तात्पर्य

आंचलिक सचिव, आध्यात्मिक गुरु, संन्यासी, क्षेत्रीय सचिव, मंदिर अध्यक्ष, भक्तसमुदाय प्रतिनिधि, यात्री प्रचारक तथा समुदाय प्रचारक शामिल हैं। वस्तुतः आचार एवं विचारों से अपने प्रामाणिक गुरु का दृढ़तापूर्वक अनुसरण करनेवाले व्यक्ति को प्राधिकार की आध्यात्मिक श्रेणी का प्रतिनिधित्व करने का अधिकार दिया जा सकता है।

सामान्यतया, व्यक्ति का सबसे प्रमुख आध्यात्मिक प्राधिकारी उसके शिक्षा गुरु होते हैं। शास्त्रों का आदेश है कि भक्त को अपने गुरु के प्रति निष्ठावान तथा आज्ञाकारी होना चाहिए। इसप्रकार गुरु अधिकारपूर्वक अपने शिष्यों को भक्ति के विकास हेतु प्रशिक्षण तथा शिक्षा प्रदान करते हैं। अतः गुरु अपने शिष्यों को कृष्णभावना में प्रगति करने हेतु आवश्यक शिक्षा तथा प्रेरणा देने में महती भूमिका निभाते हैं।

प्राधिकार की प्रबंधकीय श्रेणी

श्रील प्रभुपाद के निर्देशों के अनुरूप जीबीसी इस श्रेणी में संघ के पर्यवेक्षण हेतु नियमों का निर्धारण कर उन्हें लागू करती है। प्रबंधकीय संरचना के संदर्भ में जब हम 'प्राधिकार' शब्द का प्रयोग करते हैं तो उसका तात्पर्य किसी परम अधिकार –शास्त्राधिकार के समान, से नहीं, वरन् ऐसे आदेश से है जो इस प्रचार आंदोलन को श्रील प्रभुपाद के निर्देशों के अनुरूप चलाने में सहायक हो। उस आदेश का पालन करने हेतु शिष्यों ने मंदिरों, गृहस्थ भक्त समुदायों (जो मंदिरनिवासी नहीं हैं), कृषिसमुदाय तथा गुरुकुल जैसी परियोजनाओं तथा अन्य अनुकूल संस्थाओं एवं निकायों का विस्तार करने के लिए, श्रील प्रभुपाद द्वारा नियत प्रबंधकीय प्रणाली को अंगीकार किया। इसप्रकार, इन विस्तारशील क्षेत्रों तथा उनके सदस्यों की समुचित सेवा करने के लिए वर्तमान में इस प्रणाली में क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा महाद्वीपीय स्तर पर अनेक गवर्निंग बॉडीज का गठन किया गया है जिनके सदस्यों में गवर्निंग बॉडी कमिश्नर्स, जीबीसी आंचलिक सचिव, गुरु, संन्यासी, क्षेत्रीय सचिव, मंदिर अध्यक्ष, भक्त समुदाय प्रतिनिधि तथा यात्री व समुदाय प्रचारक तथा अन्य सम्मिलित हैं।

भटकाव के आरंभ की परिभाषा

यद्यपि इस्कॉन में श्रील प्रभुपाद के ध्येयानुसार सबकुछ चलना एक आदर्श स्थिति कही जाएगी परंतु एक–दूसरे के कार्य में हस्तक्षेप करने की प्रवृत्ति दोनों प्राधिकार श्रेणियों के अधिकारियों में देखी जाती है।
उदाहरण के लिए, कुछ आध्यात्मिक प्राधिकारी ऐसे भी हैं जो सुयोग्य व जिम्मेदार प्रबंधक के कार्य में हस्तक्षेप करते हैं। वे स्वयं को उस अंचल की प्रबंधकीय संरचना का हिस्सा नहीं मानते जहाँ उनके प्रचार का प्रभाव है (वस्तुतः यह उनका दायित्व है) किंतु प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से किसी न किसी परियोजना (ओं) का प्रबंधन कर रहे होते हैं।
प्रायः संबंधित प्रबंधकीय संरचना की स्पष्ट सहमति के बिना वे भक्तों, धन तथा उन परियोजनाओं का प्रबंधन करते हैं जिनका दायित्व उनके अनुयायियों अथवा उनपर निर्भर[4] लोगों का है। इसप्रकार वे प्रबंधकीय प्राधिकार श्रेणी को क्षति पहुँचाते हुए अपने अनुयायियों की निष्ठा तथा सेवा को, गुरु की अपनी प्रबंधकीय संरचना ओर मोड़ने का प्रयास करते हैं।

[4] 'निर्भरता ' केवल आध्यात्मिक ही नहीं वरन् अपने आध्यात्मिक अधिकारी पर आर्थिक निर्भरता भी हो सकती है यदि उनके द्वारा ऐसी कोई प्रणाली बनाई गई हो।

इस दशा में न केवल दुविधा वरन अलगाव का भाव भी जागृत होता है। ऐसी परिस्थिति प्रबंधक के लिए विवादित बन सकती है, यद्यपि आध्यात्मिक गुरुओं के प्रति अपराध हो जाने के भय से अधिकतर कनिष्ठ प्रबंधक इसके विरोध में स्वर नहीं उठाते।

दूसरी ओर, ऐसे प्रबंधकीय प्राधिकारी भी हैं जो भक्तों को पर्याप्त आध्यात्मिक देखभाल उपलब्ध नहीं कराते, जिसके कारण गुरुओं में हस्तक्षेप करने के प्रति झुकाव बढ़ता है तथा वे अपने शिष्यों की सेवा अथवा संग के विषय में बदलाव की सलाह देने लगते हैं।

जैसे, कभी-कभी प्रबंधक अपने अधीन आनेवाले भक्तों में साधना, शुद्ध प्रचार, शुद्ध भक्ति के विकास के स्थान पर प्रबंधन के लक्ष्यों को अधिक महत्व देते हैं। वे अपने प्रबंधकीय तत्वों लिए संसाधन न जुटानेवाले भक्तों की आध्यात्मिक प्रगति की अवहेलना भी कर सकते हैं चाहे उन्होंने इसके लिए पर्याप्त प्रेरणा देने की व्यवस्था की हो या नहीं।

प्रबंधन प्राधिकार श्रेणी से मतभेद

उपर्युक्त दशा आध्यात्मिक तथा प्रबंधकीय श्रेणियों में तनाव का कारण बनती है।

ऐसी परिस्थिति तब उत्पन्न होती है जब भक्त आर्थिक रूप से स्वतंत्र हों तथा स्थानीय संघों से उनका कोई प्रबंधकीय संबंध न हो। तथापि यह नहीं मान लेना चाहिए कि स्थानीय प्रबंधन प्रत्येक भक्त अथवा अभ्यर्थी भक्त का समावेश, भक्तसमुदाय की देखभाल करनेवाली स्थानीय प्रबंधन प्रणाली में करने का प्रयास नहीं कर रहा है।

अतः गुरु को चाहिए कि अपने शिष्यों के प्रबंधकीय निर्णयों में हस्तक्षेप करने अथवा उनकी सेवा या संग में परिवर्तन की सलाह देने से पूर्व उस क्षेत्र के प्रबंधकों से अनुमोदन लें।

गुरु-शिष्य संबंध के आरंभ से ही शिष्यों को स्थानीय प्रबंधकों का आदर करने हेतु प्रशिक्षण देना सबसे अच्छा तरीका है। कई इस्कॉन प्रबंधक मंदिरों की देखभाल, विग्रहपूजा, पुस्तक वितरण तथा श्रील प्रभुपाद द्वारा प्रदत्त अन्य मानकों का दायित्व निभा रहे हैं।

"विग्रह स्थापना का अर्थ है अनवरत और नियमित पूजन।"[5]

अतः गुरु अपने शिष्यों को सिखाएं, कि किस प्रकार अपने स्थानीय प्रतिनिधियों तथा प्रबंधकों के साथ सहयोग करते हुए श्रील प्रभुपाद के आंदोलन की सेवा की जानी चाहिए।

परंतु इसका अर्थ यह नहीं कि प्रबंधक अपने क्षेत्राधिकार में आनेवाले भक्तों के युक्तिसंगत अधिकारों की अवहेलना करे अथवा उनकी उचित देखभाल के विषय में उनके गुरु द्वारा जताई जा रही चिंता की उपेक्षा कर दे। प्रबंधक को गुरु तथा उनके शिष्यों की चिंताओं के प्रति संवेदनशील होना चाहिए।

यदि गुरु को यह प्रतीत हो कि स्थानीय प्रबंधन व्यवस्था में उनके शिष्यों की सेवाओं तथा दायित्वों के अनुरूप उनकी (शिष्यों की) पर्याप्त देखभाल नहीं हो रही है, तो वे उनकी ओर से उच्चतर प्रबंधन, स्थानीय जीबीसी अथवा इस पत्र में दी गई सूचीनुसार अन्य इस्कॉन अधिकारी को याचिका (अपील) प्रस्तुत कर सकते हैं।

[5] शिवानंद को लिखे पत्र से, सितंबर **2, 1971**

इस बिंदु पर अधिक चर्चा आगे होगी। उससे पूर्व हम 'श्रद्धा' पर संक्षिप्त चर्चा करेंगे। विचाराधीन व्यापक मुद्दों के संदर्भ में श्रद्धा का महत्व समझ लेने पर दोनों अधिकार श्रेणियों की सेवा अधिक अच्छी तरह हो सकेगी।

अधिकार, श्रद्धा के निरंतर विकास के बल पर स्थापित होता है

इस्कॉन की सबसे बड़ी संपत्ति उसके सदस्यों की श्रद्धा है। यदि मंदिर न हों, परियोजनाएं और आय न हो, केवल गिनती के अनुयायी हों, किंतु यदि श्रद्धा है, तो सच्चे अर्थों में संपन्नता आएगी। आइये देखें इस पत्र में श्रील प्रभुपाद क्या लिखते हैं ः

'' संस्कृत में एक लोकोक्ति है कि उत्साही–उद्यमी व्यक्ति को लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होती है (सकल पदारथ हैं जग माही, करमहीन नर पावत नाही)। पश्चिमी संसार इस कहावत का मूर्त उदाहरण है। पश्चिम के लोग भौतिक प्रगति के लिए बहुत उत्साही हैं, और उन्होंने वह की। इसीप्रकार, श्रील रूप गोस्वामी के निर्देशानुसार यदि हम अध्यात्म के विषय में उत्साही बनें, तो उसमें भी सफलता पा सकते हैं। मेरा उदाहरण लें, मैं वयोवृद्ध अवस्था में आपके देश में आया, किंतु मेरे पास एक संपत्ति थी –उत्साह और अपने गुरु के प्रति श्रद्धा। मुझे लगता है उसीके कारण मैं आपके सहयोग से कुछ कर पाया, जो अब मेरी आशा की किरण है।''[6]

'भगवद्गीता यथावत' श्लोक **9•3** के तात्पर्य में वे लिखते हैं, कृष्णभावनामृत में प्रगति करने के लिए श्रद्धा सबसे महत्वपूर्ण कारक है –केवल श्रद्धा...''।

आध्यात्मिक प्राधिकार की श्रेणी में सेवारत भक्तों को चाहिए कि वे अपने आचार एवं प्रचार के माध्यम से, अपने पर निर्भर भक्तों की श्रद्धा शुद्ध भक्ति में, हमारे सम्प्रदाय में, श्रील प्रभुपाद में, इस्कॉन तथा उसके प्रबंधन में जगाएं तथा उसकी रक्षा करें। गुरुओं पर, इस्कॉन प्रबंधकों के इस विश्वास को बनाए रखने का भी दायित्व है कि वे (गुरु) आध्यात्मिक प्राधिकार श्रेणी के उपयुक्त प्रतिनिधि हैं। गुरु का आचरण यदि इसके विपरीत हो तो अन्य लोगों की श्रद्धा का भी नाश कर देता है।

इसके विपरीत प्रबंधन प्राधिकार श्रेणी में सेवारत भक्तों का प्रबंधन, प्रचार व आचरण, आध्यात्मिक प्राधिकार श्रेणी के भक्तों तथा उनके शिष्यों में विश्वास जगानेवाला तथा आश्वासक होना चाहिए। प्रबंधकों द्वारा उनके अधिकार क्षेत्र के भक्तों की उचित देखभाल होती देख, गुरु भी अपने शिष्यों को प्रबंधकों से सहयोग करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। किंतु यदि प्रबंधक आध्यात्मिक सिद्धांतों के विपरीत, अपने उत्तरदायित्व की उपेक्षा कर भक्तों के आध्यात्मिक हित को दुष्प्रभावित करें, तो भी अन्य लोगों की श्रद्धा नष्ट होगी।

अतः प्राधिकार की दोनों श्रेणियों के लिए अनुसरणीय स्पष्ट सिद्धांतों की रूपरेखा देना आवश्यक है, ताकि इस्कॉन के समस्त सदस्यों की श्रद्धा बनी रहे।

[6] जयगोविंद को लिखे पत्र से, टिटेनहर्स्ट, अक्तूबर **15, 1969**

आध्यात्मिक गुरु स्वतंत्र नहीं हैं

सुपरिभाषित सिद्धांतों को प्रस्तुत करने की आवश्यकता को अधिक स्पष्ट करने के लिए हम इस्कॉन की प्रबंधकीय संरचना में गुरु के स्थान का विवेचन करेंगे।

अपनी वपु उपस्थिति की अवधि में श्रील प्रभुपाद ही इस्कॉन के एकमात्र दीक्षागुरु, अग्रगण्य शिक्षागुरु एवं जीबीसी से वरिष्ठ, सर्वोच्च प्रबंधकीय प्राधिकारी थे।

"(...)हम जीबीसी –गवर्निंग बॉडी कमीशन के द्वारा कृष्ण भावनामृत आंदोलन का प्रबंधन कर रहे हैं। पूरे विश्व के मामलों की देखरेख के लिए लगभग **20** जीबीसी हैं तथा उनके ऊपर मैं हूँ। जीबीसी के नीचे सभी केंद्रों के मंदिर अध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष हैं। मंदिर अध्यक्ष जीबीसी के प्रति उत्तरदायी हैं और जीबीसी मेरे प्रति। इस प्रकार हम प्रबंधन कर रहे हैं..."[7]

श्रील प्रभुपाद की वपु अनुपस्थिति में यह व्यवस्था कुछ बदली है। उनके निर्देश थे कि जीबीसी इस्कॉन की सर्वोच्च प्रबंधन प्राधिकारी होगी। साथ ही उनका आदेश था कि इस्कॉन में अनेक गुरु होने चाहिए।

"जो भी व्यक्ति श्री चैतन्य महाप्रभु के एक प्रामाणिक प्रतिनिधि के मार्गदर्शन में उनका अनुयायी बनता है, वह गुरु बन सकता है । मैं आशा करता हूँ कि मेरी अनुपस्थिति में मेरे सभी शिष्य कृष्ण भावनामृत का विश्वव्यापी प्रसार करने के लिए प्रामाणिक गुरु बनें।"[8]

इससे एक चुनौतीपूर्ण स्थिति उत्पन्न होती है। अनेक आध्यात्मिक संस्थाओं में एक गुरु संस्था–प्रमुख होता है, जबकि इस्कॉन में समूची संस्था की सर्वोच्च प्रबंधन प्राधिकारी जीबीसी के अतिरिक्त अनेक गुरु भी हैं। इस्कॉन में सेवारत गुरु–वृन्द से अपेक्षित है कि वे श्रील प्रभुपाद के उपदेशों का अनुसरण तथा जीबीसी निकाय के अधीन कार्य करें।

इसप्रकार आध्यात्मिक गुरु इस्कॉन संघ की नीतियों, आचारसंहिता, इस जीबीसी अनुमोदित पत्र में निर्दिष्ट नियमों तथा जीबीसी प्रबंधन द्वारा लिए जानेवाले निर्णयों के पालन हेतु बाध्य हैं। इस बाध्यता में गुरु का यह उत्तरदायित्व भी निहित है कि वे अपने शिष्यों को केवल अपना (गुरु का) संग लेने तथा अपनी परियोजनाओं (जिनका आंचलिक प्रबंधन से संबंध न हो) में सेवा करने की प्रेरणा देने की अपेक्षा, शिष्यों के अपने निवासक्षेत्र में स्थित इस्कॉन के वर्तमान प्रबंधकीय तथा भक्त–सेवा संघों का संग लेने व सेवा करने के लिए प्रेरित करें।

शिष्य अपने प्राधिकारियों के बीच टकराव की स्थिति उत्पन्न न करें

शिष्यों को चाहिए कि वे इस्कॉन के बृहद् स्वरूप को भी समझें। निश्चित ही ऐसी स्थितियां आ सकती हैं जब आध्यात्मिक दृष्टि से कोई गुरु, स्थानीय जीबीसी सदस्य अथवा इस्कॉन प्रबंधक की अपेक्षा अधिक उन्नत हो, या इसके विपरीत स्थानीय जीबीसी सदस्य अथवा इस्कॉन प्रबंधक किसी विशेष गुरु की अपेक्षा अधिक उन्नत हो।

जो भी हो, हम स्पष्ट देख चुके हैं कि श्रील प्रभुपाद ने जीबीसी, उसके सदस्य व अन्य इस्कॉन प्रबंधकों को आध्यात्मिक प्रबंधन के प्राधिकार प्रदान किए।

---

[7] वासुदेव को लिखे पत्र से, न्यू वृंदावन, जून **30, 1976**

[8] मधुसूदन को लिखे पत्र से, नवद्वीप, नवंबर **2, 1967**

यदि किसी शिष्य की यह मिथ्या धारणा दृढ़ हो जाती है कि उसके गुरु जीबीसी तथा इस्कॉन के नीति-नियमों से ऊँचे हैं, तो गुरु एवं अन्य प्राधिकारियों को चाहिए कि वे उसे सही जानकारी से अवगत कराएं। अन्यथा ऐसी मिथ्या धारणावश किए गए कार्यकलाप शिष्य के आध्यात्मिक व प्रबंधकीय प्राधिकारियों के बीच टकराव का कारण बन सकते हैं।

निश्चय ही समस्त शिष्यों को अपने इस्कॉन प्राधिकारियों की आज्ञा का अनुसरण उसीप्रकार करना चाहिए, जिसप्रकार इस्कॉन के समस्त दीक्षागुरु तथा शिक्षागुरुओं को उनके प्राधिकारियों की आज्ञा का।

अतः गुरु को आचार एवं प्रचार के माध्यम से अपने शिष्यों को शिक्षा एवं प्रशिक्षण, न केवल भक्ति में प्रगति करने हेतु देना चाहिए, अपितु शिष्य तथा गुरु के, इस्कॉन की प्रबंधन संरचना के साथ संबंध के विषय में भी।

लागू किए गए सिद्धांत

गुरु के शिष्यों की शिक्षा

इस्कॉन में गुरुओं का दायित्व है कि निम्नलिखित का आशय समझने में अपने प्रत्येक शिष्य की सहायता करें ः

1। गुरु को उनके अधिकार श्रील प्रभुपाद के प्रति निष्ठा के कारण प्राप्त होते हैं। यह निष्ठा श्रील प्रभुपाद के आंदोलन इस्कॉन में कार्य करने के उनके आदेश के प्रति भी होनी चाहिए।

2। गुरु इस्कॉन के सदस्य हैं, अतः उसके सामूहिक नेतृत्व –जीबीसी के प्रति उत्तरदायी हैं।

3। आध्यात्मिक गुरु के पद पर होने के कारण उन्हें इस्कॉन के संसाधनों पर कोई विशेषाधिकार प्राप्त नहीं हो जाते हैं। गुरु को शिष्यों पर अपने अधिकारों अथवा विशेषाधिकारों का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।

4। समस्त शिष्यों को अपने इस्कॉन प्राधिकारियों की आज्ञा का अनुसरण उसीप्रकार करना चाहिए, जिसप्रकार इस्कॉन के समस्त दीक्षागुरु तथा शिक्षागुरुओं ने उनके प्राधिकारियों की आज्ञा का अनुसरण कर उदाहरण स्थापित किया है।

5। शिष्यों के लिए अत्यावश्यक कार्य है कि वे अपने गुरु के माध्यम से कृष्ण के प्रति शरणागत हों, तथा इस्कॉन प्रबंधन में अपने उन वरिष्ठों को पहचानें तथा आदर करें, जो आध्यात्मिक प्रगति करने के लिए उनकी सहायता कर रहे हैं।

6। आध्यात्मिक रूप से परिपक्व प्रबंधक उन भक्तों के मुख्य शिक्षागुरु बन सकते हैं जिन्होंने उनसे दीक्षा न ली हो, और इस प्रकार के संबंधों को गुरुओं द्वारा प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

गुरुओं का आचरण

प्रबंधन प्राधिकार श्रेणी के प्रति आदर प्रकट करने तथा आध्यात्मिक प्राधिकार श्रेणी के प्रति प्रबंधकों का विश्वास बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक गुरु ः

1। उचित होगा कि किसी इस्कॉन मंदिर अथवा प्रचार केंद्र में पहुँचने से पहले, केवल अपने कार्यक्रम की बात न कर, स्थानीय प्रबंधक से यह पूछे कि वे (गुरु) इस यात्रा के दौरान किसप्रकार कोई सेवा कर सकते हैं।

2। किसी ऐसे क्षेत्र में जाने की योजना बनाने से पूर्व, जहाँ कोई मंदिर अथवा प्रचार केंद्र नहीं है, क्षेत्रीय जीबीसी से उक्त स्थान पर प्रचार योजनाओं के विषय में चर्चा करें, जिसमें गुरु सेवा कर सकते हों।
3। प्रबंधकीय निर्णयों में असहमति होने पर संबंधित अधिकारी के साथ यथासंभव सहयोग करें। सहमति न हो पाने पर गुरु को चाहिए कि संबंधित अधिकारी के निर्णय को **मान लें** / **स्थगित रखें** तथा आवश्यक हो तो उच्चतर प्राधिकारी से अपील करें।

प्रबंधकों के दायित्व

इस्कॉन में सहयोग की स्थापना करने, आध्यात्मिक प्राधिकार श्रेणी के प्रति आदर प्रकट करने तथा प्रबंधकीय प्राधिकार श्रेणी के प्रति गुरुओं तथा उनके शिष्यों का विश्वास बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि सभी प्रबंधक ः

1। अपने अधिकारक्षेत्र में यात्रा हेतु आनेवाले दीक्षा गुरुओं अथवा यात्री प्रचारकों के सुझावों, विशेषकर भक्तों के संरक्षण से संबंधित सुझावों को ध्यानपूर्वक सुनें।
2। अपने पर निर्भर भक्तों की श्रद्धा (शुद्ध भक्ति तथा शिक्षा–दीक्षा गुरु स्वीकारने तथा उनकी सेवा के सिद्धांतों के प्रति) की रक्षा करें।
3। अपने प्रबंधन क्षेत्र में भक्तों के संरक्षण की प्रणालियों को समर्थन एवं प्रोत्साहन दे, उदा• सलाहकार प्रणाली, ब्राह्मणीय सलाहकार समिति आदि।
4। यह सुनिश्चित करें कि उनके प्राधिकार के अंतर्गत सभी प्रबंधक भक्तसंरक्षण के सिद्धांतों में प्रशिक्षित हों।
5। मिलने के लिए आनेवाले गुरुओं को उनके शिष्यों के आध्यात्मिक तथा समग्र कुशलक्षेम का पूरा विवरण दें।
6। आध्यात्मिक गुरुओं तथा यात्री प्रचारकों के आगमन को प्रोत्साहित करें ताकि सहायता अथवा सलाह के अभिलाषी भक्त उसका लाभ उठा सकें।
7। दीक्षा अनुशंसाओं के लिए एक न्यायसंगत प्रणाली का होना सुनिश्चित करें जिसमें प्रबंधकीय लाभ हेतु किसी अनधिकृत दबाव या हेराफेरी की संभावना न हो।

सारांश

श्रील प्रभुपाद ने भक्तों के आध्यात्मिक जीवन का संपूर्ण विकास करने के उद्देश्य से इस्कॉन में अधिकार की स्पष्ट श्रेणियों के साथ एक प्रबंधकीय प्रणाली की रचना की। इस्कॉन के प्रत्येक सदस्य को चाहिए कि वह इस प्रणाली का आदर करे तथा उसमें कार्य करना सीखे। प्रबंधकीय प्रणाली का लक्ष्य आध्यात्मिक है ः इस्कॉन के सदस्यों की आध्यात्मिक प्रगति में सहायता करने के लिए उन्हें भक्तों का संग, सेवा के अवसर तथा प्रचार की प्रभावी कार्यनीतियां उपलब्ध कराना। साथ ही इस्कॉन, प्रामाणिक आध्यात्मिक गुरु से दीक्षा ग्रहण करने के आधारभूत महत्व पर भी बल देता है।

तथापि हमारे संस्थापक आचार्य श्रील प्रभुपाद का महत्व सर्वोपरि है, जो इस्कॉन के अनेक भक्तों के दीक्षा गुरु हैं तथा वर्तमान व भविष्य में प्रत्येक भक्त के सर्वोच्च शिक्षागुरु रहेंगे। इस्कॉन में सेवारत दीक्षा तथा शिक्षा गुरु भी महत्वपूर्ण हैं।

इसीप्रकार सभी गुरु तथा उनके शिष्य हमारी संस्था के अनेकों प्रबंधकों का महत्व समझें, जो शिष्यों के मार्गदर्शन व प्रशिक्षण में सहायता करते हैं तथा इस्कॉन द्वारा उनकी आध्यात्मिक प्रगति हेतु दी जानेवाली सुविधाओं की देखरेख भी। इस प्रबंधकीय प्रणाली में सहयोगपूर्वक कार्य करने से गुरु तथा शिष्यों को आध्यात्मिक लाभ मिलेगा तथा इस्कॉन को फलने-फूलने की अनुकूलता।

यह सहयोगपूर्ण परस्पर आदर का भाव ही श्रील प्रभुपाद को प्रसन्न करने, संकीर्तन आंदोलन का प्रसार करने तथा हमारे संघ की एकता बनाए रखने का सर्वोत्तम उपाय है।

श्री चैतन्य महाप्रभु के भाव में श्रील प्रभुपाद की कामना थी कि संकीर्तन आंदोलन हर नगर-गाँव में पहुँचकर विश्वव्यापी हो जाए। अपने लेखन, प्रवचन और निरंतर यात्राओं के माध्यम से उन्होंने यही अभिलाषा व्यक्त की। उन्होंने अपने शिष्यों से सुदूर क्षेत्रों में इस्कॉन केंद्र खोलने, पुस्तक वितरण करने, आकर्षक उत्सव आयोजित करने, प्रसाद का वितरण करने का अनुरोध किया। श्रील प्रभुपाद की इच्छा थी कि इस्कॉन का निरंतर विस्तार होता रहे तथा भगवान चैतन्य महाप्रभु की कृपा के वरदायक चन्द्र के समान उसका उदय हो।

इसी उद्देश्य को लेकर श्रील प्रभुपाद ने आध्यात्मिक संस्थान के रूप में इस्कॉन की स्थापना करते समय उसे प्रबंधकीय संरचना भी प्रदान की। जिसका प्रयोजन है उनके द्वारा स्थापित मानदंडों को बनाए रखना, भक्तों को आश्रय तथा आध्यात्मिक पोषण प्रदान करना तथा संकीर्तन आंदोलन को समर्थन देते हुए उसका प्रसार करना। बद्ध जीवों तक श्रीश्री गौर-निताई की कृपा पहुँचाकर श्रील प्रभुपाद को प्रसन्न करने के लिए इस्कॉन के प्रत्येक सदस्य को, चाहे वह दीक्षा गुरु हो, शिष्य अथवा प्रबंधक, इस प्रणाली में सहयोगपूर्वक कार्य करना होगा।

परिशिष्ट 9 इस्कॉन शिष्य पाठ्यक्रम पर जीबीसी का संकल्प

संकल्पित (मार्च **2014**) ः

इस्कॉन गुरु से जन्माष्टमी **2015** के पश्चात् प्रथम अथवा द्वितीय दीक्षा लेने के पूर्व सभी अभ्यर्थी भक्तों के लिए जीबीसी गुरु सेवा कमिटी द्वारा विकसित 'इस्कॉन शिष्य पाठ्यक्रम' उत्तीर्ण करना अनिवार्य होगा। इस तिथि के पश्चात् कोई गुरु ऐसे अभ्यर्थी को दीक्षा न दे, जिसने यह पाठ्यक्रम पूरा न किया हो। दीक्षा हेतु वर्तमान आवश्यकताओं में इसे भी जोड़ा गया है।

इसके अतिरिक्त, समस्त जीबीसी एवं मंदिर अध्यक्ष अपने अधिकार क्षेत्र में जन्माष्टमी **2015** से पूर्व यह सुनिश्चित करेंगे कि ः

1। भक्तों को इस बात का परामर्श व प्रोत्साहन दिया जाए कि वे अपने दीक्षा गुरु का चयन करने से पहले शिष्य पाठ्यक्रम को पूरा कर लें।
2। भक्त शिष्य पाठ्यक्रम में सुविधाजनक रूप से नामांकन करा सकेंगे।
3। पाठ्यक्रम पढ़ाने के लिए पर्याप्त संख्या में शिक्षक चुने व प्रशिक्षित किए जाएंगे।
4। पाठ्यक्रम पूरा किए बिना किसी भक्त को दीक्षा लेने की अनुमति नहीं होगी। (निम्नानुसार अपवाद हो सकते हैं)

शिक्षक अथवा प्रशिक्षकों की अनिवार्य योग्यताएं ः

1। न्यूनतम पाँच वर्ष से दीक्षित भक्त हों
2। इस्कॉन शिष्य पाठ्यक्रम उत्तीर्ण किया हो
3। उनके शिष्य पाठ्यक्रम प्रशिक्षक ने अनुशंसा की हो
4। व्हीटीई टीचर ट्रेनिंग कोर्स (टीटीसी **1**)* अथवा समतुल्य प्रशिक्षण या अनुभव प्राप्त हो
5। उनके स्थानीय जीबीसी प्रतिनिधि का अनुमोदन प्राप्त हो
6। पढ़ाया जानेवाला पाठ्यक्रम, नियम पुस्तिकाएं तथा अन्य सामग्री जीबीसी गुरु सेवा कमिटी द्वारा अनुमोदित होनी चाहिए।

* संभावित शिक्षक की परिपक्वता एवं कौशल को देखते हुए स्थानीय जीबीसी आंचलिक सचिव, (टीटीसी **1**) की अनिवार्यता से छूट दे सकता है। जीबीसी को मायापुर इंस्टीट्यूट द्वारा निकषों की सूची दी जानी चाहिए जिसके आधार पर यह मूल्यांकन किया जा सके।

अशिक्षित भक्तों का भी इस पाठ्यक्रम में स्वागत है। पाठ्यक्रम सम्पन्न होने पर उन्हें एक न्यूनतम मौखिक परीक्षा (शिक्षक के विवेकाधीन) देनी होगी। दीक्षार्थी के शारीरिक दौर्बल्य या असाध्य रोग की विशेष परिस्थिति में मंदिर अध्यक्ष इस पाठ्यक्रम से छूट की अनुमति दे सकते हैं।

यदि कोई जीबीसी अपने अधिकारक्षेत्र के विशेष भाग में अपवादात्मक परिस्थितियों के कारण इस नियम को लागू करने हेतु और समय चाहे, तो जुलाई **31, 2015** से पूर्व आवेदन किए जाने पर जीबीसी कार्यकारिणी समिती एक वर्ष तक का अतिरिक्त समय दे सकती है।

परिशिष्ट 9 कक्षा में व्यवहार के मानदंड

पाठ्यक्रम में सीखने के लिए उपयुक्त वातावरण बनाए रखने हेतु सभी छात्र निम्नलिखित दिशानिर्देशों के पालन की सहमति देंगे ः

1। हम संपूर्ण पाठ्यक्रम में उपस्थित रहेंगे।
2। अपना मत व्यक्त करने से पूर्व अनुमति लेंगे।
3। अन्य छात्रों के योगदान का आदर करेंगे चाहे उससे सहमत हों या नहीं।
4। छात्र आपस में बातचीत नहीं करेंगे।
5। कक्षा के दौरान मोबाइल फोन पर बात नहीं करेंगे।
6। कक्षा में तथा बाहर गोपनीयता बनाए रखेंगे।
7। पद अथवा प्रतिष्ठा के बल पर विशेष सुविधा पाने का प्रयास नहीं करेंगे।
8। यदि कोई प्रतिभागी किसी गतिविधि में असहजता या असुविधा अनुभव करे तो बिना कारण बताए पीछे हट सकता है।
9। हम सफलतापूर्वक अपने अपेक्षित परिणाम प्राप्त करने का दायित्व लेते हैं।
10। हम किसी व्यवहार या विवादों का विरोध करेंगे, व्यक्तियों का नहीं।
11। जो भी निर्णय लिया जाए, हम सब उसका आदर करेंगे।

परिशिष्ट 9 पठनीय संदर्भ ग्रंथ सूची

इस्कॉन में शिष्यत्व के विषय पर अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित प्रकाशनों की सहायता ली जा सकती है ः

Spiritual Master and Disciple
A.C.Bhaktivedant Swami Prabhupad
Bhaktivedant Book Trust

How to Find Guru
Gopal Jiu Publications

The Process of Inquiry
Sri Srimad Gaur Govind Swami
Gopal Jiu Publications

The Worship of Sri Guru
Sri Srimad Gaur Govind Swami
Gopal Jiu Publications

The Shiksha Guru : Implementing Tradition in ISKCON
Sivarama Swami
Lal Publications

Shiksha Outside ISKCON ?
Sivarama Swami
Lal Publications

When Good Fortune Arises
Gopal Jiu Publications